भक्ति गीत सुधा

★ भक्ति गीत सुधा ★

ललन लरिका मन अँगने में खेलो ।
नख शिख सुभग रुचिर शिशु राघव, भाव खिलौने ले लो ।।
मति मृगनैनी ललकि तोहे लालै, वापे प्रेम रज मेलो ।।
अहंकार करि कागभुषुण्डिहि, ताके संग शिशु डोलो ।।
चित्त भिंत्ति महँ लखि प्रतिबिम्बनि, बचन तोतरे बोलो ।।
"गिरिधर" भव वासना दूरि करि, वत्सल रस मधु घोलो ।।
यह झाँकी सुख देइ राम शिशु, भगति की सुधा उड़ेलो ।।

रचयिता

सर्वाम्नाय तुलसीपीठाधीश्वर

जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य श्री रामभद्राचार्य जी महाराज

तुलसीपीठ, आमोदवन श्री चित्रकूटधाम

जनपद, सतना (म० प्र०)
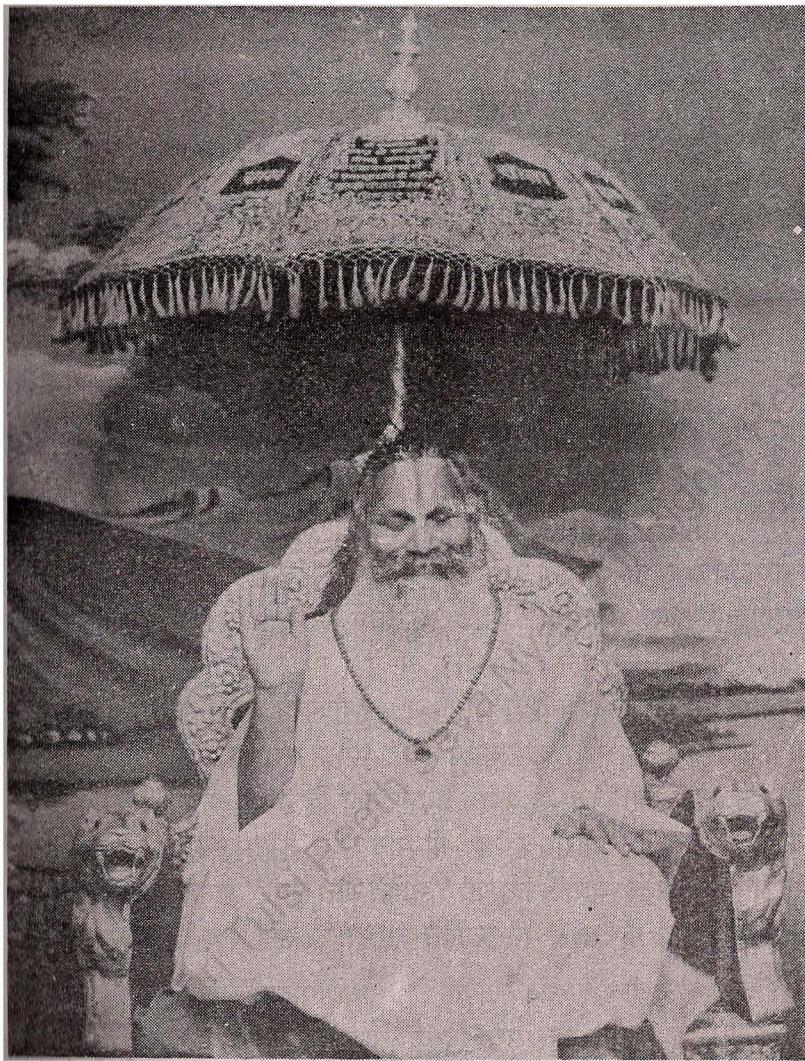
सर्वाम्नाय श्री तुलसीपीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य
अनन्त श्री समलङ्कृत १००८ श्री रामभद्राचार्य जी महाराज
तुलसीपीठ—आमोदवन, श्री चित्रकूटधाम

!! श्री राघवो विजयते तराम् !!

धूरिविधूसर कोमल श्यामल एक मनोहर बालक पेख्यो;
गोल कपोल लटें लटकें अटके अलिवृन्द सकेलि सरेख्यो।
भूपति आँगन अँग अनँगन कोटि रिझाई बिहाइ परेख्यो;
"गिरिधर" भाव विभोर भयो ज्यों निरंजन के दृग अँजन देख्यो।

मेरे प्राणाराम के परम प्रेमास्पद केकिशावक एवं मेरी जिजीविषा के परम रमणीय पीयूषकलश सुस्मित मेरे परमाराध्य एवं वात्सल्यभाजन प्यारे राघव! मेरी मञ्जुल-मञ्जुल भावनाओं से सुस्पन्दित सुकोमल कान्त पदावली प्रादुर्भूत परमपूत **"भक्तिगीत सुधा"** कोटि-कोटि जनमानस की विषय क्षुधा को सदा-सदा के लिये समाप्त कर दें। अनेक आयामों मे अवलोकित श्री राघव एवं माधव की सुललित झाँकियाँ ही अनायास अक्षराकार होकर भावुक भगवद्भक्त के कलकण्ठ सुलभ गीत का स्वरूप लेकर भगवत्प्रेरणा से उपस्थित हुई हैं। मैने इन गीतों की रचना में कोई प्रयत्न नहीं किया है केवल इतना ही है कि समय-समय पर श्रीराघव एवं श्री माधव ने जैसे मुझसे गवाया वैसे ही मैने गाया। मुझे विश्वास है कि यह **"भक्ति गीत सुधा"** सनातन धर्मावलम्वी आस्तिक भावुक मानसों में भगवद्भक्ति रस भर कर उन्हें धन्य-धन्य बना देगा।

श्री राघवकृपोपेता माधवामोदमण्डिता
भक्ति गीत सुधा दिव्या विधुनोतु भवक्षुधाम्

हरिप्रबोधिनी एकादशी
विक्रमी २०४९
६.११. १९९३

इति मंगलवाचिकं व्याहरति
जगद्गुरु रामानन्दाचार्य
रामभद्राचार्य
श्रीचित्रकूट धाम

!! श्रीमद् राघवो विजयते तराम् !!

भनिति विचित्र सुकवि कृत जोऊ ।
रामनाम बिनु सोह न सोऊ ।।

भक्त कवियों का उद्देश्य केवल काव्य रचना ही नहीं होता प्रत्युत् वे अपने दार्शनिक चिन्तन मनन की प्रेरणा से धार्मिक सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार के लिये ही काव्य रचना में प्रवृत्त होते हैं ।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्ति काल अत्यन्त लोकप्रिय तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण काल के रूप में स्मरणीय बन गया है; जिसके अन्तर्गत श्री तुलसीदासजी, सूरदासजी, मीराबाई, आदि कई भक्त कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सम्पूर्ण भारतवर्ष में भक्तिभाव की एक अभूतपूर्व चेतना जगायी ।

भक्तकवि काव्य के माध्यम से भगवान के प्रति निश्चित किये हुए, शास्त्रसम्मत अपने अन्तर्भावों को पुष्ट करता है यही उनकी कविता की सार्थकता भी है; अर्थात भक्तकवि काव्य रूप की अपेक्षा काव्य विषय या वस्तु को अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं और उसी की गहरी चेतना से अनुप्राणित रहते हैं ।

उनकी सौभाग्य शालिनी कविता भामिनी के विषय में ... कहना से यह
जिसके प्रत्येक पदन्यास में, श्रीराघव का ललितलीला वि... कारण निराश होकर
भाँति झंकृत हो रहा हो । ...कन्तु भक्तवत्सल भगवान ने

इसी परंपरा में दृष्टिगोचर हो रहा है श्री चित्र..., अतः यह दृढ विश्वास रखना
पीठाधीश्वर जगदगुरु श्री रामभद्राचार्य जी महारा...लय श्रीराम अपनी विशाल भुजाओं
सुधा'' नामक यह मंगलमय काव्य सरोवर जिस...राज विनयी कवि पूर्णतया आश्वस्त
...निष्ठुर मानवहृदय में भी संवेदना का अजस्रस्रो...नी दुर्बलताओं पर अवश्य विजयी

कवि हृदय का संवेदन,दूसरों की अपेक्षा ...के दैन्य में निहित है ।
...भावना जगत का तलस्पर्शीय अनुभव करत...अत्यन्त सरल, श्रीराघवप्रेम में सराबोर
...ज्यों का त्यों उपस्थित करने में समर्थ ...अनायास ही इनके गीतों में सहजता से रूपक,

प्रस्तुत गीत काव्य में भी कठोर साधना निरत, परम वैराग्यशील इन कवि पुंगव ने, परमविमल अपनी सरस्वती को अपने हृदयस्थ भावों का दिगदर्शन् कराने हेतु, सफल बनाया है। वशिष्ठ गोत्रीय होने के कारण वे निरन्तर गुरुभाव में निमग्न रहते हैं। अतः इनके काव्यपुष्प में वात्सल्यरस का सौरभ सतत प्रसरित होता रहता है।

भावुक हृदय यह भक्तकवि कभी तो अपने लाड़ले राघव के वात्सल्य सागर में हिलोर लेते हुए, मूक क्रन्दन करके करूणस्वर में अपने नन्हें मुन्ने राघव को पुकारते हैं। "ओ नन्हें मुन्ने राघव जरा सामने तो आ" तो कभी अपने गोद में बिराजे हुए, शिशु राघवरूप खिलौने को कोई नजर न लगा दे इसका अनुरोध करते हैं कि "गुरुजीके गोद खिलौना हो, कहुँ नजर, न लागे" तो कभी बाल राम की मनमोहक दिव्य छवि को निहार प्रेमसागर में गोते लगाते हुए सामान्य हृदय को भी वात्सल्यरस में सराबोर करते हुए, दृष्टिगोचर होते है। मुन्ना सरकार श्रीराघव की घुघराली अलकावली की दिब्य झाँकी, छोटी छोटी दो दो दतुलिया,

यथा :– चमके चपला सी दुइ-दुइ विशद दतियाँ
राघव आनन पे ललचाये मतिया"
और खिलौनेके लिये श्रीराघव का शिशु हठ

यथा :– "निरखु सखि राम की शिशु अरन"
तथा तोतले बचन

यथा :– "तोतरी बचनिया मोरे मनवाँ के मोहलसि"
एवं कौशल्या के आँगन में घुंटनोके बल चलते हुये राघव
"खेलत कौसल्याके अँगनवा रघुबर घुटुरुनवाँ"

अ[illegible] [illegible]गु

श्री [illegible] गिर जात है तब चक्रवर्ति दशरथजी के अजिर की
भक्ति गी[illegible]र की शोभा **यथा :–**"देखु सखि रामके तनु धूरि"
[illegible]ों पर तो आचार्य श्री बारबार बलिहार होकर अपने
[illegible]ने के लिये उद्यत हो जाते हैं।
[illegible]ो पालने में झुलाना और धीरे धीरे थपकी देना
[illegible]ान गाकर उठाना, यह सब बाल-बच्चों वाले
सामान्य स्वाभाविक चित्रण किया है।

[illegible]कुन्द।

हरिप्रबोधिनी एकादशी
विक्रमी २०४९
६.११. १९९३

और "सपदि अब जागहु बालमुकुन्द ।"

बालरूप की झाँकी के न जाने कितने ही विभिन्न रूप उन्हें अपनी बंद आँखों से भी दिखाई देते हैं ।

वात्सल्य भाव ही एक ऐसा निर्दोष भाव है कि जिसमें किसी भी प्रकार की कामनाओं का स्पर्श नहीं होता । बच्चे को तो प्रसन्न रखने के लिए टॉफी, चोकलेट, खिलौने देने पड़ते हैं उनसे हम क्या याचना करें ? अतः पाँचो में अति उत्कृष्टतम वात्सल्यभाव ही माना जाता है

इन महाकवि की संसार निराशा, दैन्य तथा विमलभक्ति से समलंकृत विनय की भावनाभिव्यक्ति गोस्वामी श्री तुलसीदास जी से तादात्म्य जोड़े बिना नहीं रहती ।

श्री राम के सामने अपनी दुर्गति का वर्णन करते वे कभी भी हिचकिचाहट का अनुभव नहीं करते । प्रभु की पवित्रता का ध्यान करने पर वे अपनी पापपीनता का तीक्ष्ण अनुभव करके अत्यन्त दैन्यभाव से, प्रभु को पतितपावन जानकर पुनः अपना दोष स्वीकार करने के लिये विवश हो जाते हैं ।

यथा : "खरारि मोहि बिलोकहु आजु"

★ *अगर तुम गिनोगे मेरे पाप राघव, युगोंतक न सम्भव है उद्धार मेरा"*

मनुष्य तभी सबसे महान होता है, जब वह वास्तविकता को स्वीकार करते हुए, परमात्मा के सामने नतमस्तक होकर अपनी पापमयता और असमर्थता का निवेदन करता है क्योंकि इससे वह पापमुक्त हो जाता है ।

अभ्यर्हणीय आचार्य श्री दैन्य भावना से युक्त विनय की झाँकी से यह अभिव्यक्त करना चाहते हैं कि अपने दोषों के कारण निराश होकर आत्मविश्वास से वंचित नहीं होना चाहिये किन्तु भक्तवत्सल भगवान ने शरणागत अन्य पापियों को क्षमाप्रदान की है, अतः यह दृढ विश्वास रखना चाहिये कि उसी तरह अकारणकरुणावरुणालय श्रीराम अपनी विशाल भुजाओं से मुझे भी संकट से उवार लेंगे । अतः भक्तराज विनयी कवि पूर्णतया आश्वस्त हैं कि अन्तोगत्वा वे संसार पर और अपनी दुर्बलताओं पर अवश्य विजयी होंगे। यही गौरवमय आत्मविश्वास उनके दैन्य में निहित है ।

महनीय आचार्य श्री स्वभाव से अत्यन्त सरल, श्रीराघवप्रेम में सराबोर एवं सहृदय भक्तकवि हैं । अतः अनायास ही इनके गीतों में सहजता से रूपक,

उत्प्रेक्षा, उपमा, समासोक्ति विभावना, काव्यलिंग, अनुप्रास आदि अलंकार यथास्थान उपस्थित होकर रसवृद्धिमें चार चाँद लगा देते हैं ।

लेख विस्तार भय से यहाँ प्रत्येक अलंकार का उदाहरण देकर वर्णन करना संभव नहीं, केवल इतना ही कहेगें कि इन महाभक्त कविराज के गीतों का प्रत्येक अक्षर अलंकारों को भी समलंकृत करके भक्ति सुधा का परिपूर्ण कलश सा प्रतीत होता है ।

पूजनीय आचार्य श्री ने आशुकवि होने से लीलापरक, विनयपरक ऐसे कई गीतों की रचनायें श्रीरामचरित मानस नवाह पारायण के चालू कथा के मध्य में ही की है इसीलिये कभी एक ही भाव से युक्त दो दो गीत रचे गये हैं ।

यथा : "खिलोना बेचिबे मैं आई"

बैंसे ही श्रीकृष्ण की रूपमाधुरी, बाललीला, रासलीला के वर्णन से युक्त गीतों की रचनायें भी श्रीमद्भागवत् सप्ताह की कथा के मध्यमें ही की गई है ।

वृन्दावन में होलीमहोत्सव या झूलामहोत्सव के समय "होरीगीत" और झूला की झाँकी की दिव्य रचनायें की हैं ।

कई सुन्दर भागवनामय गीत भोजपुरी भाषा में भी रचे गये हैं जो इस पुस्तक में प्रस्तुत है ।

यहाँ एक और तथ्य का स्पष्टीकरण करना आवश्यक समझती हूँ कि, आचर्य श्री के पूर्वाश्रम का नाम "श्री गिरिधर मिश्र" है अतः उसी उपनाम से वे प्रायः गीतों की रचना करते हैं । सन १९८३ में श्री रामानंदीय विरक्त साधु दीक्षा लेने पर उनका नाम परिवर्तित होकर, श्री रामभद्र दास तथा २४ जून १९८८ को जगत गुरु रामानन्दाचार्य पद पर अभिषिक्त होने के बाद आचार्य श्री का नाम श्री रामभद्राचार्य के रूप में प्रख्यात हुआ और वर्तमान में यही उनका मुख्य नाम है । अतएव इस गीत काव्य में उन्होंने "गिरिधर" "रामभद्रदास" "रामभद्र आचारज " तथा "रामभद्र" इन चार नामों की छाप से गीत रचनायें की हैं ।

आचार्य श्री ने श्रीराघव शब्द से प्रारंभ होने वाले ऐसे ३५१ लीला, विनय, एवं बालरूप की झाँकी से युक्त दिव्य गीतों की रचनाये की हैं जो **"राघव**

गीत गुञ्जन'' नामक पुस्तकाकार में प्रकाशित हो गया है ।

इस ***''भक्ति गीत सुधा''*** नामक पुस्तक में प्रयास करके आचार्य चरणों की अब तक के उपलब्ध ४६८ गीतों का संकलन किया गया है ।

श्री राघव साहित्य प्रकाशन निधि ट्रस्ट आचार्य चरण का अतिशय आभारी है कि उन्होंने कृपा कर के इस ग्रन्थ के प्रकाशन का उत्तरदायित्व सौंप कर इस ट्रस्ट को बहुमान भाजन बनाया । जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्री राम भद्राचार्य जी की वात्सल्य भाजन कृपा पात्र शिष्य श्री विनय कुमार गुप्त एवं उनकी भगवत परायण धर्मपत्नी सौ० सुलोचना गुप्ता अहमदावाद को यह ट्रस्ट बहुत–बहुत धन्यवाद देता है कि जिन्होंने अपने व्यय से मुद्रित करके ट्रस्ट को भेंट किया ।

अन्त में हम आर्चाय चरण के प्रिय शिष्य तथा **''भारतीय प्रकाशन''** पटना के स्वामिक श्री जगतानन्द प्रसाद सिंह के प्रति आभार ज्ञापन करते हैं जिन्होंने इस ग्रन्थ का कुशलतापूर्वक मुद्रण कराने में अपरिमित योगदान दिया है ।

अस्तु, मैं जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य श्री रामभद्राचार्य जी की बड़ी बहन होने के नाते इस **''भक्तिगीत सुधा''** के मंगलमय आस्वादन से आह्लादित होती हुई इसके अविच्छिन्न प्रचार एवं प्रसार के लिये कोटिशत शुभ कामनायें उपहृत करती हूँ ।

इति शम्

हरिप्रवोधिनी
एकादशी
६–११–१९९२

कु. गीता देवी
प्रबन्धक–श्री राघव साहित्य
प्रकाशन निधि–हरिद्वार

भक्ति गीत सुधा

विषयानुक्रमणिका

पदानुक्रमणिका : विनय माधुरी

रूप माधुरी

श्री राम लीला माधुरी

श्री कृष्ण लीला माधुरी

झूला और होली माधुरी

आरती

●

॥ श्री राघवो विजयते तराम् ॥

★ *विनय–माधुरी* ★

(१)

श्री राम सुजन सुखधाम, राघवेन्द्र भव भय हारी।
यह संतन को अभिराम, कोसलेन्द्र जनसुखकारी॥
नील जलद सम सुन्दर श्यामल, कर धनु सायक धारी।
पावन चरण कमल के परसत तरी अहल्या नारी॥
जनक सुता चातकी को जलधर, भक्तन हृदय समाया।
ध्रुव प्रह्लाद विभीषण ने भी, मधुर नाम यह गाया॥
मिथलापुर में शंभु चाप को, कौतुक में ही तोड़ा।
परशुराम अभिराम रामने, सिय से नाता जोड़ा॥
पिता बचन तजि राज रामजी, सानंद बिपिन सिधाये।
बाल्मीकि कुंभज आदिक मुनि जिनसे अति सुख पाये॥
दंडक बन को करके पावन, शबरी गीध उधारे।
पवन तनय को दिया भगत बर, रावण वंश संहारे॥
जिनकी पावन गाथा पढ़कर, जन मस्ती में डोले।
रामकथा भज ले "गिरिधर" तू मन्दिर को धोले॥

(२)

तेरी याद में नाथ होकर दीवाना,
विकल होके दिन रात रोता रहूँ मैं
तेरे प्रेम सागर में गोते लगाकर,
विरह बीचि में मग्न होता रहूँ मैं॥
चढ़ाता रहूँ तेरे चरणाम्बुजों में,
नयन अश्रुओं की मधुर मञ्जुमाला।
सदा गाके कथाओं को राघव,
जगत की व्यथा को भी खोता रहूँ मैं॥

(२)

स्मरण कर तुम्हारे भुवन ख्याति यश का,
निरख तेरी करुना की अति दिव्य झाँकी ।
मुदित गा के तेरा मधुर नाम कीर्तन ।।
नयन नीर से मुख धोता रहूँ मैं ।।
बने क्यूँ निठुर आज राजीवलोचन,
हरो नाथ "गिरिधर" की अति घोर पीड़ा ।
सदा तुमको मानस भवन में बिठाके,
तुम्हें देखकर मस्त होता रहूँ मैं ।।

(३)

दशरथ राज दुलारे हो, कब राम मिलेंगे ।
कौसिला के प्राण पियारे हो, कब राम मिलेंगे ।।
निशि वासर रघुवर हित तलफत,
मानस सलिल हमारे हो, कब कंज खिलेंगे ।
जगत असार सार नहीं सूझत
वृथा नात सब न्यारे हो, कब तार हिलेंगे ।।
धूलि विधूसर सुभग श्याम तनु
अति मृदु चरन तुम्हारे हो, कब हृदय डुलेंगे ।।
करि-करि सुरति बदन शोभा की ।
भाव सरस रस सारे हो, कब पाप धुलेंगे।।
सतत गाइ गुन गन राघव के ।
उर अनुराग फुहारे हो, नव नेह खुलेंगे ।।
कब तमिस्रमय मन मन्दिर में
"गिरिधर" प्राण अधारे हो, मृदु दीप जलेंगे ।।

(४)

हे रघुवीर ! शरण मोहिं लीजै
विलम्ब अब ना ऽ ऽ ऽ ऽ कीजै, शरण मोहि लीजै ।
जनम-जनम से भटक रहा मैं, दर-दर मारा -मारा ।

डूब रही भव निधि में नैया, मिलता नहीं किनारा।
मेरे नाथ कर टेक टेक कर, दीजै दिव्य सहारा ॥ शरण॥
साधन हीन अनाथ अहल्या, परसि कमल पद तारे ।
अधम निषाद भरत ज्यों भेट्यों, शबरी गीध उधारे ।
मेरे राम तुझे ढूँढ ढूँढ कर, खोया सम्बल सारा ॥ शरण ॥
दीन दयाल उदार शिरोमणि, अब न अधिक तरसाओ।
करुणा हस्त बढ़ाकर राघव, निज जन को अपनाओ।
अभिराम तेरे ध्यान-ध्यान हित, व्याकुल चित्त हमारा ॥ शरण॥
गज औ द्रुपद- सुता क्रन्दन पर, नंगे पाँव सिधारे।
"गिरिधर" की बारी आयी जब, तब क्यों बिरद विसारे।
घनश्याय मेरी ओर-ओर क्यों, भूला शील तुम्हारा ॥ शरण॥
हे रघुवीर ! शरण मोहि लीजै ॥

(५)

मेरे राघव तनिक मुस्कुरा दो, कमल मुख दिखा दो
सफल कर दो जीवन मेरा ॥ मेरे राघव ॥
जन्म का मैं पतित पाप भाजन ।
नीच निरुपाय निसहाय निर्धन ।
दोष सारे हमारे मिटा दो, भगति रस पिला दो
विमल कर दो वन्दन मेरा..... मेरे राघव ॥
पाप मेरे क्या लालन गिनोगे ।
होके कोमल कठिन क्यों बनोगे ।
पतित पावन बिरद को संभालो, ये नाता निभा लो।
तरल कर दो ये मन मेरा.... मेरे राघव ॥
लो शरण कौसिला के दुलारे ।
चक्रवर्ती के नयनों के तारे ।
दास "गिरिधर "को अपना बनालो, चरण में लगालो ।
सरल कर दो साधन मेरा .... मेरे राघव ॥

दोहाः (६)

राम तुमसा नाथ कौन, अनाथ मुझसा कौन है ।
फिर भी मेरी ओर क्यों, करुणा तुम्हारी मौन है ॥
हे पतित पावन ! मुझ पतित को क्यों नहीं अपनाओगे ।
दीन को ठुकरा के कैसे दीन बन्धु कहाओगे ॥

भक्त वत्सल जरा मुड़ के देखो मुझे।
मैं हूँ एक क्षुद्र सेवक तुम्हारा प्रभो ।
डूबता हूँ युगों से विषय सिन्धु में ।
दे दो निज कंज-कर का सहारा प्रभो॥
मेरा कोई जगत में सहारा नहीं ।
मिलता मुझको कहीं भी किनारा नहीं ।
छूटे साथी सभी क्षीण सम्बल हुआ ।
नाव ले डूबती मध्य धारा प्रभो ॥
चल रही घोर माया की झन्झा हरे।
वासना धूल से है दिगन्तर भरे।
मैं हूँ निरुपाय असहाय पंकजनयन ।
सूझता है नहीं पंथ न्यारा प्रभो ॥
अब करो देर मत राम सीता रमण
शीध्र कर दो महाधीर संकट शमन ।
ए चतुर नाव चालक लगा दो जरा ।
सिन्धु के पार बेड़ा हमारा प्रभो ॥
हे प्रणतपाल भूपाल चूडामणे ।
राम राजीव लोचन महाराज हे।
शीघ्र दिखला के अपने बदन इन्दु को ।
दास "गिरिधर" को दे दो गुजारा प्रभो ॥

(७)

अगर तुम गिनोगे मेरे पाप राघव ।
युगों तक न सम्भव है उद्धार मेरा ।।
स्वयं होके पतितों के पावन प्रभो तुम ।
कभी कर सकोगे न निस्तार मेरा ।।
सनातन पुरुष तू सनातन मैं पापी ।
सनातन है तेरी महाघोर माया ।
कृपा सूर्य किरणों से अब नष्ट कर दो ।
सनातन व्यथाओं का नीहार मेरा ।।
करोड़ो युगों से भटकता रहा मैं ।
विषय जाल में ही अटकता रहा मै।
स्वयं होके भूभार हारि हरि तुम ।
कभी हर सकोगे न मल भार मेरा ।।
अतः अपनी करुणा की मन्दाकिनी में ।
डूबा दो हमारे सभी दूषणों को ।
रमा लो मुझे राम चरणाम्बुजों में ।
जुडे दिल तुझी से ए दिलदार मेरा ।।
गया हार अब देख भव सिन्धु दुर्गम ।
विकल हो रहा अन्ध "गिरिधर" हे राघव ।
चतुर नाव चालक कृपा करके बेड़ा ।
लगा दो किनारे पे सरकार मेरा ।।

(८)

एक बार देखो मुझको, करुणा भरी नजर से ।
रघुवर मुझे उठालो, सुख पुञ्ज कञ्ज कर से ।।
इस घोर भव विपिन में सदियों से भटकता हूँ ।
रघुनाथ हाथ धरके, मुझको लगा डगर से ।।
दीपक जला सुरति का, पलकों के पावड़ों पर ।

तेरी राह जोहता हूँ, श्री राम जन्म भर से ।।
असहाय अन्ध अशरण, मैं रो रहा अकेला ।
भगवान अब बचालो, इस मोहमय मगर से ।।
अब देर मत लगावो "गिरिधर" के मन में आवो ।
घनश्याम चुपके चुपके, मेरे नेत्र के कगर से ।।

(९)

आया है संसार में भजले तू सीताराम ।।
एक बार तू सरकार का, ले ले पवित्र नाम,
जो भक्त के हैं प्राणधन, जीवन आधार राम
वेदान्त के प्रतिपाद्य जो हैं निर्विकार राम ।।
करुणा समुद्र दीन हित सीता श्रृंगार राम ।
संसार निरासार के जो सौख्य सार राम ।
उनको भजो सदैव त्याग लाभ क्रोध काम ।
बस बात मेरी मान जग से नाता तोड़ दे ।
तत्काल ही रघुनाथ से निज चित्त जोड़ दे
निर्मल सदैव हो के भजो आप्तकाम राम ।।
जब राम प्रेम से तुझे आनन्द आयेगा ।
भीषण भुजंग भोग तुझे ना सतायेगा ।
मस्ती छनेगी सर्वदा सुख शान्ति पायेगा ।
हे तात मरके राम के तू लोक जायेगा ।
बस ध्यान. में अवलोक लोक लोचनाभिराम ।।
हो शान्त शुद्ध भाव से तज भोग वासना ।
करले सदैव रामभद्र की उपासना ।
"गिरिधर" की यही प्रार्थना निज नेह धर्म धाम ।।

(१०)

ओ नन्हें मुन्ने राघव जरा सामने तो आ ।
ओ मेरे प्यारे लाला जरा मन्द मुसुका ।।

तब दर्शन को व्याकुल नैना,
भूख न बासर नींद न रैना।
कौसिला कुमार यों न मुझे तरसा.....॥
तुम मेरे आखों के तारे,
जन मानस के एक सहारे।
करुणानिधान तू बहाना न बना.........॥
तुम मेरे मन वन में खेलो,
लालन मेरा सब कुछ ले लो।
लाडले रंगीले जरा नाच तो दिखा..........॥
राम लला मेरे सन्मुख आजा
अपना हिमकर बदन दिखा जा।
"गिरिधर" के दुलारे मुझे शीघ्र अपना ॥

(११)

एक बार मुस्कुराओ निज भक्त भीति मोचन।
एक बार तो दिखाओ, निज रूप कञ्ज लोचन॥
सदियों से हूँ तलफता, तेरे दरस को मैं राघव।
जरा सामने तो आवो, श्री राम मञ्जु शिशु बन॥
लटके लटें मनोहर, कज्जल कपोल ऊपर।
मनो नील कञ्ज दल पर, मँड़रा रहें मधुपगन॥
झिगुली हो तन में पीली, चितवन चपल रसीली।
निज बोल तोतली से, कर दो सुधा का सिंचन॥
घुटनों के बल से चलके, रघुवर मचल मचल के।
हँसते हुए पधारो, मेरी गोद में कृपाधन॥
निज गोद में बिठा लूँ, जी भर तुम्हें खिलालूँ।
कुछ लाड़ भी लड़ालूँ, चूमू सरोज आनन॥
कुछ मंद मुस्कुराओ, मेरे ध्यान में तो आवो।
अब देर मत लगावो "गिरिधर" के प्राण जीवन॥

(१२)

सबके हो चाहे जो कुछ तुम मेरे तो एक सहारे हो।
सन्तों के तुम्ह रखवाले हो मुझको प्राणों से प्यारे हो ॥
सब भाँति कृपा तुमने की है यह मनुज देह देकर मुझको।
अपना के मुझे राजीव नयन मेरी बिगड़ी बात सँवारे हो॥
मैंने है सुना खग गणिका को पल मध्य तुम्हीं ने है तारा।
मेरी दशा पर कौसिला ललन, किस कारण मौन को धारे हो ॥
अब देर करो मत हे राघव! खेलो आकर मम मन वन में।
"गिरिधर" के नयन के तारे हो, दशरथ के राजदुलारे हो ॥

(१३)

हितैषि तेरे राम सो जग कौन।
नीच मन मर्कट सुथिर व्है, सुनु हमार सिखौन ॥
मातु पितु दारा सुहृद, भ्राता संघाती जौन।
सकल तुमतें स्वार्थ साधत, तै न छाँडसी तौन ॥
भ्रमत कूकर सम दिवस निशि, सुख मिलै तबलौंन।
होसि सीतापति चरण जल, जात अलि जबलौन ॥
वृथहिं चाहत विषय लोलुप, पतित कामिनी सौन।
हरि भगति बिनु व्यर्थ सब गुण, यथा साग अलोन॥
गज अजामिल गीध गणिका, बधिक तारयौ कौन।
कौन मग मुनितिय उधारी, छाड़ि अपनो भौन ॥
कौन जग कारण विपिन महँ राज तजि कियो गौन।
कौन तेरो दुःख हरे बिना राम दशमुख दौन॥
कारुणीक कृपानिधान, सुजान सीता रौन
गाउ "गिरिधर" राम गुण नित, रही जगत ते मौन ॥

(१४)

रघुपति मेरे दरस दिखाओ ।
हे करुणाकर सब विधि सुन्दर, अब तो गले लगाओ ॥
लोल कपोल कलित श्रुति कुण्डल, मदन धनुष भ्रू सोहै ।
कुटिल मधुप कच लटकत मुख पर, निरखि निरखि मन मोहै ॥
पीत बसन कटि ग्रीवहार बर, द्वौ भुज की छबि न्यारी ।
मधुर मधुर मुसुकान हरत मन, चरण कमल बलिहारी ॥
जानत हूँ अपनो अघ गिरि सम, हौं अतिसय सकुचाऊँ ॥
नाम तिहारो पतित पावन सुनु, मन को धीर बँधाऊँ ।
तुम बिनु तलफत बरसत लोचन जिय की जरनि जुड़ाओ ।
जनम अन्ध "गिरिधर" पर रघुवर, बारक मृदु मुसुकाओ ॥

(१५)

तुम्हें ही मैं राघव दुलारा करूँगा ।
तुम्हारी ही झाँकी निरख करके जी भर ।
विपत्ति के क्षणों को गुजारा करूँगा ॥
सरस कल्पनाओं की नव तूलिका पे ।
तुम्हें रात -दिन मैं सँवारा करूँगा ॥
सदा करके तेरी सुरति हे ललन जू ।
हृदय की व्यथा को बिसारा करूँगा ॥
तुम्हारी ही यादों के सरगम स्वरों में ।
करुण रागिनी मैं उचारा करूँगा ॥
तुम्हारी ही शोभा छबिली पे रघुवर ।
मगन होके तन मन निवारा करूँगा ॥
बिठाकर के "गिरिधर" स्व मानस भुवन में
तुम्हें ही मैं निशिदिन निहारा करूँगा ॥

(१६)

तुम जा कहाँ छिपे हो मेरे राम प्राण प्यारे।
बेचैन ढूँढ़ता हूँ तुम्हें कौसिला दुलारे ।।
किसका वो भाग्य भाजन, मानस बना है आँगन ।
जहाँ जाके खेलते हो, मेरे लोचनों के तारे ।।
हल्की दिखा के झलकी अलकावली की न्यारी ।
तलफा के दीन जन को क्यूँ दूर अब सिधारे ।।
सच-सच बताओ मुझको बादें करो न झूठे ।
कब आ मुझे मिलोगे दिखलाके रंग न्यारे ।।
बस बन्द कर दो राघव अपनी चपल शरारत ।
"गिरिधर" तो जी रहा है एक आप के सहारे ।।

(१७)

रघुनाथ नाथ जनके सीता पते कहाँ हो ।
किस भाँति ढूढुँ तुझको मञ्जुल मते कहाँ हो ।।
जिस ओर दृष्टि डालुँ, उस ओर तुझको पालुँ ।
व्याकुल नयन जुड़ा लुँ सीतापते कहाँ हो ।।
अब थक गये हैं राघव, रोकर नयन हमारे।
कोशल सुता के बारे, सीतापते कहाँ हो ।।
करता रहा प्रतीक्षा, तेरी कृपा समीक्षा ।।
पूरी हुई न इच्छा, सीतापते कहाँ हो ।।
अब देर मत लगावो, कुछ मन्द मुस्कुरावो ।
"गिरिधर" के भय मिटावो, सीतापते कहाँ हो ।।

(१८)

अपने मन को ही मन्दिर बना लो, श्याम सुन्दर को उसमें बिठालो
उनकी करुणा में कोई कमी है नहीं,
उनको पा लो कहीं तुम बुला लो कहीं,
नैन आँसू के मुक्ता चढ़ालो ।। श्यामसुन्दर ।।

भक्त वत्सल हैं जन पे कृपालु सदा,
दीनबन्धु हैं तुमपे दयालु सदा,
ईश "गिरिधर" को अपना बनालो ॥ श्यामसुन्दर ॥
चाहे देश में रहो परदेश में रहो,
परिवेश में रहो किसी वेश में रहो,
मनकी तन्त्री की तार चढ़ा लो ॥ श्यामसुन्दर ॥
नैन के आँसुओं से पखारो चरण,
दिव्य भावों के उनको चढ़ा आमरण,
सच्ची श्रद्धा से उनको रिझालो ॥ श्यामसुन्दर ॥
वेदना के ही उनको चढ़ाओ सुमन
आह की धूप उनको दिखाओ सुअन
प्रेम दीपक की बाती जलालो ॥ श्यामसुन्दर ॥
भावना के सरस भोग अर्पित करो
स्नेह ताम्बुल को लाके आगे धरो
उनके चरणों में सिर को झुकालो ॥ श्यामसुन्दर ॥
अपनी आरति की आरती उतारो अरे,
मन से बोलो "प्रभो पाहि राघव हरे",
दास "गिरिधर" के प्रभु को मनालो ॥श्यामसुन्दर ॥

(१९)

वन्दामहे महितमङ्गलमञ्जुकीर्तिम्
श्रीमद् विदेहकुलकैरवचन्द्रलेखाम्,
श्री राघवान्वयसुधाकर रोहिणीं ताम्
सीतां विनीतवदनां सुदतीं मनोज्ञाम् ॥

राघव मुखचन्द्र चारु चतुर चकोरी हे जगपावनि सीता
जाकां केर महिमा उदार हे जगपावनि सीता ॥

कोटि-कोटि रति लाजे लखि जुग जोरी हे, जगपावनि सीता
लक्ष्मी अरु उमा बलिहार हे जगपावनि सीता ॥
मिथिला अवनि अहां धन्य धन्य कइलौं हे, जगपावनि सीता
बहि गेलै सुधा दूध धार हे जगपावनि सीता ॥
निज रूप गुण शील नाथ बस कइलौं हे जगपावनि सीता
राखि लैलौं दशरथ कुमार हे जगपावनि सीता ॥
जनक किशोरी शत तडित से गोरी हे जगपावनि सीता
करुणा सुशील गुण उदार हे जगपावनि सीता ॥
"गिरिधर" जोरी कर चरण में अइलैं हे जगपावनि सीता
राखि लियो आपन दुआर हे जगपावनि सीता ॥

(२०)

मन में बहुत डरता रहा, अवलोक अपनी ओर मैं
भवसिन्धु दुर्गम देखकर कैसे लगावुँ जोर मैं
अशरण शरण कीरति तुम्हारी वेद शास्त्रों में सुनी
सीतापते ! हे पतित पावन ! शील भी मन में गुनी

राघव न मुझपे होगी जब तक कृपा तुम्हारी ।
तब तक न दूर होगी दारुण व्यथा हमारी ॥
युग-युग से भटकता हूँ विषयों का मारा-मारा ।
भवनिधि में डूबता हूँ मिलता नहीं किनारा ।
सपनों में भी न भगवन, मैं हो सका सुखारी ॥
अब तो तुम्हीं बता दो हे कौसिला दुलारे ।
कृपया दिशा दिखा दो मेरे लोचनों के तारे ।
इस भाँति मैं रहूँगा कब तक प्रभू दुःखारी ॥
दुर्वासना गरल को घुट-घुट के पी रहा हूँ ।
भीषण विषय अनल में जल-जल के जी रहा हूँ ।
माया ठगीनि ही मुझको ठगती रही बिचारी ॥
हिय हार मान "गिरिधर" राघव शरण में आया ।

(१३)

अशरण-शरण बिरुद ही ढ़ाढ़स मुझे बँधाया ।
दे दो मुझे सहारा कर कंज का खरारी ॥

(२१)

मेरे राघव आइजा, लूँ मैं हृदय छिपाय ।
गिरिधर प्रभु को कोउ जनि, देवे नजर लगाय ॥

★ ★

राघव प्यारे हमारे हृदय रहिये
नित खेलहु मम उर के आँगन ।
दुरित दुःसह अघ सब दहिये ॥
सुनिअ हमारी अनैसि बातें ।
हास विनोदन सब सहिये ॥
रमिये चित्त गगन चारु चन्दा ।
कृपा बिलोकनि चख चहिये ॥
किलकि-किलकि लाल मृदु मुसुकइये ।
तोतर बचन अमिय कहिये ॥
हमहूँ तुमहिं दुलारत लालत ।
जग बसि सुरपुर सुख लहिये ॥
यहि नातो "गिरिधर" गुरुवर को ।
आपनि दिसि राम निरबहिये ॥

(२२)

राघवजू हम जीते तुम हारे ।
जब-जब बिलग भये हम तुमते तब-तब तुमहिं पधारे ॥
जनम अनेक लिये विषयन्ह संग, करत करम गुन गारे ।
हमन्ह काम तजि, तुमहिं राम मेरे, सपनेहु नेकु निहारे ॥
हम न तजे निज क्रूर दुराग्रह निज पन तुमहि बिसारे ।
तजि साकेत धाई मेरे लालन गहि कर कमल सम्हारे ॥

मैं तो दइ पांठ तुम कहँ प्रभु सनमुख विषयन्ह सारे ।
विरुद लागि तुम तो करुणानिधि, सनमुख सदा हमारे ।।
बाजी लइ जीति हमने प्रभु, सो बल शील तुम्हारे ।
राखहुँ लाज आजु "गिरिधर" की मागत भीख दुआरे ।।

(२३)

जिअहुँ मेरे राघव लाख बरीस,
सीय सहित नित कनक भवन महँ, सुख बिलसहु जगदीश ।।
अचल राज रघुराज लोक तिहूँ सुरपति नावे शीश ।
कोटि-कोटि बर मुकुत मणिन्ह जुत बन्दन करै महीस ।।
भाइन्ह सहित मुदित पुर परिजन, राजहु अवध दिगिश ।
गाइ-गाइ जस विमल चारु तव मुदित रहउ गौरीश ।।
जनकसुता कर पल्लव लालित चरण कोसिलाधीश ।
गुरु "गिरिधर" लखि जुगल सिंहासन, प्रमुदित पढ़त अशीष ।।

(२४)

रघुवीर बिना दुःख कौन हरे ।
कौन को नाम अधम उधारन
मेघ बिना सर कौन भरे ।। हरि हरि ।।
कौन के लाज गरीब निवाज की
सेवक के भय कौन दरे ।। हरि हरि ।।
परम तृषित चातक के प्यास ही
स्वाति घन बिन कौन हरे ।। हरि हरि ।।
दशरथ सुत बिनु दीन जनन की
सुफल कामना कौन करे ।। हरि हरि ।।
परिहरि "गिरिधर" प्रभु चिन्तामनि ।
काँच लागि कर कौन मरे ।। हरि हरि ।।

(२५)

रघुवर मेरे एक सहारे ॥
ऊब गया मैं इस जगती से, कोऊ न मोहि उबारे ।
अगम् अगाध बारिनिधि डूबत, पावत नाहिं किनारे ॥
जननी-जनक बन्धु प्रिय परिजन, हैं स्वारथ रत सारे ।
तुम निःस्वार्थ भक्त भय भञ्जन साँचो हितू हमारे ॥
काहे करत विलम्ब राम अब, बेगि न लेतू उबारे ।
सीदत जनम अन्ध "गिरिधर" प्रभु कबको परौं तव द्वारे ॥

(२६)

रघुवर तनिक बिलम्ब न कीजै ।
जानकी नाथ अनाथ दास की, विनय तनिक सुनि लीजै ॥
भ्रमत फिरत गरीब ज्यों दर दर, सकल तेज तब छीजै ।
विषय विकार मलिन रासभ ज्यों स्वारथ मोह पतीजै ॥
मरत काल कलिकाल विवश मैं, सुख निधान जस तीजै ।
करुणासिन्धु अन्ध "गिरिधर" कहँ वेगि दरश निज दीजै ॥

(२७)

खरारि ! मोहि बिलोकहुँ आजु ।
अधम अनाथ पतित गत लोचन, सकल मूढ़ सिरताज ॥
जनम-जनम तें दर दर भटकत, परयों सदा कुसमाज ।
निशिदिन रोवत चैन न आवत, नाहिं सुनत रघुराज ॥
स्वारथ रत जग विषय विवश महँ, कलिमल ग्रसित कुसाज ।
"गिरिधर" रघुबर हित नित तलफत तुम्हहिं न लागत लाज ॥

(२८)

मेरी तेरी जनम जनम की प्रीति ।
ब्रह्म जीव को संग नित्य यह श्रुति सम्मत शुचि नीति ॥
तब पद कमल बिसारि मोहबस, मैं शठ करहुँ अनीति ।

तदपि नाथ तुम तजहुँ न छन मोहि धन्य रावरी रीति ॥
मिथ्या जगत विषय रस रात्यों, गई बहुत बय बीति ।
षड़ विकार रिपु विजित पापरत, मरत कालकलि भीति ॥
अब कृपालु मोहि बेगि संभारेउँ, दीनबन्धु तव कीति ।
अर्पित तव चरणन महँ "गिरिधर" हार हमारी जीति ॥

(२९)

दरस कब दैहौ श्री रघुवीर ।
सीता संग अनंग मानहर, अंग हरन जनपीर ॥
नव तमाल ताली दल जलधर, सुन्दर श्याम शरीर ।
कटि निषंग पट पीत त्रिवलीजुत, उदर सुँ नाभि गंभीर ॥
उर विशाल वन माल कमलकर लसित शरासन तीर ।
जटा मुकुट शिर शशि मुख सुमिरत मन अति होत अधीर ॥
तिलक भाल बन जात बिलोचन, मोचक सेवक भीर ।
अधम अनाथ अंध "गिरिधर" को हाथ गहौ रणधीर ॥

(३०)

कृपा सिन्धु राघव न देरी लगाओ ।
अमल इन्दु आनन नयनभर दिखाओ ।
सुनहला समय मोहबस खो रहा हूँ ।
दया मेघ राघव दवानल बुझाओ ॥ अमल इन्दु ॥
न तुम मेरे चिन्तन में पलभर भी आते ।
भुजग भोग भव रोग ही हैं सताते ।
सियावर विषय की बुभुक्षा मिटाओ ॥ अमल इन्दु ॥
युगों से मुझे मोह सागर में डाले ।
कभी भी न कर टेक मुझको संभाले ।
बहुत हो गई अब किनारे लगाओ ॥ अमल इन्दु ॥
अधम अंध "गिरिधर" पड़ा द्वार तेरे ।

अड़ी दिल में यह आन सरकार मेरे ।
कुचल दो चरण से या उर से मिलाओ ।। अमल इन्दु ।।

(३१)

देखे बिना तुझे चैन पड़े नहीं ।
तलफत मन जल हीन मीन ज्यों विपति के दारुण रैन सरे नहीं ।।
डसत भोग वासना भुजंगिनी प्रबल तरल खल मैन मरे नहीं ।
निशि नहिं नींद भूख नहिं बासर सुरति ते निमिषहुँ नैन हरे नहीं ।।
हरिमुख चन्द्र पीयूष सुधाते बारक मम मन अयन भरे नहीं ।
नयन हीन "गिरिधर" को दुःसह दुख राघव राजीव नयन हरे नहीं ।।

(३२)

अब तक बाजने बहुत बजाये, पर राम न आये ।।
विविध वेश धर-धर जग को छले ।
लाजहु को बहु भाँति लजाये, पर राम न आये ।।
मति वीणा के तन्त्री स्वर पर ।
मुखरित हुये गीत करुणा भर ।
काँप उठे कण कण गिरि निर्झर ।
करुणा के मृदु दीप जलाये, पर राम न आये ।।
विविध प्रपंच विपंची की धुन ।
पंच मृदंग अभंग नाद सुन ।
असमय द्रुपद ताल संकट गुन ।
विरह गीत संगीत लजाये, पर राम न आये ।।
सप्त स्वरों में करुण रागिनी ।
गाती रही यह मति अभागिनी ।
पर न बनी बेला सुभागिनी ।
मात्रा छन्द प्रबन्ध विद्या बहु राग विहाग सुनाये, पर राम न आये ।।
सन्ध्या गत आई विभावरी ।
[illegible]कित यमन कल्याण बावरी ।
[illegible]शावरी मुदृल आशा में । राम नाम कल गीत बनाये, पर राम न आये ।।

(३३)

निहारो राघव मेरी ओर ।
कोमल चित कृपालु चूड़ामणि, अब क्यों बने कठोर ।।
नीच निषाद कोल कपि कौनप, किये संत सिर मौर ।
केहि कारन प्रभु मोहि बिसारेहु, किधौं पाप मम थोर ।।
यह कलिकाल कठिन खल निर्दय, मोहि देत दुःख घोर ।
हौं हारयो हरि हरि हरि हिय, थक्यों नाथ बल मोर ।।
रामभद्र जन पारिजात तुम, विश्व विलोचन चोर ।
बेगि हरहु दारुण विपत्ति मम, कोसल सुता किशोर ।।
हौं अनाथ रघुनाथ नाथ मेरे, मच्यों चहुँदिशि शोर ।
निरखहुँ तनिक दास "गिरिधर" कहुँ नलिन नयन की कोर ।।

(३४)

बिलोकहुँ मोहि कृपाकरि राम ।
प्रणतपाल महिपाल मौलिमणि, नील नीरधर श्याम ।।
पाप पयोनिधि मीन मंदमति, सिला भई मुनि बाम ।
जाइ कमल पद परसि उधारि, मुदित गई पति धाम ।।
अधम निषाद बन्धु ज्यों भेट्यों, सकल लोक विश्राम ।
कोल किरात भालु कपि निश्चिर, किये त्रिलोक ललाम ।।
कहँ लगि कहौं अनेक पतितगण किये विगत भव धाम ।
हमरि बेर नाथ करुणा तव, कहाँ गई अभिराम ।।
साधन हीन ताप त्रय व्याकुल, मैं बालक तनु छाम ।
कृपा बिलोकनि लखि "गिरिधर" कहँ, कीजै राम अकाम ।।

(३५)

कबहुँक मोहुँ पर रघुनाथ ।
करिय वृष्टि कृपा सुधा की जानि दीन अनाथ ।।
कलि न साधन जोग जप तप नियम संयम नाथ ।
स्वान ज्यों दर-दर फिरत मैं धुनत व्याकुल माथ ।।
भव पयोधि अगाध दुर्गम, भरित पातक पाथ ।
तरौं हौं असहाय तव लहि, तरनि मानस गाथ ।।

लाडिले दशरथ नृपति के, तू अनाथ को नाथ ।
बेगि "गिरिधर" आन्हरहुँ को, राम पकरहु हाथ ॥

(३६)

रघुवर गहौ मेरी बाँह ।
भव समुद्र विशाल दुस्तर विषम विषय प्रवाह ।
नाथ हौं असहाय बूड़ौं जात लहत न थाह ॥
मार अहि मोहि डसत निशिदिन, दहत रिसी अति दाह ।
पकड़ि बोरत वारिनिधि महँ, लोभ दारुण ग्राह ॥
गीध शबरी गति सुनत मन, होत कछुक उछाह ।
होइ मोसे पाँवरन को, राम ओर निबाह ॥
तीनि ताप तें तपत चाहत, कर कमलन की छाँह ।
दास "गिरिधर" शरण आयो, राखु जानकी नाह ॥

(३७)

नातो अधिक राम को भावै ।
नाते मानि नीचहुँ के घर, बिनु बोले चलि आवे ॥
जो प्रभु मायहि जगहि निरन्तर, नट ज्यों कपिहि नचावै ।
सोइ कृपालु जननी तारी सुनि, नाचत अति सुख पावै ॥
जितगो मन अरु पवन ध्यान महँ, जेहिं मुनि कबहुँ न पावै ।
ता अंग परसि विदेह नगर शिशु धनु मख भूमि दिखावै ॥
जासु नाम जपि साधक उर की, मोहहुँ ग्रन्थि नसावै ।
सो प्रभु मिथिलापुर कंकन की, ग्रन्थि छोड़ि नहिं पावै ॥
जाते सब उपजी विद्या अरु, नेति-नेति श्रुति गावै ।
तेहि बन कोल किरात वृन्द मिलि, मृगया रीति बतावै ॥
श्रुति मन्त्रित नैवेद्य द्विजन को, जो प्रभु प्रगट न खावै ।
सोई शबरी पहँ मागि खात फल, उर अनुराग बढ़ावै ॥
शिव विरंचि सनकादिक के ज्यों, कबहुँक ध्यान न आवै ।
सोइ हनुमान अंक लैं पितु ज्यौं नयनन नीर बहावै ॥
नाते बिनु मिले नहिं रघुपति, श्रुति अरू संत कहावै ।
नाता मानि राम भजु "गिरिधर" तौ भव पारहिं जावै ॥

(३८)

अमवाँ के डार बैठि कूजति कोयलिया।
कि गाबु गावु राम के समेत सिया स्वामिनी ॥
रसिक प्रिया के संग बिहरति कुञ्ज कुञ्ज।
भाव भरी मृदुल मराल मत्त गामिनी ॥
चंपक वरन मन हरन कमन तर ।
बसन विभूति जीते कोटि- कोटि दामिनी ॥
जनक किशोरी सीय भाव की विभोरी माय ।
लरिका पें कृपा करूं हरूं भव जामिनी ॥
तोर दरसन हित सुर मुनि तरसत ।
मुनि गन जुगति समाधि के लगाव हीं ॥
यक्ष किन्नर मुनीन्द्र सुर वृन्द आज ।
तोर दरसन लागि मिथला में आवहिं ॥
रउरे आस दरस पियास लागि माता मोरी ।
हमरेहुँ हृदय हुलास अति आवहिं ॥
बाभन के मांग आजु पूरि है तुम्हारे द्वारे।
सीता दानशील जस नेति श्रुति गावहिं ॥
दूधमति तट पर निकट बिहार करूँ ।
राघव रसिक संग हृदय लुभावनी ॥
हरूँ मम बाधा निराधार जानि दीन अति ।
माई तोर कीरति भुवन अघ दावनी ॥
सीता नवमी जनमि तुम्हार जानि आवौं मातु ।
करि करि कल्पना उछाह की बढ़ावनी ॥
निज पति गुरु गोत्र "गिरिधर" जानि मातु ।
राम को दिखाउ बेगि पतित की पावनी ॥

(३९)

रे मन ! तैं पाँवर अति नीच ।
निशिदिन बसि नीम के कृमि, जिमि कालकूट के बीच ।
पारस सुलभ त्यागि चाहसि खल, कर ते काँच करीच ॥

लखि असार संसार तदपि तैं, जात मदन तें खींच।
सुरसरि नीर नहाइ जथाकरि, शिर पर डारत कीच।।
लखत न मोह विवश बलि पशु ज्यौं, निकट समागत मीच
मकर केतु किंकर सूकर ज्यों राम विमुख भयो नीच ।।
अब खल चेतु हेतु रत जग की, ममता वारि उलीच।
रघुकुल केतु कमलपद "गिरिधर" नित सनेह जल सींचि ।।

(४०)

हे राम सहारा बन जाओ, घनश्याम सहारा बन जाओ ।
संसार निराशा का घर है, परिवार दुराशा का सर है ।
मुझे लोभ पिपासा का डर है, मेरा राम सहारा ...।।
सर्वत्र अंधेरा है छाया, चिंतानल से जलती काया ।
मुझे लूट न ले तेरी माया, मेरा राम सहारा...... ।।
भव सागर के कर्णधार तुम्हीं, जन जीवन के शृंगार तम्हीं ।
इस "गिरिधर" के आधार तुम्हीं, मेरा राम सहारा....।।

(४१)

नातो एक निवाहन हार ।
शील निधान सुजान शिरोमणि श्री रघुपति सुखसार।।
छिनहिं जोरि छिन तोरत तृन सम, यह जग को व्यवहार ।
लघु नातेहुँ कहँ सिर धरि राखत, कोशल सुता कुमार ।।
सखा मानि गुह भुज भरि भेट्यो, हरण सकल महिभार ।
पद धोवत केवटहिं पार करि, पुनि प्रभु उतरे पार।।
खग पितु मानि गोद करि लीन्हों, सीच्यों आँसू फुहार ।
निज पुर पठइ कमलकर कीन्हों, तासु अन्त संस्कार ।।
शबरी मातु मानि खाये फल, नहिं कछु कीन्ह विचार ।
दै निज धाम तिलांजलि दीन्हीं, जग अस कौन उदार ।।
सचिव किये सुग्रीव विभीषण, मेटे विपत्ति अपार ।
बैर, भाव सुमिरत निशिचरहुँ, कीन्हि मुकुति सिंगार ।।
पवन तनय को भेंटि अंक भरि, सुत ज्यों करत दुलार ।

रिनिया बनि धनुसर धरि बिलसत तिनके हृदयागार ॥
तुम्हरों नातो निभाइहिं रघुवर, मानि प्रतीति अपार ।
मन बच क्रम छल तजि भजु "गिरिधर" राघवेन्द्र सरकार ॥

(४२)

दरस कब दइहौ रघुकुलवीर ।
कृपानिधान सुजान सिरोमणि, हरत भगत भव भीर।
प्रणतपाल रघुवंश विभूषन, सुन्दर श्याम शरीर ॥
पीत बसन कटि सुमन माल उर, नाभी रुचिर गंभीर ।
केहरि कंध ग्रीवदर सुन्दर, श्रवनन्ह कुन्डल हीर ॥
हिमकर बदन पंकरुह लोचन, पूरित करुणा नीर ।
नासा सुभग कपोल मञ्जु अति, तिलक हरत जन पीर ॥
भव पयोधि अति अगम भयानक, लखि मन होत अधीर ।
बूड़त अधम अन्ध "गिरिधर" शिशु त्राहि-त्राहि रघुवीर ॥

(४३)

तनिक हँसि हेरहु राजकुमार ।
दीनदयाल भक्त भय भञ्जन कोसलेन्द्र सरकार ॥
हम चितवत तुम चितवत नाहीं, ऐसी करै अबार ।
बारक करुनाकर करुणाते, मोकहुँ लेहु निहार ॥
अगम काल कलि पाय वारिनिधि बूड़त हैं मझधार ।
निज पदकमल पोत ते रघुपति, मोकहुँ लेहु उबार ॥
हौं अति अधम सदा को पापी, तुम्ह प्रभु अधम उद्धार ।
जन्म अन्ध "गिरिधर" को रघुवर, करिये सदा संभार ॥

(४४)

रे मन । तोहिं लाज नहिं लागत ।
जानत हूँ जग जाल कष्टप्रद, तदपि न भ्रमवश त्यागत।
सोचत विषय श्वान ज्यों संतत, द्वार द्वार प्रति दीन ।
चाहत नहिं बाहेर कहुँ आवन, जथा सिंधु ते मीन॥
नीच पाई दुर्लभ शरीर यह भजत न श्री रघुवीर।

कामिनी कनक दास भै लोलुप, सहत महा भव भीर ॥
जब लगि तजि विकार रघुपति पद, पंकज भृंग न होइ हैं ।
"गिरिधर" सपथ खाई कह तन लगि, दारुण विपति न खोइ हैं ॥

(४५)

श्री राम तुम्हारे गुण गण पर, मम जीवन यह बलिहार रहे ।
तब पद कमलों में नित करता मन मधुकर बन गुंजार रहे ॥
बिठला अपने मन्दिर में मन मोहन श्यामल मूरति को ।
लोचन घट राजीव लोचन के, आँसू से पाँव पखार रहे ॥
रसना मरालिका चुना करे, तब राम नाम मञ्जुल मोती ।
वाणी वीणा से नित होती, मृदु मानस की झनकार रहे ॥
कर नित्य करे तेरी पूजा, तुम तज न हृदय में हो दूजा ।
मेरे रोम-रोम में रमा हुआ यह बाल रूप सुकुमार रहे ॥
बस यही प्रार्थना "गिरिधर" की हे रामभद्र स्वीकार करो ।
मेरे मन का नित जुड़ा हुआ सरकार तुम्हीं से तार रहे ॥

(४६)

बताऊँ मैं किसको निज मन की बातें अलग श्याम मुझसे न पलभर भी होते
दिखाऊँ मैं किसको मधु मन चुराते जगाते जहाँ श्याम मुझको भी सोते
कभी आके चुपके से ठोड़ी हिलाके कभी मन्द मुसुकाके मुरली बजाके
कभी गुदगुदाके हृदय की वो घातें मुझे चुप कराते हैं यों रोते-रोते ॥
कभी मित्र कह करके मुझको बुलाते पड़क हाथ- चुटकी बजाके नचाते
कभी जीत जाते कभी हार जाते मुझे सुख दिलाते विकल होते- होते ॥
कहें लोग "गिरिधर" को पागल भले ही ठगे मीत मेरा ये श्यामल भले ही
जनाऊँ मैं किसको हृदय की ये बातें जहाँ आज झरने विरह के निसोते ॥

(४७)

सुनिये विनय गोपीनाथ, सुनिये विनय यदु कुल नाथ ।
दीनबन्धु कृपालु देव, बिलोकि निपट अनाथ ॥
दवा जरत बचाइ गोपन्ह, किये सकल सनाथ ।

हौं जरत तिहुँ ताप निशिदिन, विकल धुनि धुनि माथ ।।
देव तुम्ह वसुदेव देवकी, मुकुत बन्दी कीन्ह ।
हौ बन्ध्यों भव जाल रोवत, व्यथित लोचन हीन ।।
नील नीरद सरिस सुन्दर, दिव्य रूप अनूप ।
लसत मुरली अधर सम्पुट, रुचिर सुर नर भूप ।।
सूर काढ्यो कूप ते भय विकल दै निज हाथ ।
आन्हरो अवलोकि "गिरिधर" द्रवहु गोपीनाथ ।।

(४८)

मधुर मधुर नाम सीताराम सीताराम ।
रुचिर रुचिर नाम राधेश्याम राधेश्याम ।।
हरण त्रिविधधाम शीलधाम सीताराम ।
लोचनाभिराम घनश्याम राधेश्याम ।।
गुणललाम भक्तपूर्णकाम सीताराम ।
आप्तकाम मन्मथाभिराम राधेश्याम ।।
कोसलेन्द्र मैथलीललाम सीताराम ।
गोकुलेन्द्र गोपिकाललाम राधेश्याम ।।
भक्ति सहित जपो सीताराम सीताराम ।
प्रेम सहित भजो राधेश्याम राधेश्याम ।।
रामभद्र भयविराम सीताराम ।
बृज निवास गिरिधराभिराम राधेश्याम ।।

(४९)

जाके बरसो बदरवा रे, जहाँ राजे सिय के पिया ।।
जहाँ धरे मुनिवेष मनोहर ।
वनिता अनुज सहित बसे गिरिधर ।।
जाके गरजो नगरवा रे, जहाँ राजे .... ।।
सुनि सुनि गरजनि तब नाचहिं शिखि ।
सुख पावहिं प्रिय प्रियतम लखि लखि।
जाके सरसो अगरवा रे, जहाँ राजे .... ।।

जनक लली जी की सारी भीजे ।
रामचन्द्र लखि लखि मन रीझे ।
जाके ढरको गगरवा रे, जहाँ राजे... ।।
"गिरिधर" को संदेश सुनाओ ।
राम सिया की तपती बुझाओ ।
जाओ बन के डगरवा रे, जहाँ राजे ..।।

(५०)

राँत दिन प्रेम से कौसिला के ललन ।
बन्द आखों से तुमको निहारा करूँ ।।
भाव की मालिका स्नेह की थालिका।
शान्त चित्त नित्य मंगल सँवारा करूँ ।।
लाल अधरों पे किलकन मनोहर हँसी ।
कोस पर मानो पंकज के चपला लसी
चूमकर तेरे जी भर बदन- चन्द्र को।
चन्द्र की चन्द्रिका को बिसारा करूँ ।।
तेरी अलकों के फन्दों में लटका के मन
चारु चितवन छबिली पे अटका के मन ।
होके बेचैन दिन रैन नीरज नयन ।
राम राघव मैं तुमको पुकारा करूँ ।।
होके बेसुध निरन्तर तेरे राग में ।
खोके सर्वस्व रघुचन्द्र अनुराग में ।
कंज कोमल पदों को प्रवणअर्तिहर ।
उष्ण दृग अश्रुओं से पखारा करूँ ।।
अपने मानस भवन में करूँ आरती।
तेरी लीला के रस से भरूँ भारती ।
दास "गिरिधर" की राघव यही कामना ।
चुपके चुपके तुम्हें मैं दुलारा करूँ ।।

(५१)

हितैषी तेरो राम बिनु है कौन ?
स्वारथ के नाते सिमरे जग।
जहँ तहँ बगरे निज मग।
भूलि गयो बिसेपर्तिं डग।
लगी भुवन तिहु तौन ॥
कौन देव बिनु कारन को हित
शबरी मातु कियो खग केहि पितु
काके दीन जननी करुणा चित
को है पतित को पौन ॥
बिनु कारन को एक सहारो।
साचो दशरथ राज दुलारो
"गिरिधर" तू अब नेक निहारो
जगत रहिके मौन ॥

(५२)

मन बलि कौसिला के जाय।
निखिल लोक ललाम बन्दित भुवनपति की माय ॥
हेरि हारत हहरि सुरमुनि जाहि निशदिन ध्याय।
सोई खेलत अंक शिशु बनि पियत पय किलकाय ॥
शिव विरंचि न पार पावत जासु गुन गन गाय।
ताहि लावति जननी आँचल बदन चपरि चुराय ॥
थकित जोगी जती अविचल जेहि समाधि लगाय।
ताहि पसारि रानिहिध ारन ललकी धाय ॥
धरि शिशु तन निरखि सारीहि पोछि जल अन्हवाय।
पेखि सुषुमा लहत "गिरिधर" नयन लाभ अघाय ॥

(५३)

मोको तो राम नाम अनुकूल ।
भव प्रवाह बूड़त कहँ मानहुँ
मिलेहु सुदृढ दोउ कूल ॥
मरन सील कहँ अमिय मिल्यों मानो,
कलप लतहिं मिल्यों फूल ॥
अंध मिल्यों मनहुँ दोइ लोचन,
वनितहि मनहिं दुकूल ॥
मिल्यों स्वाति जल चातक प्यासहिं,
हरन सकल अघसूल ।
"रामभद्रदासहिं" अवलम्बन,
राम नाम सुख मूल ॥

(५४)

नयनों के नीर से तुझे इकबार नहला दूँ मैं ।
शीतल समीर से तुझे पंखा डुला दूँ मैं ॥
तुम खेलते अधिक यों दूर मुझसे न जाओ ।
हँसकर थिरक मेरे सामने आओ
तुझे चूमके सारी व्यथा मन की भुला दूँ मैं ॥
तुम स्वर्ग के सुमनों से नित्य आ रहे सजते
तुझे देखके राघव अनेक काम है लजते ।
मन के सुभाव फूल से तुझको सजा दूँ मैं ॥
मैं जानता सारी तेरी गुस्ताखियाँ राघव
अब बैठती मुख पे मेरे ये माखियाँ राघव ।
आवो तुझे पलकों में अब "गिरिधर" छिपालूँ मैं ॥

(५५)

नाथ अनाथन्ह की सुधि लीजै ॥
अवध नगर बासी वियोग रत, दिन दिन छिन तनु छीजै ॥
दरस आस तरसत चातक ज्यों, घन ज्यों दरसन दीजै ॥
निशि नहिं नींद दिवस नहिं भोजन, नयन नीर तनु भीजै ।
"गिरिधर" मरन मीन ज्यों जल बेगि कृपा प्रभु कीजै ॥

(५६)

रात भर दीपक जलता जाय ।
नयन बिरह की ज्वाल माल से पल पल जलता जाय ।।
प्रिय मुख निरखूँ तव प्रकाश में
प्रियतम परखूँ मृदु विकास में ।
ज्योति वर्तिका से अनुदिन तू
सुस्मित ढलता जाय, रातभर दीपक जलता जाय ।।
मन पतंग को सपदि जलाकर ।
प्रेमपंथ का नेम निभाकर ।
"गिरिधर" प्रभु आरति हेतु तू
क्षण-क्षण जलता जाय, रात भर दीपक जलता जाय ।।

(५७)

प्रेम रस न्यारो है न्यारो ।
जाके उर उमगे सोइ जाने, और तहाँ नहिं चारो ।।
भोजन शयन कछू नहिं भावे पट भूषन लगे भारो ।।
बचन शूल सम लगत श्रवन बिच, भवन लगत है कारो ।।
पागल फिरे निरन्तर जग में तृन सम नातो सारो ।।
"गिरिधर" बिनु यह दशा मिलत नहीं, कौसिल्या के बारो ।।

(५८)

बिठालो अपने नयनों में खिलौने बनके आये हैं ।
मनोहर मञ्जु मूरति है छबीली श्याम सूरति है
छिपालो उर के अयनों मे खिलौने बन के आये हैं ।।
सुकृति के पुंज मनमोहन, मदन मोहन नवल चिद्घन ।
चुरा लो चित्त के सयनों में खिलौने बनके आये हैं ।
करो मत देर अब "गिरिधर" अवध के राज सुत सुन्दर
मिला लो अपने बयनों में खिलौने बनके आये हैं ।।

(५९)

संतन्ह के सङ्ग लाग रे, तेरी बिगड़ी बनेगी ।
ध्रुव की बनी प्रह्लाद की बनि गइ गजहूँ को जाग्यो भाग्य रे ।।

गणिका की बनी आजामिल की बनि गइ व्याध जनम फल जाग रे ।।
गीध की बनि गइ शबरी की बनि गइ सुग्रीव को भयो भाग रे ।।
त्रिजटा की बनि गइ बिभीषण की बनि गइ हनुमत से कियो अनुराग रे ।
"गिरिधर" की बिगड़ी बनी है लिए गुरु चरन पराग रे ।।

(६०)

रघुनाथ हमारी पीर हरो ।
रघुवीर हरो भव भीर हरो ।।
करुनायतन प्रभु शून्य हृदय में भगत सुमिरि मल नीरभरो ।।
परम प्रबल अघ कोटि गिरिन को वाम सुपविते चूर करो ।।
"गिरिधर" सिर पर हे सीतावर कर पंकज रणधीर धरो ।।
सपदि कृपाल सरस साधन करि पावन सरस शरीर करो ।।

(६१)

चलो रे मन तुरत अयोध्या धाम ।
बिराजे जहाँ सगुण शिशु राम ।।
जहँ व्यापक ब्रह्म निरञ्जन ।
प्रकटे दृग खञ्जन अञ्जन ।।
लख लाजत जिनको कोटिक काम ।
बिराजे जहाँ सगुन शिशु राम ।।
लख राज महल की शोभा ।
चंचल जन मानस लोभा ।।
जहँ छाय रह्यो शोभादि काम ।
बिराजे जहाँ सगुन शिशु राम ।।
कौसल्या अंकन सोहे ।
चंचल अंजन मन मोहे ।।
करुणा रस नव घन सुन्दर श्याम ।
बिराजे जहाँ सगुण शिशु राम ।।
मत करो तनिक मन देरी ।
मैं लेउँ बलैया तेरी ।।

ये "गिरिधर" के लोचन अभिराम।
बिराजे जहाँ सगुण शिशु राम ॥
अवध धाम धामाधिपति, अवतारन पति--राम।
सकल सिद्धि श्री जानकी, दासन्ह पति हनुमान ॥
कोटि कल्प काशी बसे, मथुरा कल्प हजार।
एक निमिष सरजू बसे, तुलै न तुलसीदास।

(६२)

राम राम राम राम राम राम कहुरे ॥
राम काम तरु जानि, प्रीति औ प्रतीति मानि ।
हानि-लाभ त्याग अनुराग राग गहु रे....... राम राम ॥
राम को पियूस प्रेम पान करु धारि नेम।
चातक ज्यों एक रस पन निरबहु रे............राम राम ॥
स्वारथ परमारथ हूँ, जानि कै अकारथ तू।
राम नाम प्रेम रुचि रामहिं ते चहु रे.......... राम राम ॥
कलि कठोर दाव लागि, ज्ञान चल्यो कपि ज्यों भागि।
धूम धुन्ध मूढ़ अन्ध ताप तें न दहु रे......... राम राम ॥
कलि ना विराग जोग, व्यापि रह्यो विषम भोग।
ईश के संजोग राम मोदक ही लेहु रे......... राम राम ॥
"रामभद्रदास" कीजै चित्रकूट शैलवास।
होहु न निराश राम के भरोसे रहु रे...........राम राम ॥

(६[illegible])

साधो मोको चित्रकूट नीको लागत ।
क्षीरसिन्धु कोशलहुँ त्यागि करि जहँ रघुपति अनुरागत ॥
मन्दाकिनी जल शुचि पीयूस सम देखि विराग विराजत।
कामद शिखर बिलोकि नयन भरि, राम प्रेम जिय जागत ॥
ऋषि-मुनिवर धरि विहँग वेष जहँ, प्रात भजन मधु पागत।
जहँ कोकिला मैथिली चरितहिं बचनता रसता गत ॥

साधक भये रूख जहँ शोभित संजम जप तप जागत ।
लता गुल्म तृन जहाँ भगति रस हृदय तड़ाग तड़ागत ।।
सकृत निहारि विवेक विलोचन भीषण भव भय भागत ।
"गिरिधर" चित्रकूट बस निशिदिन है राघव शरणागत ।।

(६४)

व्यास जी का पुत्र प्रेम

मत जाओ-मत जाओ हे शुक ! मत जाओ ।
लगी बिरह की अन्तर ज्वाला ।
प्रेम अनल लपटों की माला ।।
करुणा रस के मेघ बरस कर, पावक प्रबल बुझाओ, हे शुक ! मत जाओ ।।
तुम बिन होगा कानन सूना ।
शोक बढ़ेगा दिन-दिन दूना ।।
आँसू से मुख धोती माता कुछ तो धीर बढ़ाओ, हे शुक ! मत जाओ ।।
बिलख रहे हैं खग- कुल सारे ।
सिसक सिसक रोते तरु न्यारे ।।
रोक रहें मृग पंथ तुम्हारे कुछ तो दया दिखाओ, हे शुक ! मत जाओ ।।
कौन हमारी व्यथा हरेगा ।
कौन छन्द से बिघ्न हरेगा ।
व्रत आश्रम सब "गिरिधर" को सन्तत तुम भागवत सुनाओ, हे शुक !
मत जाओ ।।

(६५)

लूटो रे भैया राम नाम की लूट ।।
राम नाम है हीरा मोती दिव्य जगाता मन में ज्योति
जगत व्यर्थ माया प्रपंच सब धन दौलत है झूठ ।।
प्रिय परिजन से अब मुख मोड़ो, राम चरन से नाता जोड़ो ।
"गिरिधर" प्रभु से नेह लगाले, नेक न मन में रूठ ।।

(६६)

प्रभु के पाद पंकज को नयन भर मैं निहारूँगा।
निरखकर कृष्ण के मुख को सुकृत सरबस भव सवाँरूगा।
जिसे माता यशोदा ने हृदय अन्तर छिपाया था।
उसी को आँख भर लख के निमिष लोचन निवारूँगा।।
छिपा लूँगा उन्हें उर में बिठा पलकों के पौड़े पे।
नयन के उष्ण आँसू से चरण सरसिज पखारूँगा।।
निरख अक्रूर को आता लगायेंगे गले मुझको।
मैं बृज की लोट धूलों में करुण आरति उतारूँगा।
चराते धेनुओं को वे जो इन्द्रिय मन अगोचर हैं।
विमल "गिरिधर" के मुख छवि पे वचन तन मन को वारूँगा।।

(६७)

राम रस प्यारे पीने दो।
काँटो से भी कठिन सेज पर हँसकर सोने दो।।
कालकूट का मधुमय अर्चन, कृष्ण सर्प का सरल समर्चन,
बहुत काल से फटे बसन को, सकुशल सीने दो।।
चिन्ता की दावाग्नि बुझाने, तीव्र हृदय का ताप मिटाने।
नयन कलश में आत्म व्यथा के, जल भर लेने दो।।
क्रन्दन और नन्दन का मिश्रण, जीवन पथ पाथेय विषम क्षण।
गरल घूँटकर भी "गिरिधर" को सुख से जीने दो।।

(६८)

देखि मेरी दीनता सच ऊब होती है तुझे।
बेरहम तुझको निरख चिढ़ खूब होती है मुझे।।

× × ×

आँसुओं की धार में मेरी अगर डुब जाओगे।
तो सच कहो किस भाँति मोहन प्रणतपाल कहाओगे।।
माधव मेरी तेरी प्रीति पुरानी तूने मुझको दगा दिया।
तनिक दिखाकर माधुरी मूरति।
हृदय बसाकर श्यामल सूरति।।
इस मृदु मानस में विरहानल तूने लगा दिया,

माधव रे तूने मुझको दगा दिया ॥
चितवन की जादू कर करके ।
मुरली तान मधुर भर-भर के ॥
सस्मित से चित्त को हर-हर के तलकन जगा दिया ।
माधव रे तूने मुझको दगा दिया ॥
बहुत हुई अब दूर न जा
बिछुड़े जनको पास बुलाओ ॥
"गिरिधर" क्या अपराध समझ कर तुमने भगा दिया ।
माधव रे तूने मुझको दगा दिया ॥

(६९)

(प्रातः स्मरणीय गोस्वामी तुलसीदास जी की वन्दना)

हे चित्रकूट के प्राण तुम्हारी हो जय जय ।
ओ संस्कृति के आह्वान तुम्हारी हो जय जय ॥
तुमने मृत भारत को नव जीवन दान दिया ।
तुमने ही मानस का मृदु मंगल गान किया ।
हे गुण गण ज्ञान निधान तुम्हारी हो जय जय ॥
तुमने पहिचानी धर्मशास्त्र श्रुति परिभाषा ।
तुमसे ही हुई सनाथ ग्राम्य और सुरभाषा ।
हे राम भक्त धनवान तुम्हारी हो जय जय ॥
हे संत वंश अवतंस सुकवि कुल भूषण ।
हुए भूरि भाग तुझे पाकर दूषण-दूषण ।
हे मानवता वरदान तुम्हारी हो जय जय ॥
हे काल जयी युग द्रष्टा बाबा तुलसी ।
तुझे पाकर वसुधा हुलसी हुलसी हुलसी
हे "गिरिधर" के भगवान तुम्हारी हो जय जय ॥

(७०)

१००८ श्री श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती के अवसर पर बधाई गीत (माघ कृष्ण सप्तमी)

प्रगटे रामानन्द हो बाजे गगन बधाई ।
माघ कृष्ण सप्तमी मंगल दिन ।
दूर किये दुःख द्वन्द्व हो, बाजे गगन बधाई ।।
प्राची दिशा सुशीला सुन्दरी ।
जायो पूरनचन्द हो, बाजे गगन बधाई ।।
पुण्य सदन को पुण्य उमगि रह्यो ।
मोद प्रमोद अमन्द, बाजे गगन बधाई ।।
गगन बिमल जल थल सरसीरुह ।
सुरभी समीरण मन्द हो, बाजे गगन बधाई ।।
माता लुटावे अन्न धन सोनमा ।
पिता धेनु कर वृन्द हो, बाजे गगन बधाई ।।
नाचत गावत बिवुध वधूटी ।
वैष्णव हृदय अनन्द हो, बाजे गगन बधाई ।।
सुरगण सुमन मुदित मन बरसत ।
मुनिगण सब स्वच्छन्द हो, बाजे गगन बधाई ।।
"गिरिधर" मुदित निछावर माँगत
बेगि हरहु भवकन्द हो, बाजे गगन बधाई ।।

(७१)

रहे जनम-जनम तेरो ध्यान यही वर माँगू प्रभू ।
मैं तो करूँ नित तुम्हरो गुण-गान, यही वर माँगू प्रभू ।।
तेरे चरणों को आँसू से धोया करूँ,
तेरी यादों में पलकें भिगोया करूँ,
तुम्हें सौंपू जीवन धन-प्राण, यही वर माँगू प्रभू ।।
सुख-दुःख में सदा एक रस मैं रहूँ,
तेरे चरणों की भक्ति सुधा मैं लहूँ,

करूँ प्रेम अमिय रस पान, यही वर माँगू प्रभू ।।
चारू चितवन छबीली रसीले नयन,
लोल अलकें अमिय मंजु तोतले बयन,
सुनके भूलूँ मैं सकल अपान, यही वर माँगू प्रभू ।।
दास "गिरिधर" के राघव एक आशा यही,
स्वर्ग बैकुंठ की अभिलाषा नहीं,
देखूँ तेरी मधुर मुसकान, यही वर माँगू प्रभू ।।

(७२)

चित्रकूट बर पर्णगृह, राजति मगन प्रमोद
जनक सुता पियसन कहे मंजुल करति विनोद

× × ×

राघव जू तुम नाचो मैं गाऊँ ।।
थिरकन निरखि-निरखि प्रियतम की, लोचन जुगल जुड़ाऊँ,
चरण कमल में रचूँ महावर मेंहदी ललित लगाऊँ,
अरुण अधर लाक्षा रस बिरचूँ बेसर नाक पहिराऊँ ।।
सौंपू तुम्हही नील निधि सारी, घूँघट चपरि बनाऊँ ।
बेणी गुथौं जटन को वल्लभ आञ्जन नयन रचाऊँ ।।
मंद मन्द तुम हँसो रसिक प्रिय मै करि जतन चिढ़ाऊँ ।
तुम कर कमलनि गहो कलश जल मैं कोदण्ड चढ़ाऊँ ।
तुम छिपि जाऊ रूठि कुंजन मँह मैं परि पाऊँ मनाऊँ ।
"गिरिधर" प्रभु तुम बनो जानकी मै रघुवर बन जाऊँ ।

(७३)

अभी हमने जी भरके देखा नहीं है ।।
तनिक देर ठहरो अवध के दुलारे,
मधुर मुस्कुराओ हे आँखों के तारे,
बहाना न बनाओ कौसिला जू के बारे
क्यों ? अभी हमने जी भरके देखा नहीं है ।
लगी भूख लालन सरस मूल खालो,

थके हो तो झोपड़ी में छन भर छहालो,
ललन मातु शबरी की आँखें जुड़ालो,
क्यों ? अभी हमने जी भरके देखा नहीं है ।।
कुछ ही छन ललन जू मेरे रूक जाओ,
बदन विधु सलोना नयन भर दिखाओ,
भरो दास "गिरिधर" को अपना बना लो,
क्यों ? अभी हमने जी भरके देखा नहीं है ।।

(७४)

सीता रमण शोक संशय शमन, मेरी अँखियन में बसियो रे ।।
सुन्दर श्रवण सरोरूह लोचन,
बदन मयंक मदन मद मोचन,
नीरज नयन भक्त मानस श्यन, मेरे मन में निवसियो रे ।।
अरुण अधर मुसकानि मनोहर,
जेहि लखि ललकत विपुल विषम शर,
मंगल करण, दिव्य भूषण धरन, मेरे सन्मुख बिलसियो रे ।।
सरसिज करनि शरासन सायक,
कटि निषंग सुन्दर सब लायक,
करुणा भवन, दुष्ट दानव दलन, कहूँ दूरि न खसियो रे ।
श्याम सरोज शरीर सुहावन
प्रणतपाल "गिरिधर" मन भावन
पंकज चरण राम अशरण शरण, मेरे आगे ही हँसियो रे ।।

(७५)

अर्थ चाहिए न धर्म काम चाहिए ।
कौसिला कुमार राजा राम चाहिए ।।
अशरण शरण नाथ दीन हितकारी,
समरथ कृपा निधान भक्त भीति हारी,
मोक्ष चाहिए न देवधाम चाहिए,
कौसिला कुमार राजा राम चाहिए ।

एक बार किसी भाँति प्रभु को निहारूँ,
चरणों को देख निज़ सर्वस्व वारूँ,
एक लोक लोचनाभिराम चाहिए,
कौसिला कुमार राजा राम चाहिए ।।
राम को मनाने को चित्रकूट जाऊँ,
अँसुवन से "गिरिधर" के ईश को रिझाऊँ,
भरत को त्रिलोक के ललाम चाहिए,
कौसिला कुमार राजा राम चाहिए ।।

(७६)

दुःखों से ठोकर ये खाई न होती ।
तो प्रभु की मधुर याद आई न होती ।।
न दीखते प्रभु के ये शुभ रंग न्यारे,
न लगते मन को ये प्राणों से प्यारे,
जो लगती जगत की पिटाई न होती ।
तो प्रभु की मधुर याद आई न होती ।।
जो प्राणी जगत से निरादर न पाता,
कभी भी न लगता ये कटु नेह नाता,
जो मित्रों से जग की जुदाई न होती,
तो प्रभु की मधुर याद आई न होती ।।
कहो कैसे फिरता ये "गिरिधर" दीवाना,
जगत जो न अपना ये होता बिराना,
बिरह की व्यथा जो सताई न होती,
तो प्रभु की मधुर याद आई न होती ।।

(७७)

अपने मन को ही मंदिर बना लो
श्याम सुन्दर को उसमें बिठा लो ।
चाहे देश में रहो परदेश में रहो,
किसी वेश के परिवेश में रहो,

अपने मन में प्रभु को बसा लो
श्यामसुन्दर को उसमें बिठा लो ।।
बात मानो मेरी वन को जाओ ललन,
प्रेम भक्ति से प्रभु को रिझाओ ललन,
उनके चरणों को उर में लगा लो,
पाहि कहकर के जाओ प्रभु की शरण,
वे हैं "गिरिधर" कृपानिधि औ आरति हरण,
अपनी करुणा से प्रभु को रिझा लो
श्याम सुन्दर को उसमें बिठा लो ।

(७८)

सोइ रसना जो राम गुन गावे
सोइ मुख जो रटि राम निरन्तर, हरि जूठन कहँ नित ललचावे,
सोइ श्रवण जो राम कथा कहु सुधा सरिस प्रीति सुख पावे ।
सोइ लोचन जो राजीव लोचन बपु छबि निरखि -निरखि हरषावे ।
सोइ कर जो रघुपति पद सरसिज परसि परसि हिय मोद बढ़ावे ।
सोइ उर जो कोसल सुख वर्धन मृदु मूरति निज ठाँव बसावे ।
सोइ चरन जो चित्रकूट महँ अनुछन चलत चलत थकि जावे ।
सोइ चित जो चिन्तत सीतापति सोइ मन जो मन मोहन भावे ।
यह साधन तब होइ जबींह श्री राघव कृपा सुधा बरसावे ।
ये ही आस दास "गिरिधर" को दूजो और भरोस न आवे ।।

(७९)

राघव अब मोरि लाज बचाओ ।
अशरण शरण समुझि अपनोपन, करुणा करि अपनाओ ।
जेहि करुणा गज गीध द्रुपदजा, पाण्डव के दुःख टारे ।
सोइ करुणा अब सुमिरि कृपानिधि, संकट हरहु हमारे ।
कलिमल मूल शूल त्रय दारुण, चहुँ दिशि ते खल घेरे ।
हौं दृग हीन अधीन असम्बल तुम ही एक बल मेरे ।
कहाँ लगि कहौं रीति या जग की, कबहूँ नहीं पतियाओ ।
हृदय हारि हरि हहरि वेगि करि, नाथ शरण अब आयो ।

नातो नेह पेखि निज गुरु को, रघुवर नेक निभाओ ।
बूड़त जलधि देखि "गिरिधर" कह, पंकज पानि टिकाओ ॥

(८०)

अपने राघव को जी भर निहारेंगे ।
उनके चरणों में तन-मन को वारेंगे ॥
उनको पलकों के पलने में लेके सदा ।
गोद से हम खिलायेंगे अब सर्वदा ।
अपने राघव को जी भर दुलारेंगे ।
उनके चरणों में तन-मन को वारेंगे ॥
उनको भाव के सुमन से सजायेंगे हम ।
उनको कह-कह के मुन्ना बुलायेंगे हम ।
अपने राघव को निशि-दिन सवारेंगे ।
उनके चरणों में तन मन को वारेंगे ॥
[illegible] लख-लख के जगती को भूलेंगे हम ।
उनके आनन में मस्ती से फूलेंगे हम ।
उनके पग आँसुओं से पखारेंगे ।
उनके चरणों में तन मन को वारेंगे ॥
[illegible] "गिरिधर" का उनके सिवा क्या रहा ?
[illegible] को जीवन का फल भी लहा ।
[illegible] आरती निरन्तर उतारेंगे ।
उनके चरणों में तन मन को वारेंगे ॥

(८१)

[illegible] की गति न्यारी रे, याको बिरलो जाने ॥
[illegible] छिन-छिन ताको दीखत ।
[illegible] धनुधारी रे, याको बिरलो जाने ॥
[illegible] ताको कछुक न भावे ।
[illegible] भारी रे, याको बिरलो जाने ॥
[illegible] बूँद एक पीके ।
[illegible] री रे, याको बिरलो जाने ॥

प्रेम को पंथ भरत ने जान्यो
पुर तजि भयो भिखारी रे याको बिरलो जाने ।।
"गिरिधर" प्रेमी जनन्ह की बातें,
समुझत नाहिं अनारी रे, याको बिरलो जाने ।।

(८२)

राघव ललन मेरे जीवन के धन, दूर भागो न मुखड़ा छिपाय ।
हाथ लिये मैं कनक कटोरा ।
पुनि पुनि करती नेकु निहोरा ।
खेलो आँगन मेरे छगन मगन ।
दीजो चितवन की जादू चलाय ।। राघव ।।
मोदक लिए सुमित्रा जुहारें ।
आँचर से तेरी खोर बुहारें ।
मानो बयन राम राजीव नयन ।
कोई दे नहीं नजरा लगाय ।। राघव ।।
रूठो नहीं मेरे नयनों के तारे ।
करलो कलेऊ राज दुलारे ।
"गिरिधर" को मन झूलो मंजुल पलंग ।
माता शोभा पे वारि वारि जाय ।। राघव ।।

(८३)

मेरा मुन्ना है तू मेरा प्यारा है तू ।
मेरे नयनों का नन्हा सा तारा है तू ।।
मेरे प्राणों की बगिया का शृंगार तू,
मेरे श्वासों के सरगम का आधार तू,
मेरी नैया का पतवार परमात्मा,
मेरे जीवन का सच्चा सहारा है तू ।।
तुम्हें पाकर जगत भूल जाऊँगा मैं,
तुम्हें खोकर कहीं सुख न पाऊँगा मैं,
तुम्हें उर में छिपालूँ मैं नीलम रतन,
मेरे मानस गगन का सितारा है तू ।।

र्चना हो सकी नाथ पूरी नहीं,
री मंजिल अभी तक अधूरी रही,
ड़ जाओ न जंगल में मंगल भवन,
रा सर्वस्व राघव दुलारा है तू ॥
रे पलकों के पौड़ों पे रख दो चरन,
रे मन बन में खेलो हे अशरन शरन,
दो अवलम्ब "गिरिधर" को कर कंज का,
न्धु में डूबते का किनारा है तू ॥

(८४)

य्या रमैय्या पुकारा करेंगे ।
हें रातदिन हम सँवारा करेंगे ॥
हारे कमल पद को चूमेंगे निशि दिन ।
हें आँख भर हम निहारा करेंगे ॥ रमैय्या ॥
ाओगे जब तोतले मृदु बचन तो ।
भी झूमकर हम दुलारा करेंगे ॥ रमैय्या ॥
ायेंगे सर्वस्व तेरे चरण में ।
न होके तब मन को वारा करेंगे ॥ रमैय्या ॥
रूठोगे तुम तो मनायेंगे हम भी ।
हें हम तो राघव दुलारा करेंगे ॥ रमैय्या ॥
कोगे जो लालन चपल केलि में तुम ।
रण आँसुओं से पखारा करेंगे ॥ रमैय्या ॥
ा करके "गिरिधर" हृदय कुंज में हम ।
आरती ही उतारा करेंगे ॥ रमैय्या ॥

(८५)

राम राम राम राम राम रटे रे ॥
- लोचनाभिराम आप्तकाम पूर्णकाम,
ी मनोभिराम अष्टजाम रटे रे ॥
की निशा अपार विश्व घोर पारावार,

निराधार निराकार पापपुंज कटे रे ॥
बुद्धि को विलास त्याग दृढ़ विराग जोग जाग,
नाम जपहिं सानुराग निज अभाग घटे रे,
होउ न निराश त्रास-हरन भजहि श्रीनिवास,
"रामभद्रदास" बदत माया मान हटे रे ॥

(८६)

दशरथ जू के राजकुमार, हमारी सुधि लीजियो ।
हे नव नीरज सुन्दर राघव,
भव निधि मन्दर मन्दर राघव,
मैथिली के सुभग शृंगार हमारी सुधि लीजियो ॥
तुम्हरे दरस हित अँखियाँ प्यासी,
आओ चित्रकूट गिरिवासी,
हे मेरे रघुवर परम उदार हमारी सुधि, लीजियो ॥
सिय-पिय अब न अधिक तरसाओ
दर्शन दे मेरे प्राण बचाओ
हे "गिरिधर" प्राण अधार, हमारी सुधि लीजियो ॥

(८७)

मुझे यों न अधिक तरसाओ,
मेरे राघव सन्मुख आओ ॥ मुझे ॥
स्मृति के मंगल दीप जलाये, युग सब घड़ियाँ बीति,
आँसू के नव कलश सजाये अब तो अँखियाँ रीति,
मेरे नाथ न अब तलफाओ ॥ मेरे राघव ॥
छूट गये हैं साथी संगी छूटा सकल सहारा,
डूब रही भवनिधि में नैया मिलता नहीं किनारा,
अब तुम कर कंज बढ़ाओ ॥ मेरे राघव ॥
ग्रीष्म काल की धूप भयंकर, भाव के सब तृण सूखे,
सूख गई ये ताल तलैया, प्राण विचारे भूखे,
अब करुणा सुधा बरसाओ ॥ मेरे राघव ॥

प्राण नाथ रघुनाथ हमारे अब तो मधुर मुस्काओ,
"गिरिधर" के ये प्यासे नैना इनकी प्यास बुझाओ,
मुझे आकर धीर धराओ ।। मेरे राघव ।।

(८८)

राम नाम हृदय धरो भव वारिधि पार करो ।
राम के प्रसाद सो विषाद भूरि दूरि करो ।।
राम नाम जीव जतन भुवन को अमोल रतन ।
छाँड़ि मूढ़ घोर पतन अपनो मन बेगि भरो ।।
राम नाम के प्रताप, शम्भु पियो गरल आप ।
तजि के मद मोह दाप त्रिविध ताप क्यों न हरो ।।
राम नाम करत गान जलधि तर्यो हनुमान ।
खोई नीच निज अपान अगम सरित सपदि तरो ।।
राम नाम वर ललाम परम सुखद गुण को धाम ।
त्याग मोह कोह काम भव को धाम काहि जरो ।।
तनिक होहिं जनि निराश जपहिं मैथिली निवास ।
वदत "रामभद्रदास" राम ही ते काम सरो ।।

(८९)

हमारी ओर हेरो हे रमण बिहारी ।
तुम करुणा सागर नटनागर मोहन मदन मुरारी ।।
ज्वाला त्रिविध जलत निशिवासर बहु दिशि लागि कारी ।।
कृपा दृष्टि कर बेगि बुझाओ, गोवर्धन गिरिधारी ।।
काहे करत गहर नन्दनन्दन राधावर वनवारी ।।
मैं असहाय अनाथ अकिंचन केवल शरण तिहारी ।।
"रामभद्रदासहिं" हँसि चितवहुँ गिरिधर रास बिहारी ।।

(९०)

आँखे न होती तो कुछ भी न होता,
न जग में भटक कर तूँ सिर पीट रोता।
न दिखते तुम्हें जग के ये चित्र सारे
हँसते नहीं मनको ये रोष न्यारे
सुनहले समय को न यों आज खोता ॥
बिखरता नहीं जग में दृढ़ ध्यान तेरा
तुम्हें शीघ्र मिल जाता ये भव का बेरा
सदा तू भी गिरिधर-सा सुख नीन्द सोता ॥

(९१)

आँखे न होती तो कुछ भी न होता।
न मानव जनम को निरर्थक तू खोता ॥
न दिखते तुम्हें जग के ये रूप सारे।
सदा मन में रमते अवध के दुलारे।
न तू बेधड़क मोह निद्रा में सोता ॥
किसी को न लख के तुम्हें क्रोध आता।
किसी को निरख तू न मन को फसाता।
किसी की सूरत पे तू मोहित न होता ॥
सदा शान्ति से ईश चिन्तन तू करता।
सदा शान्त एकान्त मस्ती में रहता।
न सिर पीटकर तू कभी जग में रोता ॥

(९२)

हे मेरे राघव जू हे मेरे माधव जू,
मोते कौन भयो अपराध, प्रभु जी मोको दूर कियो ॥
जनम दियो मोको असुरवंश में, जहाँ न तेरो नाम,

चिन्ता अगिनि ते देहियाँ जरि गइ, सूखि गयो मेरो चाम ॥
तव दर्शन को अँखियाँ प्यासी, जुग सम दिवस सिराय,
आओ-आओ अब अपनाओ, मोते रह्यो न जाय ॥
कोटि जनम लौं रहौं नरक में, तव चरणन की आश,
अब प्रह्लाद को दूर न कीजै, कहें "रामभद्र" दास ॥

(९३)

प्राणधन राम हमारे हैं ॥
काहू के गज बाज द्रविण सब मन के सहारे हैं ।
मेरे तो आन्हर के लकड़ी ज्यों दशरथ के बारे हैं ॥
विसरत नहिं नहिं पल भर मोहि जाके रंग निवारे हैं ।
अजहुँ गड़त उर अन्तर प्रतिपल सर अनियारे हैं ।
ताते रहूँ निसोच सोच नहिं भय तजि डारे हैं ।
"गिरिधर" को है ईश धनुर्धर मन जापे वारे हैं ॥

(९४)

लुटादो आज सर्वस को लुटाने खुद को आये हैं
जगत के प्राण रक्षक हैं तुम्हारे बन गये भ्राता
मिटादो आज सर्वस को मिटाने खुद को आये हैं ॥
नयन की गागरी से अब, सींच भरपूर राघव को
सिंचा दो आज सर्वस को सिंचाने खुद को आये हैं ॥
करो मत देर अब "गिरिधर" बसा लो दृग में ये झाँकी
गवाँ दो आज सर्वस को गँवाने खुद को आये हैं ॥

(९५)

मेरे लाड़ले राघव तुझे दिलदार ढूँढू मैं कहाँ
किस कुञ्ज में जाकर छिपे, झाँकी दिखा मुसुकान की
धनु तून शर वारे तुझे, सुकुमार ढूँढू मैं कहाँ
देखे बिना तुझको मेरा, जीवन बना बीरान है
उजड़े हुए गुलशन में, गुलजार ढूँढू मैं कहाँ
सदियाँ गँवाई मोह की, निद्रा में सोके नाथ मैं
निःसार इस संसार में, सुखसार ढूँढू मैं कहॉ
तुम्हीं स्त्र्यं आके लला दृग की पिपासा को हरो
"गिरिधर" के जीवन प्राण के आधार ढूँढू मैं कहाँ ॥

(९६)

दोहा

औरन के धन धान सब, तनय सुहृद परिवार।
"गिरिधर" के अवलम्ब इक, तुम मुन्ना सरकार ॥

× × ×

मेरो मन भयो बावरो याको राम बिना को जाने ॥
कोऊ कहे दम्भी, पाखण्डी कोऊ कहे, कोऊ ज्ञानी मोहे माने,
कोऊ माने अभिमान निरत, कोऊ पण्डित मोहे जाने,
मेरो मन भयो आकरो, याको राम बिना को जाने ॥
कोऊ लोभी, कोऊ क्रोधी बरने, कोऊ पाँवर कहे कामी,
कोऊ अन्ध, कोऊ बधिर बखानत, जानत अन्तर्यामी,
मेरो मन भयो चाकरो, याको राम बिना को जाने ॥
कोऊ बालक, कोऊ युवक कहत है, कोऊ श्रुतिपथ ते न्यारो,
तेरी सौं "गिरिधर" तो जनम को, किंकर एक तिहारो
मेरो मन भयो रावरो, याको राम बिना को जाने ॥

(९७)

हमनी क धन एक राघव के चरन बा।
शम्भु निज मानस जतन से चोरौलें,
मुनिजन मन माँहि सुख से छिपौलें,
उहै भव निधि हित तारन तरन बा।।
बन्धुक सुमन जेका देखि सरमाये,
जेका बिना मूढ़ भव भूलि भरमाये,
परम मनोहर ऊँ उरुण बरन बा।।
चन्दाहु लजाइ जालें लखि नख जोती,
पंकज दलन पर राजे जैसे मोती,
जनक सुता के हिये एक आभरन बा।।
मुनि तिय पाप हर गीध के उधरलें
हमसे अनेक पापी पल मध्य तरलें
"गिरिधर" के हेतु उै भवभय हरन बा।।

(९८)

श्री तुलसीदास जयन्ती

हे राजापुर के पूत तुम्हें शत-शत वन्दन।
हे मंजुल भाव प्रसूत तुम्हें शत-शत वन्दन।।
हे कविकुल चारु सरोज मनोज्ञ दिवाकर,
हे कविता कामिनि यामिनि पूर्ण निशाकर,
हे मंगल प्रेम विधूत तुम्हें शत-शत वन्दन।।
हे सीताराम सुप्रेम सरस रस मधुकर,
हे मानस के उद्‌गाता भाव कलाधर,
हे संस्कृति रथ के सूत, तुम्हें शत-शत वन्दन
तुम कालजयी युगस्रष्टा बाबा तुलसी
तुम्हें पाकर जनता हुलसी हुलसी हुलसी
हे "गिरिधर" मानस दूत, तुम्हें शत-शत वन्दन

(९९)

२

हे राजापुर के पूत नमन शत-शत तुमको ।
हे चित्रकूट अवधूत · नमन शत-शत तुमको ।।
हे कालजयी कवि पुंगव बाबा तुलसी,
तुम्हें पाकर जनता हुलसी, हुलसी, हुलसी
हे रघुपति प्रेम प्रसूत, नमन शत-शत तुमको ।।
तुमने आकर जग का मंगल उपकार किया,
डूबते भारत को आकर स्वयं उबार लिया,
हे कविता भाव प्रसूत, नमन शत-शत तुमको ।।
नव वाल्मीकि तुम अनुपम हुलसी नन्दन,
तुम्हें पाकर गौरव स्वयं लहे रघुनन्दन,
हे राघव भाव विभूत, नमन शत-शत तुमको ।।
श्री राम चरित मानस रस कलश सुधाकर,
जिसे पीकर हुआ चकोर धन्य यह गिरिधर''
हे भारत संस्कृति सूत, नमन शत-शत तुमको ।

(१००)

अर्चना की विधि अभी तक नाथ पूरी हुई नहीं,
मिट सकी इस हेतु यह मेरी तुम्हारी दूरी नहीं ।।
कौसिला के पूत कितनी दूर मुझसे जाओगे,
देख मेरी दीनता कब तक नहीं तरसाओगे ।।

× × ×

मुझसे पतित को नाथ जो अपनाओगे नहीं ।
तो पतित पावन आप कहे जाओगे नहीं ।।
मैंने सुना है आपने गज गीध को तारा
पद पद्म रज से अधम अहिल्या को उधारा
इस दीन को जो गले से लगाओगे नहीं ।। तो पतित ।।
लहरा रही सर्वत्र आपकी कृपा सुधा
इस ओर छा रही है मेरी विषय की क्षुधा

हे श्यामघन ! इसे जो झट बुझाओगे नहीं ॥ तो पतित ॥
होती है मेरी बेर क्यों ये ढील दुःखरमण
"गिरिधर" की हरो पीर शीघ्र जानकीरमण
हृदयेश हिये में जो शीघ्र आवोगे नहीं ॥ तो पतित ॥

(१०१)

उनकी करुणा में कोई कमी है नहीं, पात्रता में हमारी कमी रह गयी ।
उनकी ममता में कोई कमी है नहीं; योग्यता में हमारी कमी रह गयी ॥
देव दुर्लभ दिया देह प्रभु ने हमें, जो है आगार सुख साधनों का विमल ।
उनकी समता में कोई कमी है नहीं, पुत्रता में हमारी कमी रह गयी ॥
प्रति दिवस आके मिलते हैं हमको प्रभु, फिर भी उनको न हमने निहारा अरे ।
रवि के उगने में कोई कमी है नहीं, नेत्रता में हमारी कमी रह गयी ॥
दोष देता उन्हें नीच "गिरिधर" वृथा, छोड़ता है नहीं झूठ दुर्वासना ।
उनकी क्षमता में कोई कमी है नहीं, सौम्यता में हमारी कमी रह गयी ॥

(१०२)

मेरे नैना में राम रस बरस रह्यो रे ॥
मानत आन प्रतीति न मन मेरो, एकहिं रस अब सरस रह्यो रे ॥
चपल चितइ रानी कौसल्या को लालन, चित मेरो निज ओर करष रह्यो रे ॥
जित देखौं तित श्याम सलौना, मोहन हँसि-हँसि हरष रह्यो रे ॥
"गिरिधर" और आस क्यों करि हैं, राघव हित नैना तरस रह्यो रे ॥

(१०३)

मानस मन की आँखिन हेरि ।
सात सोपान विधान सुभग सुठि, सरस घाट चहु केरि ॥
संस्कृत अरु प्राकृत भाषा महुँ, जीवन को मधु लाभ सरस लहु ।
साधन फल मुनि जन के धन कहुँ मुकुता पय बहु बेरि ॥
मधुरकंठ चौपाई गावहु, छन्द सौरठा महँ मन लावहु ।
श्लोक दोहरा चित महुँ ध्यावहु मनन करहु बहु तेरि ।'
महाकाव्य द्वादश रस संग्रह तुलसिदास कह मंगल को ग्रह
जिय जोवहु राघव कर विग्रह सर्वस ' 'गिरिधर" केरि ॥

★ रूप—माधुरी ★

(१)

राघव खेलै अगंना कौसिला के बारे ललना ॥
सुन्दरता सुरबेलि के बिरवा,
हो मुनिमन मोहना, कौसिला के बारे ललना ॥
दसरथ सुकृत पयोधि से प्रगटे,
हो जनु चातक घना, कौसिला के बारे ललना ॥
पग नुपूर कटि कलित किंकिणी,
हो कर लसै कंगना, कोसिला के बारे ललना ॥
उर बघनहा तनु पियरी झिगुलिया,
हो कण्ठ कठुला बना, कौसिला के बारे ललना ॥
किलकनि हँसनि चपल चख चितवनि,
हो दमके दुइ-दुइ दशना, कौसिला के बारे ललना ॥
रामहि जननि चुराय अँचर तर,
हो जैसे कृपण घना, कौसिला के बारे ललना ॥
यह शिशु रूप सुमिरि अति हुलसत
हो "गिरिधर" को मना, कौसिला को बारे ललना ॥

(२)

आज केरी झाँकी अलबेलिया सहेलिया हे ॥
सुन्दरता सुर तरु पर लसै जनु ।
सुषमा सरस सुरबेलिया ॥ सहेलिया ॥
कुटिल अलक विधु बदन लटकि लटै ॥
करत मधुप अठखेलिया ॥ सहेलिया ॥
कुण्डल जुग छवि मकर रमनि मानो ॥
चूमति कपोल अलबेलिया ॥ सहेलिया ॥
खंजन नयन मयन मन मदहर ।

चपल बिलोकनि नवेलिया हे ।। सहेलिया ।।
मरकत तनु लसे पियरी झिंगुली मानो ।
जलधर तडित सुकेलियाँ ।। सहेलिया ।।
दशरथ-घरनि ब्रह्म शिशु लालती ।
आनन्द उदधि रसकेलियाँ ।। सहेलिया ।।
"गिरिधर" मति मृगनयनी निरखि हरि ।
भाव जयमाल उरमेलिया ।। सहेलिया ।।

(३)

हलकी सी झलकी दिखा गयो रे माई, दशरथ को दुलारो ।।
ठुमुक ठुमुक के वो पंकज-पदों को ।
दरस हृदय में खिला गयो रे माई, मुनिजन को सहारो ।।
मन्द-मन्द हँसके सुकोमल गिरा से ।
सरस सुधा सरसा गयो रे माई, कौशिला को बारो ।।
कुटिल अलक की छबीली है झाँकी ।
मन मेरो वा में फँसा गयो रे माई, जन लोचन को तारो ।।
काह कहूँ बस कछुक चलत नहीं ।
चित मेरो चपल चुरा गयो रे माई, दास "गिरिधर" को प्यारो ।।

(४)

देखो सखि दशरथ राजकुमार ।
सकृत निहारी चाप सर डारयो, भाव विवस भयो मार ।।
गोद लिये कौसिला मुदित मन, सकल सुकृत को सार ।
मानहुँ कनक बेलि पर भाजत नव घन कलित तुषार ।।
बिहँसत कछुक केलि रसबस हरि आँचर चपरि उघार ।
मनहुँ मदन को केलि कंज लखि बिबरयो सुरसरि धार ।।
भगत काम तरु रूप सुधाकर, किन्हों अमित श्रृंगार ।
किधौं सिमिटि आये राघव पर, दसहुँ सुभग अवतार ।।
सुनि गुरुतिय के बचन विनय सखि, तन-मन रही न संभार ।
यह छवि सुमिरि दास "गिरिधरहु" पायो मोद अपार ।।

(५)

सजनियाँ राघव रूप निहार ।।
नख-सिख सुभग धूर -धूसर तनु ।
श्वेत पराग लसत मानहुँ धनु ।
लखि लाजत शत मार ।। सजनियाँ ।।
कुटिल अलक विधु आनन चूमत ।
मनहुँ मधुप सरसिज पर झूमत ।
निरखत तन-मन वार ।। सजनियाँ ।।
कुण्डल श्रवण अरुण दृग कोना ।
लसत कपोलनि गोल डिठौना ।
मधुर-मधुर अरुणार ।। सजनियाँ ।।
मुनि मन हरनि मन्द मुसुकनियाँ ।
तोतरि बचन चपल चितवनियाँ ।
विधु पर लसत तुषार ।। सजनियाँ ।।
पहुँची रुचिर कनक करधानियाँ ।।
रुनझुन करति पाँय पैजनियाँ ।
नख शिख सुभग शृंगार ।। सजनियाँ ।।
सुनि सिख होहु भाव जनि भोरी ।
सुमुखि निरखु रामहि तृण तोरी ।
"गिरिधर प्राण अधार ।। सजनियाँ ।।

दोहा-कौसल्या के बचन सुनि, सखि लखि राजकुमार ।
"गिरिधर" धीर न धर सकी, भूलि गई संसार ।।

(६)

आजु हरि सुषमा बरनि न जाई ।
कोटि कोटि मनसिज मद भंजनि रंजनि सुजन लखति सुखदाई ।।
भूषन-बसन जड़ाउ जगमगत कंचन मुकुट सिरिष छवि छाई ।
मनो मरकत गिरि ग्रह सप्तक मिलि रचे रुचिर बर भवन अथाई ।।
गोल कपोल डिठौना सोहत आनन छबि चित लेत चुराई ।
मनहुँ मृदुल पाटल जुग पिक लसे शशि पीयूष लगि रहे ललचाई ।
बाल सुभाय धूरितन मेलत खेलत मुदित सहित तिहुँ भाई ।
यहि झाँकी सुधि करि "गिरिधर" के अति आनन्द न हृदय समाई ।

(७)

लटके कमल कपोल ऊपर केश गभुआर।
हमरा मनवा के मोहलिनी सखि कोसिलाकुमार ॥
अरुण अधर विधु बदन सलोना।
झलकेला गाल ऊपर द्वै द्वै डिठौना।
खंजन के मदहर नैन कजरार ॥ हमरा मनवा ॥
बालक सुभाय जब मन्द मुसुकाले।
इन्दु कुन्द कुड़मल लखि कै लजाले।
तोतरि बचन बोले प्रेम सुधा सार ॥ हमरा मनवा ॥
उर बघनखा लसे पियरी झिंगुरिया।
बदरा के बीच जैसे चमके बिजुरिया।
कर में पहूँची सोहे उर मनिहार ॥ हमरा मनवा ॥
भूषन जराऊँ जरे कटि करधनियाँ।
रुनझुन करै चारु चरण पैजनिया।
साँवरो कुँवर लखि लाजे कोटि मार ॥ हमरा मनवा ॥
चुटकि बजाय रानी राम के बोलावेली
चूमि मुख चारु चन्द आँचर छिपावेली
झाँकी झाँकि "गिरिधर" यहि रूप बलिहार ॥ हमरा मनवा ॥

(८)

आज प्रभु दीखत छोटे छोटे ॥
छोटे कर अँगुली छोटे छोटे द्वै द्वै दशन असि छोटे।
छोटो मुकुट अरु कुण्डल छोटो भूषन मनि गन छोटे ॥
छोटे छोटे लसत खिलौने गाल डिठौना छोटे।
छोटे लसत जराऊ तन पर बसन मनोहर छोटे छोटे ॥
छोटी किंकिनी पैजनी छोटी सकल लसत अंग छोटे।
छोटी झारी बंटो छोटो दीपक के रंग छोटे ॥
छोटो हरिन गाय अति छोटी राजत परिकर छोटे।
छोटो मन्दिर छोटो ठाकुर छिपे "गिरिधर" मन छोटे ॥

(९)

आजु मैं देख्यौं अनुपम झाँकी ॥
नख सिख सुभग कामशत सुन्दर ।
श्वेत जलद पर अभिनव जलधर ।
राजत राम रुचिर हय ऊपर ।
विधुमुख छवि अति बाँकी ॥ आजु मैं ॥
भाल तिलक मकराकृत कुण्डल ।
खञ्जन मृग मद हर भ्रू मण्डल ।
रुचिबर चिबुक रद दाडिम कुड्मल
सुषमा अलक चलाकी ॥ आजु मैं ॥
अंश शरासन लसत एक शर ।
भूषन बसन जराउ बपु ऊपर ।
जनु सलि रचि दुहिठा चतुरवर ।
शोभा विश्वकला की ॥ आजु मैं ॥
शिशु सुभाव प्रभु अश्व विराजत ।
ललित लगाम अँगुरियन राजत ।
उपमा कही "गिरिधर" अति लाजत ।
जय-जय राम लला की ॥ आजु मैं ॥

(१०)

देखो री सखी नील सरोरुह एक ।
जहाँ लसत रस की लालच बस अविचल मधुप अनेक ॥
अवध तडाग भाग भरि बिकस्यों रविकुल रविद्युग पाग ।
कौसल्या कल ललित कमलिनी अनुदिन अति अनुराग ।
दशरथ सों माली जेहिं सींचत नेह सुधा रघुवीर ।
सुरभित जस मोह्यो जेहिं त्रिभुवन गुन गन मलय समीर ॥
राम नाम बर बरन परन द्वै लसत प्रेम मत्तरंग ।
"गिरिधर" मन-मधुकर नित पीवत बढ़त अनूप अनन्त ॥

(११)

अनुपम एक सरोवर देख्यो ।।
सर महँ कमल कमल बिच जलधर तापर मरकत पेख्यो ।।
मरकत पर जुग जलज जलज पर दसमहिं सुवन सुहाये ।
तिन्ह पर मधुप मधुप पर करि शिशु तिन्ह जुग कदली सुहाये ।।
तिन्ह पर हंस हंस पर उडुगण तिन्ह पर चपला न्यारी ।
तापर खञ्जरीति जुग तिन्ह पर इन्द्रधनुष छवि प्यारी ।।
तिन्ह ढिग विधु विधु ढिग जुग पाटल तिन्ह ढिग कीर सुहावन ।
ता ढ़िग मदन चाप ता ढ़िग शर लखि मम चित्त लुभावन ।।
ता ढ़िग शनि शनि ढिग है कुलगुरु तिन्ह ढ़िग तिमिर की राशि ।
तिन्ह ढिग लसति भुंजगिनी सुन्दरी तेहि ढ़िग विशद सुधासी ।।
तेहि ढ़िग कनक कनक ढ़िग सम्पुट रतन तासु ढ़िग पेख्यो ।
"गिरिधर" प्रभु शिशु रूप चाहि चख नयनन्ह को फल लेख्यो ।।

(१२)

हमार ललना सारी दुनियाँ से न्यारा ।।
नील जलद मरकत सा सोहे तन श्याम ।
अंग अंग जाके कोटि कोटि काम ।
जलज लोचना सारी दुनियाँ से न्यारा ।। हमार ।।
कानन में कुण्डल औ मञ्जुल कपोल ।
मुकुट शीश झलके बिलोचन विलोल ।
मदन मोहना सारी दुनियाँ से न्यारा ।
पूर्णचन्द्र बदन सुभग मन्द मुसुकान ।
जाको देखि जोगिन को मानस लुभान ।
सहज सोहना सारी दुनियाँ से न्यारा ।। हमार ।।
जाको वेद कहे ब्रह्म व्यापक उदार ।
"गिरिधर" के ईश बने कौसिला कुमार ।
ठुमुक चलना सारी दुनियाँ से न्यारा ।। हमार ।।

(१३)

जय जय राजीव नयन जय, सगुण ब्रह्म साकार।
जय"गिरिधर" के प्राणधन, जय मुन्ना सरकार ॥
कौसला के गोद महँ राघव ललित निहारी।
कह सखि लखु सजनी छविहि तन मन धन सब वारी ॥

निहार सजनी आज राघव की झाँकी ॥
साँवला सुकोमल सलोना सुहावना।
छोटा सा ढोटा ये मन को लुभावना।
उदार सजनी आज राघव की झाँकी ॥
भाल पे तिलक कान कुण्डल विलोल।
मन्द मन्द मुसुकानी मंजुल कपोल।
अपार सजनी मेरे राघव की झाँकी ॥
कजरारे नैन कारे केश गभुआरे।
अरुण अरुण अधर मधुर दशन बारे बारे।
उदार सजनी मेरे राघव की झाँकी ॥
अंग अंग भूषन जराऊदार झलके।
चितवन चपल चाही मेरो मन ललके।
बलिहार सजनी आज राघव की झाँकी ॥
पलकों के पलना पे घालिकै झुलावो।
"गिरिधर" प्रभु के मुख चूमि सुख पावो।
सवाँर सजनी मेरे राघव की झाँकी ॥

आलि बचन गम्भीर सुनी प्रेम मगन भई वार।
"गिरिधर" प्रभु लखि चकित चित लोचन ललित निहार ॥

(१४)

अलक मन बस गई राम लला की।
जनु सकेली राखि बिरंचि रचि सुषमा, सकल कला की ॥ अलक
मेचक अरु कुंचित घुघुराली, थिरकत अलिनि हलाकी ॥ अलक
पूरन विधु ढिग पियत सुधा मानो, ललकति कश्ती चलाकी ॥ अलक

लटकत लखि बिबरत कर कमलनी, सीमा बनी उपमा की ।। अलक ।।
मनहुँ जलज बिदरत घनमाल ही, हठि हठि कनक सलाकी ।। अलक ।।
धूरि धरत सिर खेलत किलकत, प्रीति बढ़ावत माँ की ।। अलक ।।
"गिरिधर" टेरि हरषि हिय हुलसत, यह शिशु राघव झाँकी ।। अलक ।।

(१५)

मनोहर राम को शिशु रूप ।
जात न बरनी मनहि मन भावत नख सिख अंग अनूप ।।
चितवनि चपल तिरीछी भौहें नटनि बालकनि केलि ।
मनहुँ चतुर्दश भुवन छलकि छवि राखि दुहिन सकेलि ।
कुटिल अलक पलकन पर लटकत तिलक लसत बर भाल ।
जनु पंकज महँ छिपन चहत हठि विधु भये मधुकर बाल ।।
द्वै द्वै दशन अधर अरुणारे लसति श्याम तनु धूरि ।
असिसि सुमन पर पीत जलज रज रहे मिलि उडुगन भूरि ।।
कोटि कोटि मनसिज मन होहत चितवत सुभग सरूप ।
"गिरिधर" शिशु राधव नित ध्यावत मिटत भीम तम कूप ।

(१५)

(ओरछा बिहारी श्री रामराजा की महिमा)

दोहा- वेत्रवती शुचि विम नीर पर सुर मुनि संत समाजा ।
ओरछा नगर केतु से राजत श्री रघुनन्दन राजा ।।
बने आज मुनि रूप भूप जो ब्रह्म निरामय ज्योति
मोती महल मध्य बिलसत कौसल्य के मोती

× × ×

गजब महिमा राम राजा तुम्हारी ।।
व्यापक ब्रह्म गणेश कुँअर ढिग प्रगटेउ शिशु तनु धारी ।
अवध ललाम भानुकुल भुषण बनि गये ओरछा बिहारी ।
मधुकर गृहणी कंजधरि मधुकर रामचन्द्र असुरारी ।
शिव सनकादिक टहल करत हैं रिधि सिधि दासी बिचारी ।।
कंचन मुकुट हार हीरन को पट दामिनी उजियारी ।
कर कमलन शरचाप चरम असि तूणयुगल सुखकारी ।।
वाम भाग अनुराग सहित लसे पिय मिथिलेश कुमारी ।
दीजै भगति दास "गिरिधर" को रिरकत द्वार भिखारी ।।
गजब महिमा रामराजा तुम्हारी ।।

(१७)

ओरछा बिहारी श्री राम राजा की दिव्य झाँकी

मन भावनिया कैसी झाँकी बनी ॥
मरकत जलद निरखि छवि लाजत, सीता सहित श्री अवध धनी ॥
कुंचित मेचक अलक लसत अति, ज्यों गिरि पर लसै नागफनी ॥
अरुन अधर लसै पान की लाली, दसन बिराजत ज्यों दामिनी ॥
कुण्डल ललित कपोलन चुम्बत, मानो बनायो है मदन गुनी ॥
नयन कमल भृकुटि बर बांकी, नासा पे लटकलि जलजमनी ॥
पीत बसन कर धरे धनु सायक, कटि तट राजत कल किंकनी ॥
कनक सिंहासन बीच बिराजत, गुन गन गावत देव मुनि ॥
नख सिख निरखि रामराजा को, "गिरधर " उर बढ़ी प्रीति घनी ॥

(१८)

सहेली लखो राम के मुखार विन्द को ॥
मुनिहु को अगम समुझि यह अवसर ।
कस सकुचति है नवेली हे सहेली ।
डारि दे भवीय घोर छद्म छन्द को ॥ सहेली ॥
कुटिल अलक लटकत जनु अटकत
कंज पर भाव भर मधुपवृन्द ॥ सहेली ॥
हँसति खसति जनु अमिय शशि ।
दसन अबलि कुल दिव्य कुन्द को ॥ सहेली ॥
ललित कपोलनि लसत डिठौना द्वै
चूमे जनु कोकिला मनोज्ञ कन्द को॥ सहेली ॥
"गिरिधर" गोद में खिलाये ब्रह्म रामचन्द्र को ॥ सहेली ॥

(१९)

आजु हरि सुषुमा बरनि न जाई ।
नख सिख मधुर मनोहर मूरति मनसिज मनहि लजाई ॥
कनक मुकुट सिर श्रुति कल कुण्डल, रहे कपोल पर आई ।
मकर केतु जुग मनहूँ रहे, अरुन सरोज लुभाई ।

कुटिल अलक नव इन्दु बदन पर लटकि रही छवि हाई ।
अमिय लोभ जनु ललकि मधुप गन शशि ढिग रहे ललचाई ।।
मधुर मधुर मुसुकान दसन द्वै दमकत क्यों कहो माई ।
विद्रुम सम्पुट मध्य विराजत, चपला जनु रुचि लाई ।।
आँचर मँह प्रियतनय कौसिला, हँसि करि लिए छिपाई ।
मनहुँ कनक नलिनी नीरद कहँ श्वेत दुकूल ओढाई ।।
थन पय पियत निरखि जननी मुख किलकि- किलकि रघुराई ।
यह छवि सुमिरि दास"गिरिधर" निज तन सुधि बुधि बिसराई ।।

(२०)

(ओरछा बिहारी श्री राम राजा की रूपमाधुरी)

कौसल्या ने प्रगट किया था ब्रह्ममयी जो ज्योति ।
मोती महल मध्य लसता है वह श्री राघव मोती ।।
देखि नयन भर रूप माधुरी, लोचन सफल बनाओ ।
"गिरिधर सहित राम राजा के सब मिल गुन गन गाओ ।।
सुरति तुमपे वारीं हो अवध बिहारी ।।
हो अवध विहारी हो अवध विहारी ।। सुरति ।।
मोति महल के बीच बिराजत, संग मिथिलेश कुमारी ।।
नजर तुमपे वारी हो अवधविहारी
समुझावत समुझत नहीं नैना ।
निशिदिन मोचत वारी ।। हो अवध बिहारी ।।
मुख ताम्बूल अधर रद सुन्दर,
कुण्डल की बलिहारी ।। हो अवध बिहारी ।।
अब कोउँ नहीं आँखिन बिच आवत,
उर छवि गड़िहैं तुम्हारी ।। हो अवध बिहारी ।।
नख सिख निरखि राम राजा छवि,
"गिरिधर" सुरति बिसारी ।। हो अवध बिहारी ।।

(२१)

ऐसे रूप की बलिहारी ।
कोटि मदन मन हरन-हरन भव छवि लखि भारि निहारी ।।
कनक मुकुट सिर कानन कुण्डल, भाल तिलक दुतिकारी ।
खञ्जन नयन बदन बिधु सुन्दर दशनन की छवि न्यारी ।।
अरुन अधर बिच लसत दतुरियाँ बिहँसति करि किलकारी ।
विद्रुम सम्पुट बीच दामिनी लसे जनु सहज बिसारी ।।
पीत झिगुरिया श्याम वपुबल से घुटुरुन चलत खरारी ।
नील जलद जनु चपला पटधरि कौतुक करत खेलारी ।।
राम छबिहिं लखि मयन सुबासिनी लगि लगि कनक अटारी ।
"गिरिधर" प्रभुहिं छिपावत आँचल प्रेम भगन महतारी ।।

(२२)

तनिक मन राघव रूप निहारू
नख सिख सुभग धूलि धूसर तनु लखि लाजत सतमारू ।
श्रुति कुण्डल कपोल पर लटके ललित अलक गभुआरू ।
मनहुँ अम्बुरुह कोष बिच लसे भँवर करत गुंजारू ।
चिबुक अधर सुन्दर रद द्वै द्वै बदन इन्दु अनुहारू ।
मनहुँ नीलघन अंक बिराजत जुग जुग दामिनी चारू ।।
श्याम शरीर बसन भूषन मनि शिशु छवि अमित अपारू ।
नील जलज पर चपला मिलि मानो उडुगन किये शृंगारू ।।
देह गेह सुधि भूलि मगन रहुँ करूँ जनि अनत अबारू
"गिरिधर" निरखि राम शिशु झाँकी सपदि अपनपौं बारू ।।

(२३)

आजु माधुरी निहारो मेरे रघुबर की ।
मेरे रघुवर की मेरे मनहर की ।।
आयत ललाट सोहे ललित तिलकिया ।
कमल कपोल चूमे कुटिल अलकिया ।
मानो चन्द्र पर झूले पाती मधुकर की ।।
मकर के केत जैसे कुण्डल सोहे कान में ।

शोभा सारी वैसे मानो मन्द मुसुकान में
मुख लखि के लजाओ कान्ति हिमकर की ॥
अरुण अधर छलके दुई दुई ठी दतुरिया ।
बदरा के बीच जैसे चमके बिजुरिया ।
सुषुमा साँवरे शरीर जनु जलधर की ॥
झुनुन झुनुन बाजे पाँव में पैजनियाँ ।
मनवा के मोहे कल तोतरी बचनियाँ ।
झाँकी-झाँक के ठगली बानी "गिरिधर" की ॥
जय जय शोभा धाम शिशु जयति ललित शृंगार ।
जय "गिरिधर" के प्राणधन, जय मुन्नासरकार ॥

(२४)

देखत नयन मोहे, दशरथ के लाला ॥
सुन्दर सुभग श्याम, लोक लोचनाभिराम ।
कोटि-कोटि काम छवि, सोहे दशरथ के लाला ॥
कुण्डल विलोल गोल, कमल कपोल लोल ।
लोचन विलोलचित, पोहे दशरथ के लाला ॥
लसत झिंगुरि तन, मनहु बिजुरि घन ।
तोतरे बचन अति, सोहे दशरथ के लाला ॥
लखि नाचे मन मोर, बदन चन्दा चकोर ।
"गिरिधर" विभोर जेहि, जोहे दशरथ के लाला ॥

(२५)

सुन्दर बदन दिखाय हे रघुनन्दन छैला ।
मिथिलानगर आयके चित्त को चुराय लियो हे ॥ रघुनन्दन छैला ॥
कुण्डल-कानन चमके दुइ-दुइ दतुलिया सोहे ।
अधर अमिय सरसाय हे रघुनन्दन छैला ॥
जब से बिलोकेऊँ सखी मधुर मुरितया हे ।
तब्हीं ते कहु न सुहाय हे, रघुनन्दन छैला ॥
भूख न पियास लागे मन रूप रस पागे ।
तलफनि उर अति अधिकाय, हे रघुनन्दन छैला ॥

येइ शिव धनु तोरे, सीता जी से गाँठ जोरे ।
गिरिजा महेशहिं मनाय हे रघुनन्दन छैला ।
"गिरिधर" ईश पर तन मन वारि- वारि ।
चरण-कमल मन लाय हे रघुनन्दन छैला ॥

(२६)

तेरी मन्द मुसुकान ते चित चोर लियो रे ॥
नील जलद महँ ज्यो परे दामिनी
निरखत भयउ विभोर हियो रे...........तेरी मन्द ॥
द्वै द्वै दसन अधर मृदु पल्लव
जलज नयन को छोर कियो रे..........तेरी मन्द ॥
हँसत अमिय बरसत मन तरसत
भावन को झकझोर लियो रे...........तेरी मन्द ॥
राम लला हम तेरे कनौडे
विधु मुख नयन चकोर कियो रे.......तेरी मन्द ॥
"गिरिधर" केहि से अब नातो जोरे
नृप शिशु से नेह जब जोर लियो रे...तेरी मन्द ॥

(२७)

झाँकी-झाँकत दिवस निशि, नहिं अघात ये नैन ।
"गिरिधर" भूख न परति दिन, नींद न लामति रैन ॥
आज हरि झाँकी कैसी बनी ॥
आँचल महँ विधु बदन छिपावत ।
थन पय पियत कछुक मुसुकावत ।
मोद विनोद प्रमोद बढ़ावत, दिनकर वंशमणि ॥
लटकत अलक कमल चख ऊपर ।
अँगुरिन दूरि करत सुषुमाकर ।
मनहुँ भगावत मधुप चपल तर, हठि-हठि सहस फणि ॥
शिशु भूषण तन धूरि विराजत ।
घुटुरन चलत अजिर प्रभु भ्राजत

मनहुँ नीलधन ऊपरि राजत-उडुगन चन्द्र अनि ॥
राजकुमार मोहि अपनावहु ।
लालन अब न अधिक तरसावहु ।
नाते छोडे कमलपद दिग तब, "गिरिधर" प्रीति जनी ॥

(२८)

सखि री हरि मुख कमल निहारो
जनु त्रिलोक सुषमा सकेलि विधि
करि-करि जतन सँवारो ॥ सखि री ॥
कुटिल अलक लटकत मन अटकत
नयन जुगल कजरारो
अमित वृन्द जनु मधुप कंजते
लरत समय शशि हारो
कुन्द दसन रद बसन अरुणतर
बचन सनेह फुहारो
चूमि-चूमि कौसल्या पियावति
थन पय पेखि बिचारो
कत चूकत सजनी यह अवसर
प्रेम समाधि बिसारो
"गिरिधर" प्रभु की मुख शोभा पर
त्रिभुवन को सुख वारो

(२९)

आज राघव की माधुरी निहार सखियाँ ॥
नील नीलपट धारे श्यामल शरीर है
निर्निमेष नयन जोहे जाहि जोगी धीर हैं
कैंधो रूप मंजुल श्रृंगार सखियाँ ॥
कनक मुकुट शीश कान कुण्डल बिलोल है
लोल लोल अलक कलित कज्जल कपोल है
नैन खञ्जन अधर अरूणार सखियाँ ॥
धूरि भरे देह लसै कटि में करधनियाँ ।

झुनुन झुनुन बाजे पाँव मंजुल पैजनियाँ
दास "गिरिधर" बिलोक लोक वार सखियाँ ।।

(३०)

मदन मोहन तेरी जय तेरी जय हो ।
राजीव नयन तेरी जय तेरी जय हो ।
राम तेरी जय हो ।।
दीनबन्धु रामभद्र करुणा समुद्र मन्द्र ।
सेवक कुमुद चन्द्र रघुचन्द्र रामचन्द्र ।
राघव मुकुन्द तेरी जय तेरी जय हो
राम तेरी जय हो ।।
कुटिल अलक पर कुण्डल झलक पर
आनन शशाँक सरसीरुह पलक पर ।
अधर फलक पर विमल प्रणय हो,
राम तेरी जय हो ।।
कंठ बनमाल पर, सुभुज विशाल पर ।
सुभग झगोलि पीलि किंकिनी रसालपर ।
कौसल्या के लाल पर बिशद विनय हो
राम तेरी जय हो ।।
सुधामय मृदुतर नूपुर मुखर पर ।
कमल चरण मंजु भाव निर्भर पर ।
मानस मधुर पर मन विनिमय हो ।
राम तेरी जय हो ।।
रघुवंश वीर पर राम रणधीर पर ।
धूल से विधूसरित श्यामल शरीर पर ।
भरत के वीर पर नित्य अनुनय हो ।
राम तेरी जय हो ।।
मन्द मुसुकान पर शिशु किलकान पर ।
मृदुल कपोल लटकी अलकान पर ।

तोतरी कलान पर प्रेम रसमय हो।
राम तेरी जय हो ॥
धृत शिशु तन पर मुनि जन धन पर।
"गिरिधर" चातक के नव तम घन पर।
बाल रूप ध्यान मेरे चित्त का निलय हो।
राम तेरी जय हो ॥

(३१)

मो कहँ बालरूप अति भावै।
सुमिरत धेनु लवाय वत्स पहँ, जो अन्तर हीआवे ॥
कुटिल अलक लटकति मुख ऊपर, निरखत मन अति भावै।
जनु पाटल पर भ्रमर वृन्द मद मत्त निताहिं मँडरावै
राम कहत किलकत आनन्द, मंद मंद मुसुकावै।
जनु विद्रुम पर मुकुत वृन्द लसै, देखत मन ललचावै।
घुँटरन फिरत धूरि धूसरतनु, लखि उपमा इक आवे।
मानहुँ नील सरोज ऊपर रज, पीत कमल छवि छावै।
रुनझुन करत कनकबर नूपुर चरणकमल छवि छावै।
जनु मुनिगण कलहंस नीड़ रचि, मिज्जन करत हरषावै।
देखत ही ठगि रहत चपल मन, शोभा किमि कहि जावै।
"गिरिधर" निरखि मुदित निशिवासर, क्यों कहि तुम्हहिं सुनावै।

(३२)

आज मैं देख्यौं अद्भुत झाँकी।
कोटिकाम मद हरनि मोह पद, मूरति मधुर ललाँकी ॥
कुटिल केश लटकत मुख ऊपर, कुण्डल झलक कलाँकी।
भाल तिलक मानो मार चापसर, देखत हरत हलाँकी।
कनक किरीट नासिका ऊपर, तिलक अल्प अति बाँकी।
मानहुँ मुदित कीर पर राजत, लाल बिहंग छवि छाँकी।
मोदक लसत पंकरुह कर हिय, हरषत सुमति चलाँकी।
मनहुँ भक्तिरस लगि ललचावत, जन मन हरत बलाँकी।

अरुन बसन तन नील बिराजत, शोभा अनुपम जाँकी।
मनहुँ नीलगिरि पर अरुणोत्पल विकसी रहे सरसाकी।
दून्दु बदन दृग दयापूर्ण अंजन रंजन सुषमा की।
गीतादिक सनाथ बिलसत नित "गिरिधर" हिय छबि छाँकी ।।

(३३)

शिशु राघव की छबि बसि गई रे ।।
छबि बसि गई रे, मन लसि गई रे,
शिश राघव की छबि बसि गई रे ।।
मरकत मंजु मनोज मनोहर, नील तमाल जलद सम सुन्दर।
श्यामल मंजुल हृदय सरोवर, इन्दीवर सम लसि गई रे,
रति लसि गई रे................शिशु राघव............।।
श्रुति कुण्डल बिधु बदन सुहावन, खञ्जन दृग अञ्जन मन भावन।
बचन तोतरे मधुर लुभावन, अधर ते अमिय बरस गई रे,
सुधि खसि गई रे.............शिशु राघव.............।।
गोल कपोल ललितलट लटकत, पाटल ऊपर मधुप मनो मटकत।
आनन्द इन्दु निरख मन अटकत, मधुर हँसनि हित हँसि गई रे,
उर बसि गई रे................शिशु राघव.............।।
कठुला-कण्ठ हृदय बनमाला, हरि शिशु अंश सुभुजा विशाला।
हाटक किंकिनी मुखर रसाला, पीत बसन कटि कसि गई रे,
चित्त धसि गई रे................शिशु राघव ।।
घुटुरुन चलत कमल पद सोहै, नूपुर धुनि रुन झुन मन मोहे।
खेलत राम किलक जब जोहै, "गिरिधर" प्रीति हुलसि गई रे,
मति फँसि गई रे...............शिशु राघव ।।

(३४)

बिसरे न छन भरि मोहि अवध की गलियाँ हे, रघुनन्दन ललना
सरयू के तीर मोंहि सोहाय हे, रघुनन्दन ललना ।।
ऊँची-ऊँची अटाचढी भामिनी सोहागिनि हे, रघुनन्दन ललना
रउरे गुन गाइ न अघाय हे, रघुनन्दन ललना ।।

कौसिला कुमार जहँ गलियन में खेलैं हे, रघुनन्दन ललना
बोले मृदु वाणी तोतराय हे, रघुनन्दन ललना ॥
दही भात खात खात आँगना से भागें हे, रघुनन्दन ललना
मुखवा से जूठन गिराय हे, रघुनन्दन ललना ॥
कौसिला सुकृति देखि ललच इन्दिरानी हे, रघुनन्दन ललना
फूल बरसि सुरपति सिहाय हे, रघुनन्दन ललना ॥
जौन जोनि जनमौं ज़हाँ रावरे कहावऊँ हे, रघुनन्दन ललना
"रामभद्र" मन लखाय हे, रघुनन्दन ललना ॥

(३५)

जय जय राघव बालक रूप।
जय दशरथ नृप सुकृत कल्पतरु, सुफल सकल सुख रूप।
जय सुख विजित चन्द्र मञ्जुल रुचि सुषमा शील निधान।
जय सौन्दर्यसार रघुनन्दन, जय भावुक जन प्राण ॥
जय रद विहँस कुन्द दाड़िम जय प्रणतपाल रघुवीर।
जय कौसल्या क्रोड़ सुपिञ्जर, मृदुल रूप रुचिकीर।
जय जित दूषण धूलि विधूसर, सकल भक्त भय हारिन्।
जय "गिरिधर" चातक नव जलधर, रामभद्र सुख कारिन्।

(३६)

दिल हमारा लिया लूट तुमने, मंद मुस्कान से राम प्यारे।
भूलते एक पल भी नहीं है, तेरी झाँकी के वे रंग न्यारे।
श्याम घन रूप पियूष सागर, जिसमें डूबा चपल चित्तनागर।
प्रेम फन्दे में मन को कसाते, मञ्जु मेचक कुटिल केश कारे।
भाल आयत तिलक चारु कुण्डल, लाजत मुख निरख इन्दु मण्डल।
लाल-लाल होठों से चमचम चमकते, कुन्द कुडमल दशन बारे बारे।
नासिका गोल सुकपोल लोने, लस रहे दिव्य दो दो डिठौने।
नैन खञ्जन तिरीछी सी भौहें, ज्यों मनोभव शरासन सुधारे।
पीरी झिंगुरी वपुष धूल धूसर, वारे जिसपर करोड़ों विषमशर।
तोतले कल बचन से हृदय में, सींचते प्रेमरस के फुहारे।
चलते घुटनों से हँसते किलकते, लेने सुन्दर खिलौने ललकते।
यह अनुपम छटा राम शिशु की आज "गिरिधर" ने जीभर निहारे।

(३७)

चलो रे मन तुरत अयोध्या धाम ।
जहाँ कौसिला गोद बिराजे, सगुन ब्रह्म शिशु राम ।
व्यापक विश्व निरीह निरञ्जन, भञ्जन भव धन धाम ।।
तरुण तमाल बरन श्यामल तन, लखि लाजत बहु काम ।
पीत झगुलिया तड़ित लसित मानो, शोभित नव घन श्याम ।।
शिव बिरंचि सनकादि जती मुनि, सुमिरत जेहि कर नाम ।
दशरथ अजिर घुटुरुअन विचरत, सो प्रभु पूरन काम ।
रज भूषण खर दूषण दूषण, पूषण वंश ललाम ।
सानुज सदा बसहु "गिरिधर" उर बालरूप श्री राम ।

(३८)

तोहरी बचनियाँ मोरे मनवाँ के हे, रघुनन्दन बबुआ ।
लेलनि मोर चितबा चोराय हे, रघुनन्दन बबुआ ।
बिहग जो पै होत्यौं तो मैं अवध में रहित्यौं हे रघुनन्दन बबुआ ।
पेड़वाँ पें रहित्यौं गुमराय हे, रघुनन्दन बबुआ ।
कोयली जो होत्यौं तो मैं सीताराम कूजित्यौं हे, रघुनन्दन बबुआ ।
बालचरित गाइ विल्हमाय हे, रघुनन्दन बबुआ ।
मनवाँ कहत मोर इन्द्र जो पै होत्यौं हे, रघुनन्दन बबुआ ।
सहस नयन दिखित्यौं तेहि अघाय हे, रघुनन्दन बबुआ ।
शेष जो पैं होत्यौं रामा रउरे गुन गउत्यौं हे, रघुनन्दन बबुआ ।
आनन सहस सुख पाय हे, रघुनन्दन बबुआ ।
आगिले जनम जो पैं पृथुराज हौत्यौं, हे रघुनन्दन बबुआ ।
सहस दस कान सुनत्यौं आय हे, रघुनन्दन बबुआ ।
कुटिल अलकियाँ लटके बदनक ऊपर हे, रघुनन्दन बबुआ ।
कञ्ज पर भौंरा मड़राय हे, रघुनन्दन बबुआ ।
होत्यौं जो मैं कौआ रउरे जूठन खात्यौं हे, रघुनन्दन बबुआ ।
रउरे संग जात्यौं मैं उड़ाय हे, रघुनन्दन बबुआ ।
साँबली सुरतिया मेरी अँखिया में बसली हे, रघुनन्दन बबुआ ।
बिसरल जगत बरिआय हे, रघुनन्दन बबुआ ।
"गिरिधर" माँगे वर जौन जोनि जनमौं हे, रघुनन्दन बबुआ ।
रामभद्रदास ही कहाय हे, रघुनन्दन बबुआ ।

(३९)

(भोजपुरी गीत)

कौसिला कुमार मेरे प्राण के अधरवा ।
अधिक जियरा भावे हो राघव ललना ।
कौसिला के गोद बैठ करत विनोदवा ।
मधुर मुसुकावे हो राघव ललना ।
गोल से कपोल ऊपर लटके अलकिया ।
तिलकिया मन भावे हो राघव ललना ।
अञ्जन कलित सोह खञ्जन नयनवाँ ।
भुकुटि जियरा भावे हो राघव ललना ।
कमल बदन सोहे दुई दुई ठी दतुलिया ।
अधरवा ललचावे हो राघव ललना ।
सुधा से कलित मृदु तोतरी बचनिया ।
अमृत बरसावे हो, राघव ललना ।
ठुमुक ठुमुक चलै नृपति अँगनवा ।
बिहँसि मटकावे हो राघव ललना ।।
तरुन तमाल तन लसत बसनबाँ ।
बिजुरिया घन छावें हो राघव ललना ।
धूल से विधूसरित श्यामल शरीरिया ।
सुछवि सरसावे हो रघुनन्दन ललना ।
चरन कमल सोहे, रुनझुनि पैजनियाँ ।
सतत उर आवे हो, राघव ललना ।।
"गिरिधर" हिय राम करत बिहरवा ।
भगति बरसावे हो राघव ललना ।।

(४०)

कौसिला के गोद खिलौना हो कहुँ नजर न लागे ।
नील सरोरुह, श्याम सुभग तन, मञ्जुल कुँअर सलोना हो ।
कुटिल अलक लटकत आनन पर, मनहुँ लसत अति छौना हो ।
कुण्डल लोल कपोलहि, चूमत, अरुन कमल दृगकोना हो ।।

नासा तिलक दसन सित द्वै द्वै, अरुन अधर अति लोना हो।
धूरि बिधूसर घुटुरुन डोलत, तोतर बचन लुभौना हो।।
ललकत गहन बिलोल खिलौननि, नील रतन चाहे सोना हो।।
कौसिला अब गहर न लावहु, देहि कपोल डिठौना हो।।
मिथला की सब नारि सयानी, जनि कोउ डारो टोना हो।।
"गिरिधर" सुमिरि जगत सब बिसरयों, हइगा जवन है होना हो।।

(४१)

देखि सखि राम के तनु धूरि।
अंगराग समान नख सिख, लसति शोभा भूरि।
बिपुल भूषन बसन साजै, दियो छिन महँ डारी।
मञ्जु पानि सरोज मेलत, अँग रजहि सँवारी।
नील तनु बिलसति बिलोकहुँ, रजहि अति अनुराग।
मनहुँ मरकत सिखर शोभत श्वेत पदम पराग।
कुटिल अलक अलिन्द शावक, बदन उपरि निहारु।
मनहुँ शशी शीतल पियावत, अमिय मेघन चारु।।
धूरि धूसर लसत राघव, मदन सुषमा चोरी।
दास "गिरिधर" निरखि झाँकी, भई सुमति विभोरी।।

(४२)

शोभा पै तन मन लुटइबे हे राघव शोभा पे तन मन लुटइबे।
पलभर न तोहँके भुलइबें हे राघव, पल भर न तोहँके भुलइबें
साँवरि सुरतिया नयन भर निहरबें
आनन पैं बारि बारि जइबें, हे राघव पलपर।
शीतल नयन जल से नित अन्हवैबें
भाव भरा लड्डु खवइबैं हे राघव पलभर।
कोमल पलकियाँ के पलना बनइबैं
दिन रात सुख से झुलइबैं हे राघव पलभर।।
"गिरिधर" हृदय घर में तोहँके छिपइबें
मन के पलँगा पे सुलइबें, हे राघव पलभर।।

(४३)

अबके गये कब अइहौ ललन मेरे ।
कब उर गगन उमड़ि सुख नीरद विरह की अगिनि बुझइहौ
ललन मेरे ।।
लोल कपोल ललित लटकन मुख कब शिशु रूप दिखइहौ
ललन मेरे ।।
मृतक जिवावन तोतरि बोलनि, कब कल मधुर सुनइहौ
ललन मेरे ।।
गोद बैठि सविनोद राम शिशु कबहि अमिय बरसइहौ
ललन मेरे ।।
"गिरिधर" निकट बैठि कब राघव, किलकि किलकि कब धइहौ
ललन मेरे ।।

(४४)

राम लाला को जीभर निहार रे, कैसी बाँकी झाँकी बनी ।
मेरे मुन्ना को जी भर निहार रे, कैसी बाँकी झाँकी बनी ।।
नील सरोज बरन श्यामल तन ।
मेचक कच कुंचित जनु नव घन ।
देखो नखसिख किन्हें शिंगार रे कैसी बाँकी झाँकी बनी ।
शीश कनक मणि मुकुट बिराजे ।
श्रुति कुंडल मकराकृत राजे ।।
नयन कज्जल कपोल सुकुमार रे, कैसी बाँकी झाँकी बनी ।
अरुण अधर मुसुकान मनोहर ।
नासा चिबुक तिलक अति सुन्दर ।।
दिव्य दसनों की शोभा अपार रे, कैसी बाँकी झाँकी बनी ।
तोतर बचन सुधा सम बोलत ।
चितवत जन हिय आनंद घोलत ।।
कंठ कठुला गले में मोती हार रे-कैसी बाँकी झाँकी बनी ।
बाहु विशाल बाल हरि कंधर ।
कर कंगन कटि किंकिनी सुन्दर ।।

चरण नूपुर मधुर झनकार रे, कैसी बाँकी झाँकी बनी ।
पीत झिगुलिया तन पहिराई ।
घुटुरन चलनि मोहि अति भाई ।।
मुदित कौसल्या करत दुलार रे, कैसी बाँकी झाँकी बनी ।
दशरथ अजिर राम शिशु खेलत ।
धूरि विधूसर किलकत डोलत ।।
झाँकी झाँकि मैं जाऊँ बलिहार रे, कैसी बाँकी झाँकी बनी ।।
बालक रूप राम मोहि भावत ।
ठुमुकि ठुमुकि मम सन्मुख आवत ।।
मोद "गिरिधर" के मन में अपार रे कैसी बाँकी झाँकी बनी ।।

(४४)

राम शिशु शोभा मन भावनी सुहावनी हे ।
मरकत जलद तमाल ललकि रहे, कोटि-कोटि मदन लुभावनी
सुहावनी हे............
नासा तिलक श्रवण कुण्डल दृग, मीन मृग खञ्जन लजावनी
सुहावनी हे.............
कुटिल अलक लटके मुखकञ्ज जनु, झूमि झूमि नाचे अलि दाव
सुहावनी हे..............
कंकन हार मञ्जु मुकुतामनि, सुषुमा सुवेलि, सरसावनी
सुहावनी हे...............
झिगुली पीत धूरि धूसर छबि, मातु मोद कलिका खिलावनी
सुहावनी हे...............
रुनझुन चरन पैजनी बाजत, बाल केलि जन तरसावनी
सुहावनी है...............
घुटुरुन चलनि चपल चख चितवनि, मुनि मन चितहिं चुरावनी
सुहावनी हे.............
किलकनि नटनि तोतरी बोलनी "गिरिधर" मन ललचावनी
सुहावनी हे...........

पिलाता अहो भक्ति प्याला सुधा भर।
अरे चक्रवर्ती के नयनों के तारे
तनिक मुस्करा कौसिला के दुलारे ॥
तुम्हें देखने को तरसता युगों से।
सजाये पलक पाँवडे दास "गिरिधर"

(४८)

चमके-चपला सी दुइ दुइ विशद दतिया,
राघव आनन पे ललचाये मतिया ॥
नयन रतनारे अधर अरुणारे,
लटके कपोल ऊपर केश गभुआरे
बारी-बारी अलके भँवर पतिया ॥ हो राघव ॥
भाल तिलक कल गाल डिठौना।
किलकि गहन चह ललित खिलौना।
मोहे मनवाँ के तोतर मधुर बतिया ॥ हो राघव ॥
लघु लघु कर अँगुरि अति भावे।
किलकनि चितवनि नित तरसावे।
कंठ कठुला हिये मैं हार लसे मोतिया ॥ हो राघव ॥
पीत झिंगुली तन धूरि बिराजे।
रुनझुन चरन पैजनी बाजे।
लाजे वारिद तमाल श्याम तन दुतिया ॥ हो राघव ॥
सानुज अजिर घुटुरुअन धावत।
पूप दिखाइ शिशुन ललचावत।
देखि "गिरिधर" की सुख से जुड़ानी छतिया। हो राघव ॥

(४९)

मन करु राम शिशु को ध्यान।
सगुण ब्रह्म दयालु मृदुचित, परम पुरुष पुरान ॥
विशद दशरथ अजिर बिहरत, अनुज सहित सुजान।
ठुमुकि ठुमुकि परात विहँसत, सुनत नूपुर तान।
धूरि- धूसर गात श्यामल नवल जलद समान।

विविध भूषण लसित शिशु रवि सरिस कटि परिधान ॥
अरुण सरसिज चरण नखमणि, मनहुँ सुधा निधान ।
छोड़ि नभ बैठे कमल पर, करत रघुपति ध्यान ॥
जानु करतें चलत किलकत, मधुर बचन कलान ।
मातु पहिं आवत प्रमोदित, भाव बस भगवान ॥
आँचरन करि ओट जननि, कराव मृदु पय पान ।
मनहुँ नभ आशा निशेषहिं, मेलि बिसरि अवान ॥
कहत तोतर बचन सुन्दर, सुधा सींचत प्रान ।
सुमिरि छवि "गिरिधर" मुदित मन, करत प्रभु गुन गान ॥

(५०)

जब राम शिशु मन में रमा, तब सर्वदेव बहार है ।
किससे लगाऊँ दिल को जब, दिल से मिला दिलदार है ।
जब आ गई मस्ती अनुपम नील नीरद श्याम की ।
जब भा गई झाँकी दृगों को, राम मंगल धाम की ।
जाये कहाँ मन अब अहो, वीरान में गुलजार है ॥
जब नील नीरज श्याम तन, आनन्द सच्चित प्रेम घन ।
कन्दर्प शत शोभा सदन, कटि तट लसित पीला बसन ।
मानस भवन में बस रहा, वह बाल रूप उदार है ॥
हँसता किलकता थिरकता, रुनझुन मधुर नूपुर मुखर ।
घुटनों से चलता धूलि-धूसर, वह नृपति बालक सुघर ।
इस माधुरी पर आज यह, जन सर्वथा बलिहार है ॥
लटकें कपोलों पर कुटिल, मेचक मधुर मञ्जुल लटें ।
मानो कमल के कोष ऊपर, मत्त हो अलिगन नटें ।
मन तोतले बचनों से हरता, कोसलेन्द्र कुमार है ।
जब आ गया साकार तो फिर रह गया संसार क्या ।
सरकार के आगे अभी है वृत्ति जगदाकार क्या ।
"गिरिधर" मगन सुखसार में अब ढ़ह गया भवभार है ॥

(५१)

तुम्हें देखकर कौसिला के दुलारे, मेरा मन कहीं अब तो लगता नहीं है।
तुम्हें पाके दशरथ के प्राणों से प्यारे मेरा मन कहीं अब तो भगता नहीं है ।।
जभी से निहारे बदन विधु तुम्हारा ।
ये भूला जगत का भी सम्बन्ध सारा ।
दिवाना बना दिव्य मस्ती में राघव, मेरा मन कहीं अब तो पगता नहीं है ।
तुम्हारी सुछवि माधुरी में ही खोया ।
सरस कल्पना तल्प पर है ये सोया ।
जगाये इसे चाहे कितनी तमन्ना, मेरा मन कहीं अब तो जगता नहीं है।
अजब है चढ़ा श्याम का रंग मुझपे ।
न कोई भी होगा सकल सङ्ग मुझपे ।
न "गिरिधर" को छेड़ो ओ संसारवालों, मेरा मन कहीं अब तो रँगता नहीं है।

(५२)

मेरे ललना को नजरियो न लागे ।
कोटि मनोज लुभावन सुन्दर
आनन निन्दत शरद सुधाकर,
चितवनि चितवत भव भय भागे ।।
खञ्जन नयन मधुर कजरारे,
मुसकनि निहारि अलि प्रीति उर जागे ।।
किलकत राघव घुटरुन धावत,
चुटुकि दै दै गुरु जी बुलावत,
नृपति निरखि छवि रहे अनुरागे ।।
लावहु री अलि गाल डिठौना,
मुनि मन मोहना कौसिला जू छौना,
"गिरिधर" शिशु सुषमा रस पागे ।।

(५३)

आपन नाता निभावा ललन हमरिक ओरि आवा ।
सुन्दर अरुण सरोज वदन पर,
कुटिल अलक बिखरावा ।। ललन हमरिक ।।
पूजा जप तप किछु नहीं जानत,

हमका जिंन बिसरावा ।। ललन हमरिक ।।
लरिकाई कै बानी कृपानिधि,
एक बेरिया देखरावा ।। ललन हमरिक ।।
ठुमुकि-ठुमुकि प्रभु चलिकै बकइयाँ,
चुटुकि चटक बजावा ।। ललन हमरिक ।।
हे दशरथ के राज दुलारे,
अब न बहुत तरसावा ।। ललन हमरिक ।।
"गिरिधर" के दोऊ नैन चकोरन,
रूप पीयूष पियावा ।। ललन हमरिक ।।

(५४)

जबसि निहरली हे सखि कौसिला ललनवा,
लुभाई गयली, घर द्वार अँगनवा भुलाई गयली ।।
कुटिल अलकिया लटकै मुखवा पे सजनी,
कमल पे छाई जैसे काली- काली रजनी,
शरद जुन्हैया जैसिन ललित बदनवा,
हे लुभाइ गइली लखि के खञ्जन नयनवा ।। भुलाई ।।
अरुण पल्लव जैसे होंठ अरुणारे,
झलकेला कुण्डल कपोल वारे वारे,
चमकेला गलवा पे दुइ-दुइ डिठौनवा,
हे लुभाई गइली लखि दाडिम दशनवा ।। भुलाई ।।
साँवरे शरीर पर पियरी झिंगुरिया,
मनवाँ के मोहे सखि सिर पर धूरिया,
खेलत अंगनवा में लाल घुटुरुनवा,
हे लुभाई गइली लखि मन्द मुसुकनवाँ ।। भुलाई ।।
निंदिया न आवे सखि भुखिया न लागे,
"गिरिधर" प्रभु पर दृग अनुरागे,
बार-बार आवे उर छगन मगनवा,
हे लुभाई गयिली लखि कौसिला के छुनवा ।। भुलाई ।।

(५५)

माई री मैंने देखे बाल अमोल।
नील तमाल बंदन सुन्दर बपु, राम रतन अनमोल।
अरुण अधर विधु बदन मनोहर, कज्जल कलित कपोल।
कुञ्चित कच मकराकृत कुण्डल, मधुर तोतले बोल।।
हँसि-हँसि ललन झुलावति रानी, भाव रचित हिण्डोल।
"रामभद्र दासहिं" हँसि हेरत, जलज विलोचन लोल।।

(५६)

आज राघव जू की सुषमा निहारो हे सखि।।
नवल जलद देह सोहे चारु धूरिया,
झीनी-झीनी झलकत पियरी झिगुरिया,
मुसुकानि लखि मन बारो हे सखि।। आज।।
मदन कमान जैसी भाल पे तिलकिया,
भँवरा के पाँति जैसी ललित अलकिया,
सोहे खञ्जन नयन कजरारे हे सखि।। आज।।
चिक्कन कपोल लसे कमल बदनवाँ,
श्रवन कुण्डल राजै शोभा के सदनवाँ,
लाल ओंठ देखि निमिष निवारो हे सखि।। आज।।
घुटुरुन चलें राम नृपति अँगनवाँ,
मुनि मन मोहे सखि कौसिला ललनवाँ,
तोतर बयन सुनि सुरति बिसारो हे सखि।। आज।।
आँखि भर जोहि लेहु अवध गुजरिया,
"गिरिधर" प्रभु को लगाओ न नजरिया
मन मन्दिर में आरति उतारो हे सखि।। आज।।

(५७)

या मुखकञ्ज की मुसकानि।
कहि न आवति निरखतहि सुख,
सखि सिथिल भइ बानि।।
किधौं सादर विधु परोसत, सुधा किरन निसानि।

किधौं मनसिज रस बरस अलि, कमल सम्पुट आनि ।।
लटक कुंचित कुटिल कच मुख, लखत छवि हुलसानि ।
दसन द्वै-द्वै दमक दामिनि जलद पर रससानि ।।
गोद लै लै शिशु दुलारनि मुदित दशरथ रानि ।
दास "गिरिधर" हिय हुलसति राम की लरिकानि ।।

(५८)

सराहौं सखि कौसल्या को भाग ।
नील तमाल बरन तन सुन्दर,
कुंचित कच दिनकर कुल दिनकर,
बन्यो आज नर तन शुभ शिशुर ।। सराहौं ।।
जोगी जती जेहि ध्यान न पावैं,
शुक सनकादि समाधि लगावै,
घुटुरुन सोइ प्रभु किलकन धावैं,
धरन चपल चलकाग ।। सराहौं ।।
कुटिल अलक विधु मुख पर झलकत,
निरख खिलौना लालन किलकत,
यह झाँकी लखि मन अति ललकत,
"गिरिधर" उर अनुराग ।। सराहौं ।।

(५९)

अब तो राघव को आँचल छिपाइयो
नजर इन्हें लग जायेगी ।।
नील तमाल सरोज मनोहर,
साँवर कुँवर सखी सुषमाकर,
इनको नयनों के शर से बचाइयो ।। नजर इन्हें ।।
चंचल भये अधिक तेरे बारे,
थिर न रहत ये राजदुलारे,
इनको लरिकन के संग से बचइयो ।। नजर इन्हें ।।
खेलत कबहुँ सरजू तट जाई,
नटखट काहू सकुचत नाहीं

इनसे छुप-छुप के नयना लडइयो ।। नजर इन्हें ।।
मान विनय हित जानी सयानी,
पलक नयन जिमि राखउ रानी
इनको "गिरिधर" के दृग में चुरइयो ।। नजर इन्हें ।।

(६०)

भूलत नाहीं मधुर मुसुकनियाँ ।।
प्रभु जू की तोतरि बचनियाँ ना,
सुन्दर नील तमाल बरन तन,
तिरछी चपल चितवनियाँ ना ।। भूलत ।।
कुटिल अलक विधु मुख पर लटकति,
मुनि मन हरनि हँसनियाँ ना ।
राजत श्रवन मकर सम कुण्डल,
दाड़िम दसन दामिनियाँ ना ।। भूलत ।।
उमगि उमगि चूमति उर लावति,
दसरथ राज भामिनियाँ ना ।
अरुन अधर बिम्बाफल सुन्दर
निरखति अवध सजनियाँ ना ।। भूलत ।।
पीत झिंगुलिया झिलमिल झलकै,
पाँय बजति पयजनियाँ ना ।
काह कहुँ सखि कहि न आवत,
भई सम दिवस रजनियाँ ना ।। भूलत ।।
"गिरिधर" प्रभुहि बिलोकहु एकटक
मुदित कौसिला रनियाँ ना । भूलत ।।

(६१)

राघव जू की लसत मृदु मुसुकानि ।
मनहु हिमकर गिरन सींचत,
दमक दामिनि दसन दाड़िम, निरखि बिसरि अपानि ।
मनहु बिम्बा उपरि खेलत, इन्दु कर तजि कानि ।।
उनहिं कंज कपोल चूमत, भृकुटि सुषमा सानि ।

मनहुँ खञ्जन बिहँसि मानत, मदन धनु सनमानि ॥
जनम को लह लाभ चितवत सकल दशरथ रानि ।
लेत भरि-भरि अंक प्रमुदित चूमि सारङ्ग पानि ॥
बदन ललकत अलक तिलक सुबोलि तोतरि बानि ।
सुमिरि "गिरिधर" चित्त चोरावत, राम शिशु किलकानी ॥

(६२)

प्यारे राघव मधुर मुसुका दे जरा ।
चारु चितवन छबीली निराली तेरी,
देखकर भाव बस होता है निश्चय मेरा ।
चंचल नयनों की जादू चला दे जरा ॥ प्यारे ॥
गोल सुकपोल पर चारु लटकें लटे ।
मानो पंकज पे सिहरे मधुप वृन्द हैं
दिव्य दर्शन की झाँकी दिखा दे जरा ॥ प्यारे ॥
देखकर के खिलौने मचलता तनिक
खिल खिलाता हुआ ये छबीला कुँअर
दास "गिरिधर" का भवभय मिटा दे जरा ॥ प्यारे ॥

(६३)

झाँकी झाँकि अघात नहीं निशिवासर मन मोर ।
राम चन्द्र चन्द्रा भयो गिरिधर भयो चकोर ॥
मेरे मन को भाये रामलला ॥
मानत अनत न प्रतीत मोर मन,
जग का सब निज नेह टला,
मेरे चित्त को चुराये रामलला ॥ मेरे ॥
कुटिल अलक बर तिलक भाल पर,
काजल नयन सकेलि कला,
सखि, सहज सुहाये रामलला ॥ मेरे ॥
अस मन कहत दिवस निशि यहिं बसि,
ललित ललन को निहारूँ हला,
मेरे नयन लुभाये रामलला ॥ मेरे ॥

अ॰ ाल मँह शिशु राखु कौसिला,
जनि कोउ देई दृग टोना चला,
"गिरिधर" हिय आये रामलला ।। मेरे ।।

(६४)

देखु सखि राम शिशु तनु धूरि ।
सुभग श्यामल अंग राजति, लख जननि तृण तूरि ।।
शिशु सुभाय उठाय डारत, रेनु कर निज अंग ।
रवि सुता जनु धरत सादर, गंगधार उछंग ।।
धूरि मंडित सहज सोहत, बाल भूषण भूरि ।
मनहुँ अतिशी कुसुम बिलसत, सुभग उडुगन पूरि ।।
नि खि यह छबि मनही नाचत अमित मन मति भूरि ।
जियउ दशरथ बाल छबि "गिरिधर" सजीवन मूरि ।।

(६५)

अनुपम ज्योति जली ।
नील शिखर पर कोटि किरण रवि सुषमा लसति भली ।
मरकत मनि मनो साधन फल, मन तप कंज कली ।। अनु० ।।
कौसल्या को मनो सुकृत फल, चितवत फलक अली ।। अनु० ।।
"रामभद्र दासहिं" अति आनन्द, भई पर भनिति भली ।। अनु० ।।

(६६)

आजु सखि राम की अनुहारी ।
उमड़ि आये मेघनभ मँह, ढ़रत भरि- भरि वारी ।।
लसत धनु सम चारू सुर धनु सुछबि देख बिचारी,
चमके चपला सरिस जानकी, लखहुँ निमिष निवारी ।।
श्यामता चहुँ ओर बिलसति, चितई तन मन वारी,
नटत मंजु मयूर हरिजन, मनहुँ हरिहिं निहारी ।।
बिपिन बास बिचारि बिलपति लखन की महतारी,
चित्रकूट विशाल नभ मँह आजु लसे धनुधारी ।।
अकनि सावन मेघ धुनि भई, बिकल दशरथ नारी,
"दास गिरिधर" मुरछि परि मँहि, देह दशा बिसारी ।।

(६७)

राम ललना मेरे राम ललना, मेरे आँगन में खेल रहे राम ललना ।
अँजुरी अंजोरि किलकोरि धूरि भरके,
पूरन अँजोरिया बदरिया पे करके,
उतरयो अटा से मानो कुन्द के बना ।। मेरे अँगना ।।
अँजन निरंजन के लोचन विराजे,
अलकें बिलोकि कोटि मधुप वृन्द लाजे,
आनन शशांक ऊपर लसे दशना ।। मेरे अँगना ।।
चुटकी बजाय लाल जननी नचावैं,
राघव निहार राजा लोचन जुडावैं,
मुनि मन के मोहे तोतरि बोलना ।। मेरे अँगना ।।
सांवरे शरीर लसे पियरि झिंगुरिया,
बदरा के बीच जैसे चमकै बिजुरिया,
कंठ लसे कठुला औ कर कंगना ।। मेरे अँगना ।।
घुटूरुन चलत लाल मन्द-मन्द किलकैं,
पकरैं खिलौना चपरि पानि ललकैं,
ठुमुक, ठुमुक ठमके घुटन चलना ।। मेरे अँगना ।।
दशरथ दुलारे कौसल्या जू के बारे,
देख सखि "गिरिधर" के लोचन के तारे,
इनको झुलाओ पलक पलना ।। मेरे अँगना ।।

जय जय राघव ललित शिशु नख सिख रूप उदार ।
जय "गिरिधर" के प्राणधन जय मुन्ना सरकार ।।

(६८)

भालो म्हाने लागो रघुवीर मोरी सजनी ।।
नील तमाल बरन तन सुन्दर,
हरण सकल भवभीर मोरी सजनी ।। भालो ।।
कनक किरीट लसत दिनकर सम,
कुण्डल झलकत हीर, मोरी सजनी ।। भालो ।।
अरुण अधर खञ्जन जुग लोचन,

नासा लाजै लखि कीर, मोरी सजनी ।। भालो ।।
पीत बसन तरकस कटि शोभित,
कर कमलनि धनु तीर, मोरी सजनी ।। भालो ।।
"गिरिधर" चकित चितइ यह झाँकी,
उर उठे भाव गंभीर, मोरी सजनी ।। भालो ।।

(६९)

आजु सखि देखि अद्‌भुत झाँकी,
कोसल सुता गोद आँचर बिच, राघव की छबि बाँकी ।।
थन पय पियत दाहिनी रस बसं बाम अँगुरिअन ढाँकी,
कनक कलश पर अरुण कमल जल खेलत करत चलाकी ।।
लित अलक लटकति विधुमुख पर, मुक्त माल सुषमा की,
छबि बरनत मानो नील शिखर पर रुचिर धार गंगाकी ।।
कछु बतरात अधर पय छलकत बिरचि विरंचि कला की,
"गिरिधर" उर हुलसत नित बिलसत बिहँसनि रामलला की ।।

(७०)

आज मोहे भूल्यो सकल संसार, ललन जू की पियरी झिगुरी निहार ।।
क्या जटित जगमगत ज्योती,
मणि रतन मनोहर मोती,
रच्यों मानहु मंजु मदन सुतहार ।। ललनजू की ।।
नव जलद शरीर सुहाये,
तापे झिगुरी जननि पहिराये,
मानो त्रिभुवन सुषमा सरस श्रृंगार ।। ललनजू की ।।
तन झिलमिल झिगुली झलके
जैसे मेघ पे बिजली ललके
छाजे छबि की नख-शिख मधुर फुहार ।। ललनजू की ।।
लख मोर मुदित मन नाचे,
शिशु राघव रूप पे राचे
पायो "गिरिधर" लोचन नाम अपार ।। ललनजू की ।।

(७१)

दोहाः-शोभा दशरथ अजिर की, को कवि बरनै पार ।
जहँ खेलत शिशु रूप हरि, नख सिख किये श्रृंगार ॥

छबि देखो री सखि, देखो- देखो री सखि नृप ऑंगन की ॥
अनुज सहित जहाँ लसत जगतपति, छबि निदरत शत-शत घन की ॥
कुटिल अलक लटकनि मुख ऊपर, सुषमा हरति मधुकर गन की ।
ललित तिलक लसे मदन विशिख जनु, झलकन कुण्डल कानन की ॥
कजरारे नयन दशन द्युति दामिनि, सुरति करहु मृदु मुसुकान की ॥
घुटुरुन चलनि तोतरी बोलनि, नटनि अरनि कल किलकान की ॥
रोवनि धोवनि अनखानि अँचर गहि, चन्द खिलौना माँगन की ॥
"गिरिधर" निरखि निहाल नयन भरि, झाँकी कौसल्याजू के लालन की ॥

(७२)

आज राघव की कैसी झाँकी बनी,
देखि जिसको लजाये सुनीलममणि ॥
बारे-बारे गभुआरे केश कारे- कारे,
लटके बदन पे मधुप मतवारे,
मानो सोहे सुधाकर पे मंजुल फनी ॥
कानों पे कुण्डल कपोलों को चूमे,
पाटल पे मानो मदन मनि झूमे,
लाल होठों से छलके सरोरुह अनी ॥
मन्द-मन्द मुसुकान तिरोछी- सी भौंहें,
तिलकन सुहावन औ चितवन लजौहें,
देख वारे करोड़ो रति के धनी ॥
घुटनों से चलके निकट जब आवें
"गिरीधर" के मन को तनिक ललचावें
जोहे हिय के सरस भक्ति सुषमा बनी ॥

(७३)

राघव लाला तुझे देखने को मेरे नैना तलपते अभी हैं ।।
लोल लोचन की चितवन यो बाँकी,
बस गयी मेरे दृग में ये झाँकी,
मानते हैं नहीं मेरा कहना, नित्य आँसू बरसते अभी हैं ।।
केश घुघराले वे काले- काले
इनपे जादू गजब आके डाले,
कैसे समझावुँ भले लोग कहते, इन बाबलों को मेरे नैना तरसते अभी हैं ।।
बन्द इनको भले लोग कहते
किन्तु इनमें सदा आप रहते
दास "गिरिधर" को अब ना सताओ, मेरे नैना ललचते अभी हैं ।।

★

सोहत कर शर धनुष धरे ।
अनुज सखन्ह संग श्याम राम शिशु सरजू तीर खरे ।
परमानन्द पयोद मनोहर अम्बर जनु उमरे
इन्द्रधनुष धरि बारि वृष्टि करि त्रिभुवन ताप हरे ।
बाल दिवाकर किरन पुंज मानो पट महँ बास करे
अंग-अंग मानो नील नीड तें अमित मदन निसरे ।
खेलत खेल विविध बालन मिलि देह गेह बिसरे ।
"'रामभद्र" आचारज चितवत चकित प्रमोदभरे ।।

●

★ श्री राम लीला-माधुरी ★

"बधाई गीत"

आज खुले अवध के भाग, बधाई बाज रही ।
आज मुदित सकल नर-नारि, बधाई बाज रही ।।
व्यापक ब्रह्म निरीह निरंजन ।
प्रगटे ब्रह्म सगुन दृग अंजन ।
हरण सकल महिभार, बधाई बाज रही ।।१।।
मंगल गान जुबति सब गावत ।
मागध बंदी बिरद सुनावत ।
द्विज करत वेद उच्चार, बधाई बाज रही ।।
नभ अरू नगर दुन्दुभी बाजत ।
बरसत सुमन बिबुध सब राजत ।
जय कोसलेन्द्र सरकार, बधाई बाज रही ।।
धन्य धन्य कौसिल्या रानी ।
जहँ प्रगेट प्रभु सारंग पानी ।
बने बालक अति सुकुमार , बधाई बाज रही ।।
गावत गीत नटी नट नाचत ।
"गिरिधर" राम भगति बर याचत ।
करि आरति भरि-भरि थार, बधाई बाज रही ।।

(२)

छाया मंगल अवधपुर में घर-घर, राम राजीव लोचन पधारे ।।
प्यारे प्राणों से भावुक जनों के लाड़ले लोक लोचन के तारे ।।
चैत्र की शुक्ल नवमी सुहावन ।
मध्य मंगल दिवस लोक भावन ।
काल पावन ललित बाल लीला, भूमि कोसलपुरी को बिचारें ।।
थाल पुष्पों के मही ने सजाये ।
दीप मणियों के सादर जलाये ।
यक्ष गन्धर्व सुर साधकों ने, पाँवड़े हैं पलक के सँवारें ।।

बाजे बाजे बिराजे गगन में।
हर्ष का सिन्धु दशरथ के मन में।
छाइ पुलकावली आज तन में चल पडे आँसुओं के फुहारे ॥
बेद बंदी ऋचा पाठ करते।
देव आनंद में हैं लहरते।
मोद के आज नीरद उमड़ते, देख बालक चतुर बारे बारे ॥
आज कृत कृत्य चौदह भुवन है।
सर्व सुख रूप दशरथ सुवन है।
कौसिला गोद में कल किलकते, दास, "गिरिधर" के जीवन सहारे ॥

(३)

मंगल है कोसलपुर घर-घर आनन्द अवध में छाया है।
जग का जो सिरजनहार वही प्रगटा शिशु रूप सुहाया है ॥
है प्रकृति रँगी आनन्द रंग में, छायी पुलकावलि अँग अँग में।
अभिनन्दन हित रघुननन्दन के, भूतल पर नन्दन आया है।
सरयू की तरल तरंगों में जन-जन की मधुर उमंगों में।
है थिरक रही आनन्द सुधा नव जीवन, जग ने पाया है ॥
कुसुमित हैं सारे वन उपवन आमोद मग्न है सबका मन।
नीरांजन हित मञ्जुल मणिगन, पृथ्वी ने थाल सजाया है ॥
"गिरिधर" के नवजीवन धन को, निर्गुन सत,
चित आनन्द घन को।
व्यापक अविकार निरञ्जन को कौसल्या ने प्रगटाया है ॥

(४)

पूत जायो कौसल्या माई बधाई बाज रही।
व्यापक ब्रह्म निरीह निरंजन अवध प्रगट भयो आज,
बधाई बाज रही ॥
नील तमाल जलद तनु सुन्दर।
लखि शत काम लजाई........ बधाई बाज रही ॥

चारिहु सुवन एक दिन प्रगटे ।
आनन्द अवध अघाई......... बधाई बाज रही ।।
बरसी सुवन सुरजन गुण गाई ।
बजन सुवन शहनाई .... बधाई बाज रही ।।
हरष बिवश रनिवास सहित नृप ।
हय गय रतन लुटाई ....बधाई बाज रही ।।
"रामभद्रदासहुँ" हरषित हिय,
लोचन के फल पाई ....बधाई बाज रही ।।

(५)

बधाई आज बहुविधि बाज रही ।।
आज प्रगट भये जगत के स्वामी, दशरथ के गृह अन्तर्यामी,
सरयू लहर लसित कोसल अति, पल- पल राज रही ।।
कोउ नाचत कोउ मंगल गावत,
कोउ लखि ललन नयन फल पावत,
पुरतिय रानी रतन लुटावत, सुषुमा भ्राज रही ।।
सजि सजि साज चलीं सब नारी,
अवधपुरी की भामिनी सारी,
गावत गलिन भीड़ भइ भारी, मंगल साज रही ।।
कौसल्या की कोख जुड़ानी,
गावति मंगल सकल सयानी,
आनन्द उमगि-उमगि अति रानी रति लखि लाज रही ।।
राम जनम कर उत्सव साजत,
तोरण केतु पताका राजत,
"गिरिधर" बिविध बाजने बाजत, पुरी बिराज रही ।।

(६)

अलि मुदित बधाई गाइये ।
सुत सुपुनीत कौसिला प्रगटयो, निरखि नयन फल पाईयो ।।
ललन बिलोकि गोद लै लालति, हरषि- हरषि हलराईये ।।

दिशि अरु विदिशि आनन्द उमगत मंगल कलश सजाईये ॥
कौसल्या की कोख सफल भई, बाजत विविध बजाईये ॥
चैत चारु नवमी दिन मंगल मंगल मोद मनाईये ॥
तोरण केतु कलश ध्वज साजहुँ, मोतियन चौक पुराईये ॥
राम जनम कोसलपुर शोभा, सरयू हरषि नहाईये ॥
"गिरिधर" प्रभु की जनम बधाई, तन मन सकल लुटाईये ॥

(७)

बाजत अवध बधैया बधैया रामजी प्रकट भये ।
गावत किन्नर गीत मनोहर ।
बरसे सुर बरसैया, बधैया रामजी प्रकट भये ॥
बाजत झाँझ मृदंग दुन्दुभी ।
संग बजत शहनैया, बधैया रामजी प्रकट भये ।
राजा दशरथ रतन लुटावे ।
रानि लुटावे मनि गैया, बधैया रामजी प्रगट भये ।
लै लै गोद ब्रह्म शिशु लालनि ।
नाचै अवध लुगैया, बधैया रामजी प्रगट भये ॥
"रामभद्रदासहि" अति आनन्द ।
देहु भगति रघुरैया, बधैया रामजी प्रगट भये ॥

(८)

सखी गाओ बधाई गान, नृप घर राम भये ।
चैत शुक्ल नवमी तिथि कोमल,
दशरथ सुकृत सुधाकर निर्मल ।
भानुवंश को भान .... नृप घर राम भये ॥
नाचत मुदित अवधपुर नगरी
बिसरत सकल अपान ....नृप घर राम भये ॥
बरसहिं सुमन विबुध नन्दन को,
नभ पुर मोद समान ....नृप घर राम भये ॥
"गिरिधर हुलसि बधाई गावत,
दीजै भगति को दान..............नृप घर राम भये ॥

(९)

रँगीले राम लालन की बधाई हो बधाई हो ।।

सुखद मधुमास यह आया ।
प्रकृति ने मोद सुख पाया ।

मुदित हो संत ने गाया, बधाई हो बधाई हो ।।
रसीले राम लालन की, बधाई हो बधाई हो ।।

भुवन मोहन कमल लोचन ।
सुजन के घोर भय मोचन ।

लसे बर भाल गोरोचन, बधाई हो बधाई हो ।
छबिले राम लालन की बधाई हो बधाई हो ।।

रुचिर है श्याम तन सुन्दर ।
विलसता नयन में काजल ।

सकल शोभा सगुण सागर, बधाई हो बधाई हो ।।
सुरीले राम लालन की बधाई हो बधाई हो ।।

जिओ चिरकाल हे प्यारे ।
सदा"गिरिधर" के जगतारे ।

सुखी दशरथ सुवन बारे ....बधाई हो बधाई हो ।
हठीले राम लालन की बधाई हो बधाई हो.... .....।।

(१०)

देखो-देखो कौसिला जू के भाग, ब्रह्म आज लाला बने ।।

गोद दुलारति मंगल मूरति ।
प्रेम पुलकि लोचन जलपूरति ।

हिय उमगति नव अनुराग,.......ब्रह्म आज लाला बने ।।

झुकि-झुकि झाँकि झाँकि मुख चूमति ।
निरखि-निरखि शिशु प्रमुदित झूमति ।

मानो बहि चल्यो प्रेम तड़ाग.....ब्रह्म आज लाला बने ।।

आँचल महँ सुत सुभग चुरावति ।
थन पय सहित हुलास पियावति ।

आज सुफल भये जप जाग ......ब्रह्म आज लाला बने ।।

श्याम शरीर भूसन झलमलत ।
सुरसरि जमुन मिलन आये जनु ।
भयो "गिरिधर" हिय आज प्रयाग ....बह्म आज लाला बने ॥

(११)

आज मंगल बाजे बजाओ राघव मेरे घर आये ॥
जनम-जनम की आस हमारी,
आये शिशु बनके असुरारी,
आज मंगल थाल सजाओ ॥ राघव मेरे .... ॥
धन्य धन्य हैं भाग हमारे,
परमेश्वर मेरे गृह पग धारे,
आज कंचन थार भराओ ॥ राघव मेरे ... ॥
मोति रतन गंज बाजी लुटाऊँ,
पलक के पावड़े पे ललन झुलाऊँ,
आज सब मिलि मंगल गाओ ॥ राघव मेरे ... ॥
कौसिला जू के ललन कहाये,
"रामभद्र दासहिं" मन भाये,
आज द्विजगण वेद सुनाओ ॥ राघव मेरे ... ॥
आज घर-घर खुसियाँ मनाओ ॥राघव मेरे ... ॥

(१२)

रंगीले राम लाला की बधाई है बधाई है,
सुहानी चैत की नौमि, सुखद मधुमास है आया,
छबीले रामलाला की बधाई है, बधाँई है ॥
गजब की साँवली सूरत लजाती कोटि कामों को,
रसीले रामलाला की बधाई है बधाई है ॥
मुदित हैं आज कौसल्या अवध सुख सिन्धु में उमगा,
सुशीले रामलाला की, बधाई है बधाई है ॥
सुमन सुरवृन्द हैं बरसे नृपति दशरथ हृदय हरषे ,
लुभीले रामलाला की बधाई है बधाई है ॥
लुटाते मोतियाँ राजा, कनक मणि धेनु सब रानी,

रंगीले रामलाला की बधाई है बधाई है ॥
मुदित मन नाचते मुनिवर, बधाई गा रहे "गिरिधर"
लाड़िले राम लाला की बधाई है बधाई है ॥

(१३)

बाजत अवध बधाई हो, आज राघव प्रकट भये।
कौसल्या की कोख सुफल भई, दरशथ भाग्य बढ़ाई हो ॥
बाजत नभ दुन्दुभी विविध विधि,बरसे सुमन सुरसाई हो ॥
गावत चली थार भरि मंगल, नाचत नगर लुगाई हो ॥
वेद मंत्र बन्दी विरुदावली, आगर अबीर उड़ाइ हो ॥
महल महल मँह चहल पहल है, आनन्द अवध अधिकाई हो ॥
कौसल्यादिक मनिगन बारहिं, भूपति धेनु लुटाई हो ॥
"गिरिधर" मुदित बधाई गावत, भगति नेग मँह पाई हो ॥

(१४)

आज मंगल बाजे बजाओ, राघव मेरे घर आये,
आज तोरण द्वार सजाओ, राघव मेरे घर आये,
जनम-जनम की आस हमारी,
पुरइ कृपा करिके असुरारी,
आज मोतियन चौक पुराओ......राघव मेरे ... ॥
लालन को विधु वदन निहारूँ,
तनय चूमि दिन रात दुलारूँ,
आज जीवन सफल बनाओ...,राघव मेरे .... ॥
पलकन को पालना बनाऊँ,
अपनो ललन दिन-रैन झुलाउँ,
आज सब मिल मंगल गाओ,.....राघव मेरे ... ॥
रानि कौसल्या जू की कोख जुड़ानी,
सफल करत"गिरिधर" निज बानी,
आज लालन निरख सुख पाओ......राघव मेरे ...॥

(१५)

आज मेरे राघव ने जन्म लिया, मैं तो झूम झूम नाचूँ रे ॥
पूरी हुई मेरे मन की आशा, सफल हुई मंजुल अभिलाषा ॥
रूप रंग राचूँ रे, मैं तो झूम झूम नाचूँ रे ॥
अवध में बाजे आनन्द के बाजे, निर्गुण ब्रह्म सगुण बन आए
मैं भरि भाग बाँचू रे, मैं तो झूम झूम नाचूँ रे ॥
पलकों के मजुल सवारूँ मैं पलना
"गिरिधर" के ईंश जिये सदा मेरे ललना
मैं तो प्रेम भक्ति जाचूँ रे, मैं तो झूम झूम नाचूँ रे ॥

(१६)

बाजत अवध वधैया वधैया रामजी प्रगट भये
रामजी प्रगट राजा रामजी प्रगट भये, वाजत ...
चैत चारु नवमी दिन मंगल
अभिजित नखत सुहैय्या रामजी ...
नाचति प्रमुदित अवध लुगाई
बरसे सुमन सरसैइया वधैया रामजी ...
राजा दशरथ रतन लुटावै
धेनु लुटावै तीनों मईया, वधैया रामजी ...
वाजत झांझ मृदंग ढ़ोल
और बाजत शहनैया वधैया रामजी ...
लै लै गोद ललन हलरावत
जुग जुग जियो चारो भैया, वधैया रामजी ...
"रामभद्र" आचारज मागत
देहु भगति रघुरैया बधैया रामजी ...

●

सोहर गीत

(१७)

मचियै बैठि कौशल्या रानी, पिया से अरज करईं हो।
हो राजा हमरे जो होई है होरिलवा, तो अन धन लुटइबे हो ॥
चैत ही की शुक्ल नवमी, सकल दिन मंगल हो।
लालन टारन भुवन के भार, कौसल्या गृह प्रकटइ हो ॥
छोटी-छोटी सिर पें अलकियाँ, श्रवण कुण्डल छोटो सो हो।
लालन छोटे-छोटे भाल बिराजे, तिलक रेखा छोटी-छोटी हो ॥
छोटे-छोटे कमल कपोल डिठौना सोहे छोटो-छोटो हो।
लालन छोटी-छोटी सोह बर नासा, चिबुक सोहे छोटे-छोटे हो ॥
छोटी-छोटी द्वै द्वै दतुलिया, बिजुलिया जैसन दमकति हो।
लालन छोटे-छोटे अधर सलोने निरख मन मोहत हो।
छोटे- छोटे कठुला गले में लसे छोटी बनमाला सोहे हो।
लालन छोटी सौहैं तनपे झिंगुरिया, निरखि जियरा ललचत हो ॥
छोटे-छोटे बिविध विभूषन जराऊँ जरे छोटे छोटे हो।
लालन छोटी-छोटी कटि पर किंकिनियाँ मधुर रूनझुन बाजत हो ॥
छोटे-छोटे चरन सरोज पेंजनिया सोहे छोटी-छोटी हो।
लालन छोटे-छोटे धूरि विधूसर, किलकि लाला विभूषित हो ॥
छोटे-छोटे ललित खिलौना, पलना ऊपर लटकत हो।
लालन छोटे छोटे पानि सरोजन, किलकी पसारत हो ॥
छोटे-छोटे नृपति कुमार, छबिली छवि छोटी छोटी हो।
लालन छोटे मन आंगना बीच में "गिरिधर" छुपावत हो ॥

(भोजपुरी) सोहर गीत

(१८)

अवध . की कनक अटरिया, चमाचम चमकऽल हो।
रामा सेहि चढ़ि ठाढ़ि कौसल्या रानी चन्दा से बिनय करईं हो ॥
चन्दा मामा आरे आव पारे आव अँगुरी इशारे आव हो।
चन्दा आज आव हमरे आँगनवाँ रमइया मोर खेलि हैं हो।

कवहूँ न पउल्य तू कमलवा, न अखियाँ जुड़ाइल न अखियाँ जुडाइल हो ।।
चन्दा आज देखि मृदु कमलवा, नयन तोर जुड़ाई जइहैं हो ।।
चन्दा मामा आरे आव पारे आव, सरयू किनारे आव हो ।
चन्दा बन जा तू राम के खिलौना, सुजस जग छाई रहे हो।।
सोने के कटोरा भर दुधवा अमिय रस घोरल हो
चन्दा साथे साथे फूँकि फूँकि तोहकें रमइया अमिय मोर पियइ हैं हो
छीर सिन्धु दुध के दहियवा सानल दिव्य ओदन सानल दिय ओदन हो
चन्दा तीनिहिं भाइ केर सँगवा रमइया मोर खियइहैं हो ।।
सरयू के पावन पनियाँ तुम्हहिं अचवइहैं तुम्हहिं अचवइहै हो ।
चन्दा बालक भाइन के संग रमइया मोर खेलइहैं हों ।।
जंगल से हरिनी मँगइहैं औ पोसिके जियइहैं पोसिके जियइहैं हो ।
चन्दा हरिन के छौना के रथिया रमइया मोर बनइहैं हो
राम मोर धनुही चढ़इहैं तो तिरिया चलइहैं हो ।
चन्दा गहने के पिरिया मिटइहैं और राहु के भगइहैं हो ।।
परल्य अकेल तू अकसवा विपत्ति बहु भोगल बिपति बहु भोगल हो ।
चन्दा चारि चारि चाँद मिलि खेलौ अवध सुख सोवहु हो ।
चन्दा मामा मान मोरि बतिया बितावा जनि रतिया वितावा जनि रतिया हो
चन्दा "गिरिधर" हिय असमनवाँ रमइया मिलि बिलसहु हो ।।

(१९)

कनक अजिर बीच बैठि कौसल्या रानी सथवाँ सहेली लिये हो ।
ललना प्रमुदित हृदय कौसल्या रानी राम अन्हवावति हो ।।
रजत मनोहर कुण्डिया भरली जल निर्मल हो ।
ललना केसर रुचिर सुगन्ध गुलाब जल शोधित हो ।।
कुण्डी बिच राजत राघव निरखि मन ललचल हो ।
जैसे चन्दा के बीच बदरा चमाचम चमकइल हे ।।
अंग अंग अँचरनि पोछति बदन अँगोछति हो ।
ललना मलि मलि शिशु नहवावे जनम फल पावति हो ।।
साँवरे सुभग सरिरिया रुचिर पानी उद सोहे हो ।
जैसे नील- कमल पर ओंसिया सकाले झिनि झलकत हो ।।
किलकि -किलकि लाला बिहँसे करनि जल छबकत हो ।

मानो छीर उदधि में अमिय रस चपरि निसारति हो ॥
मेचक कुटिल अलकियाँ चुवत जल सुन्दर हो ।
जैसे काम केर भँवर समूह शशिहि नहवावति हो ॥
गुरुतिय सखियाँ सुवासिन्ह मंगल गावति हो ।
ललना "गिरिधर" एहि निसि गाइ जीवन फल पावत हो ॥

(२०)

जैसेई चिरइ चिरोमनि पखनियाँ अंडा सेवहिं पखनियाँ अंडा सेवहिं हो ॥
वैसेई अँचराँ में राम के चुराई कौसल्या रानी जोगवहिं हो ।
जैसेई गैया आपन बछड़, होंकरि- होंकरि चाटइ हो ।
वैसेई रानी सुमित्रा रघुनाथ के उमगि- उमगि चूमइ हो ॥
जैसेई आँखि पुतरि पलकिया सकुचि नित जोगवहिं हो ।
वैसेई कैकेयी लखन राखि गोद निहोरि- निहोरि चितवइ हो ॥
जैसेई जल मछरी व्याकुल सलिल हित ललकइ हो ।
वैसेई राम निहारि राजा दशरथ ललकि- ललकि देखइ हो ।
चारिउ जन पाइ चारू चन्दा चकोर जैसन निरखइ हो ।
ललना "गिरिधर" गावत सोहर भगिया सराहइ हो ॥

(२१)

नगर के कनिया कुमारी निकरी आजु आवहिं हो ।
बहिनी आजु मोरे राम के बरहिया तिनहुँ घर सोहर हो ॥
पहिरेहँ लहँगा चुनरिया मुदित मंगल साजहु हो ।
बहिनी धर लेहु सीस पे कलसवा हरिदि दूबी हरियर हो ॥
छनन-छनन बाजै लागै छगन कुआरि कन्या नाचइहिं हो ।
बहिनी हँसि- हँसि गावइ लागि सोहर सबै दिन नोहर हो ॥
अति बड़ी भागिनी नाउनी ते नेहछू करावइ हो ।
बहिनी काटै खातिर रामजी के नहवाँ नहरनी लै आवइ हो ।
पहिन कुसुम रंग साड़ी तो मंगल गाँवइ हो ।
बहिनी कौसल्या के लाल के निहारि नयन फल पावै हो ॥
मोतियन थलिया भराय त रतनवा लुटाइहि हो ॥
बहिनी "गिरिधर" प्रभु चित लाई बधाई शुभ गाईय हो

(२२)

श्रीमद् हनुमज्जयन्ती

बधाई-गीत

(१)

बाजति बन में बधैया बधैया, हनुमत् प्रगट भये।
कार्तिक कृष्ण पक्ष दिन मंगल, चौदसी जन सुख दैया।
मेष लगन गृह बार भले सब, स्वाति नखत सुहैया ।।
नाचत संत मुदित मुनि गावत, बाजे मृदंग सहनैया ।।
केशरि मुदित रतन धन वारत पवन सुगंध लहैया ।।
अंजनि ललकि ललन मुख चूमति, आनंद उर न समैया ।।
असगुन लंका सगुन कोसलपुर मंगल बिबुर्ध अथैया ।।
"रामभद्र आचारज" मागत देहु भगति कपिरैया ।।

(२३)

आज घर घर मंगल चार पवन सुत प्रगट भये।
कार्तिक शुभ कृष्ण पक्ष चतुर्दशी मंगल दिवस उदार ।।
कोशलपुरी सजी मन भावनी, मति मय बंदनवार।
बारत बसन मैथिलि माता रामजी लुटावे मोति हार।।
सीता हनुमत सिर कहुँ परसि चिर जियो अंजनि कुमार।
बार हि बार जनम दिन आवे, आज "गिरिधर" मंगल चार ।।

२४)

सखि री आई बसन्ती बहार।
मरमर मञ्जुल नव पल्लव में।
मलय समीरण नव कणकण में।
झूम रहे द्रुम डार ।। सखि री ।।
सरजू की ये लहर निराली।
प्रकृति छटा चहुँ दिसि मतवाली।
मधुर मृदु गुंजार ।। सखि री ।।

निर्झर के कलकल जल सींकर।
परमानन्द उमंग जग भीतर।
घर घर मंगल चार ॥ सखि री ॥
विबुध विमानन नभ पर छाये।
सुरतरु चारू कुसुम बरसाये।
दुन्दुभी जय जयकार ॥ सखि री ॥
अवधपुरी प्रमुदित परिजन।
नाच रहा मृदु "गिरिधर" का मन।
राम लिये अवतार ॥ सखि री ॥

(२५)

सखि री आई बसन्ती बहार ॥
कोकिल कल रसाल पर कूजत,
मधुप मनोज्ञ अनन्दित गुंजत, शतिल बहत बयार ॥
सुर ललना नभ नाचत गावत,
विबुध प्रसन्न सुमन बरसावत, दुन्दुभि जय जय कार ॥
प्रेम मगन कोसलपुर नारी,
हरषहिं जहँ तहँ नर सुखकारी, घर-घर मंगल चार ॥
आइ गयी नौमी मन भावनी,
"रामभद्रदासहिं" ललचावनी, राघव को अवतार ॥

(२६)

मै तो जनम जनम को ढाढ़ी राजन द्वार तेरे आयो ॥
दानि शिरोमणि भगत कलप तरु तेरो सुत ह्वै जायो ॥ राजन ॥
नख सिख निरखि रूप लालन को लाभ नयन को पायो।
गइ सुधि देह नेह लालन की निज सर्वस्व लुटायो ॥ राजन ॥
शिव सनकादि ध्यान नहिं पावत जोग बिरति बिसरायो।
सोइ लियो गोद बिनोद सहित मैं वो मोसन जग जायो ॥ राजन ॥
अब न एकहु साध रही मन दुःख दारिद्र नसायो
"रामभद्रदासहिं" करुना करि शिशु राघव अपनायो ॥ राजन ॥

(२७)

दसरथ रानी जिये सुत तेरो ।।
कोटिक बरस जिये तेरो लालन तिहुँ पुर सुजस घनेरो ।। जिये... ।।
तेज प्रताप बढ़ो लरिकन को सदगुन सुजस बड़ेरो ।। जिये... ।।
जुग जुग अचल विमल विधु कीरति हरे जन मन को अंधेरो ।। जिये....।।
"रामभद्रदासहिं" हँसि बारक नलिन नयन तें हेरो ।। जिये....।।

(२८)

माई री आज देखे अवधपति ललना ।।
भोर कनक मंदिर आंगन महँ,
नृपति झुलावत चलना ।।
नील पीत बैंगनी झालर बिच,
राजत कलवल बोलना ।।
मनहुँ नील नीरद सुख विलसत,
सुरपति धनुष हिंडोलना ।।
कबहुँ मुदित लालन हलरावत,
प्रमुदित दशरथ अंगना ।।
"गिरिधर" वैग बढ़ाई झुलावत
सफल करत निज नयना ।।

(२९)

अस मन होत उठाय लेंउँ कोरवाँ
नील नीरधर श्याम सुभग तनु, शोभा विलोकि नाचल मन मोरवाँ
देखो री प्रभु बदन मनोहर, भये दृग चंदा निरखि ज्यों चकोरवाँ
प्रभुहि निरखि जागत वत्सल रस सुत ज्यों चाहो जगत चित चोरवाँ
लै लै गोद तुमहिं हलराउँ आनन चूमूँ मैं भाव विभोरवा
"गिरिधर" यह अभिलाष उमगि उर पुरववुँ जन के विलोचन कोरवाँ

(३०)

राघव जननि अंक अति सोहत ।
अँचल आवृत अमल उडुप मुख,
किलकि-किलकि कछु कछु मनमोहत ।

नीलतामरस मनहुँ रहस बस,
सुरसरि धार मध्य इमि पोहत ॥१॥
भाल तिलक लसे ललित डिठौना,
बिवस होत चित चितबनि जोहत ।
दुइ-दुइ दशन अधर बिम्बाफल ,
चितइ मनोभव होत मनोहत ॥२॥
घुटुरुन चलनि लरखरनि किलकनि,
परनि अरनि भ्रम भेद बिछोहत ।
"गिरिधर" मति मृगनयनि राम शिशु,
चारु चरित वर हार पिरोहत ॥३॥

(३१)

मेरो राघव को कोई देख न ले ॥
भुवन बिमोहन छगन मगन मेरे,
नील कमल कोई लेख न ले ॥ मेरे राघव ॥
नख सिख सुभग धूलि धूसर तनु,
कोई चतुर अवरेख न ले ॥ मेरे राघव ॥
आँचर आलि छिपाव जतन करि,
कोई रतन ज्यों परेख न ले ॥ मेरे राघव ॥
"गिरिधर" प्रभुहि चुराव हृदय महँ,
तिरीछे नयन से कोई पेख न ले ॥ मेरे राघव ॥

(३२)

जनि कोउ डारो ललन पर टोनवाँ
नील तमाल बरन श्यामल तन, कोटि मनोज निबारों ॥
कुटिल अलक खञ्जन दृग अञ्जन, दशन लसत अति बारो ॥
गोल कपोल डीठौना राजत, मधुर अधर अरुणारो ॥
भूषण बसन लसत तनु ऊपर, मुनि जन मोह निहारो ॥
अवध नगर के देखनहार, आपन नयन सम्हारो ॥
कौसल्या जननि गहरु लगावै, राई लोन उतारो ॥
"गिरिधर" बेगि दुराउ हृदय बिच, दशरथ राज दुलारो ॥

(३३)

कौसिला के गोद, आज सोहे रघुनन्दन लाला ।
रुचिर- रुचिर सोहे मधुर- मधुर सोहे,
नूपुर मुखर कल सोहे, रघुनन्दन लाल ।।१।।
तरुन तमाल तन मनहु रसाल घन,
तड़ित बसन अति सोहे, रघुनन्दन लाला ।।२।।
कुटिल अलक सोहे, ललित तिलक सोहे,
कुटिल कुण्डल श्रुति सोहे, रघुनन्दन लाला ।।३।।
मुनिजन के मोद सोहे, साधक बिनोद सोहे,
"गिरिधर" प्रमोद आज सोहे, रघुनन्दन लाला ।।४।।

(३४)

खिलौना बेचिबे मैं आई ।।
बिबिध भाँति बहुरंग खिलौने, बिबिध जतन करि लाई ।
रचि पचि रतन अनेकन मनि गन, मैं करि जुगति बनाई ।।
मैं बलि जाऊँ लेहु सब रानी, चहहुँ न एकहुँ पाईं ।।
नयनन्ह भरि तब लाल निरखि हौं, इहहि मूल्य सुनु माई ।।
नाम अन्नपूरना हमारो काशी तें मै आई ।
"गिरिधर" राजमहल महँ रहिके, करि हौं तब सेवकाई ।।

(३५)

खिलौना बेचिबे मैं आई ।।
रुचि अनुरूप लला मनभावन, रचि रचि रुचिर बनाई ।
नाना बरन मूल्य बहु सुन्दर ललित सो बरनि न जाई ।।२।।
रिद्धि सिद्धि चातुरी जगत की, बहुबिधि कुसल लगाई ।
रचि पचि बिबिध कला अति मोहनी, करी बहुत निपुनाई ।
लीजै मातु खिलौने सुन्दर मैं काशी से लाई ।
निरखि लाल खेलहीं हो प्रमुदित, निज प्रभुता बिसराई ।।
चकई भौंरा चकडोरी सब, अश्व कीर समुदाई ।
सुभग मयूर घुनघुना रुनझुन, बहुविधि मैं ले आई ।।

फल बिरंचि प्रपंच मेलि मैं, निज कर फलित बनाई ।
रहुँ न बेर लेहु नृपरानी, बार बार बलि जाई ।।
हीं मूल्य न कछु निज लालन, केवल देहु दिखाई ।
"गिरिधर" प्रभु जननी चरनन महँ, रही गौरी लपटाई ।।

(३६)

र लै रघुबर मातु चली ।
र बिलोकि खिलौना सिर लै, लसै हिमशैल लली ।
दु मुसुकात चकात चहुँ दिसि, रवि हित कंज कली ।।
गुलाल अनूप खिलौनन, प्रमुदित चरन मिलि ।
रखि राम माता छवि हरषित, सुर- द्रुम लता खिली ।।
शी तें आई मैं श्रम करी, तव हित अवध गली ।
"गिरिधर" प्रभुहिं दिखाउ मूल्य महँ, गौरी कहती भली ।।

(३७)

रखु सखि राम की शिशु अरन ।
रखि गगन निशेष बिम्बन, ताहि चाहत धरन ।।
विध विधि लालहि बुझावति, कहति नाना बरन ।
क मानत नाहि फेंकत, दूर पट आभरन ।।
रार करि अनखत कुँवर मेरो, अधर में रिस अरुन ।
धकि रोवत शिशु अकारन, कहत तोतर करून ।।
ति गोदहि राखि रघुपति, हँसति दशरथ घरन ।
स "गिरिधर" उर बसति, प्रभुकी ललित लरखरन ।।

भोजपुरी गीत

(३८)

खेलत कौशल्याजी के अंगनवाँ रघुवर घुटुरुनवाँ।
दशरथके गृह रत्नाकर।
प्रकटे प्रभु नीलम सुन्दर।
ब्रह्म बने लोने लघु ललनवाँ, रघुवर घुटुरुनवाँ॥
खंजन लोचन कजरारे।
लटके कच हैं घुघरारे।
पंकज मुख मधुकर के लटकनबाँ, रघुवर घुटुरुनवाँ॥
श्यामल सब अंग सुहावन।
सुन्दर सत काम लजावन।
दाड़िम से दुइ दुइ लघु दसनवाँ, रघुबर घुटुरुनवाँ॥
धुरिया से भरल शरीरिया।
पीलि तनु लसत झिंगुरिया।
ठुमुकि ठुमुकि के चले चारु चरनवाँ, रघुवर घुटुरुनवाँ॥
गलवाँ पर श्याम डिठौना।
ऊपर बहु रंग खिलौना।
देखि प्रभु हँसत किलकनवाँ, रघुवर घुटुरुनवाँ॥
"गिरिधर" के प्राण के प्यारे।
संतन के एक सहारे।
छनमँह न भूले तोतरि बचनवाँ, रघुवर घुटुरुनवाँ॥

(३९)

मुकि ठुमुकि चले घुटुरन अँगनवाँ हे,
सुहावन लागे हे। रानी तोहरा अँगनवाँ ॥
टिल अलक मुख कंज पर लटके हे,
लुभावन लागे हे। रानी श्यामल सलोनवाँ ॥
ञ्जन नयन सोहे कलित कजरवाँ हे,
चुरावन लागे हे। भावुक जिनकर सुमनवाँ ॥
ाल सुविशाल पर सोहति तिलकियाँ है।
छुड़ाबन लागे हे काम धनुही क मनवाँ ॥
मल बदन दमके दुइ दुइ ठो दतुलिया हे।
लजावन लागे हे चारु चपला औघनवाँ ॥
ोल सुकपोल सोहे अरुण अधरवाँ हे।
सुनावन लागे हे लाला तोतरे बचनवाँ ॥
ठ बनमाल अरु पियरी झिंगुलिया हे।
रिझाबन लागे हे कोटि कोटिक मदनवाँ ॥
रिसे विधूसरित श्यामल शरीरिया हे।
मनभावन लागे हे राजा दशदथ अँगनवाँ ॥
रण कमल बाजे रुनझुन पैजनिया हे
खिलावन लागे हे भक्त मानस सुमनवाँ ॥
रखि निरखि रामभद्र की सुरतिया हे।
लुटाबन लागे हे राजा अन्न धन सोनवाँ ॥
लत बिलोकि लघु राघव ललनवाँ हे।
छिपावन लागे हे "गिरिधर" हृदय भवनवाँ ॥

(४०)

शरथ अजिर बिहरत राम।
रि धूसर लसत श्यामल, सकल सुषमा धाम ॥
ग भूषण बसन भूषित, नील जलधर श्याम।
हुँ मरकत शिखर ऊपर, कलित उडुगन दाम ॥
लत मृदुल कपोल लोचन, लोल जन अभिराम।

मनहुँ खंजन युगल शावक, कमल दल कृत धाम ।।
निरखि शिशु शोभा अनूपम, नृपति पूरन काम ।
बसहु "गिरिधर" हिय अजिर महँ, ब्रह्म शिशु श्री राम ।।

(४१)

दशरथ अजिर विहरत राम ।
सखा अनुज समेत खेलत, नील सरसिज श्याम ।।
साँझ समय निहार सजनी, उदित रूप ललाम ।
राम कहि पुनि पुनि बुलाबत, लहति अति बिश्राम ।।
अरुण रवि कर ललित रजकण, लसति भूरि निकाम ।
मनहु मरकत गिरि अरुण खग, हंस लसे छवि धाम ।।
निरखि कागभुसुण्डि किलकत, धाय सुख अभिराम ।
सतत "गिरिधर" हृदय खेलहु, सुभग शिशु श्री राम ।।

(४२)

राघव आजु धूरि महँ खेलत ।।
पद्मराग बिच नीरद जनु, सुषमा सकल सकेलत ।
उमगि उमगि आनंद चपरिकर, रेनु शीश पर मेलत ।।
छगन मगन मन मगन नगन तनु, लगन धूरि इव भ्राजे ।
मनहुँ गगन सुरधुनि तरंग बिच, तरलित अनुपम राजे ।।
कबहुँ बाल कौतुक सिकता ते, रचि बर भवन बनाबत ।
मनहुँ चरन आश्रित भक्तन हित, रचि शुभ सदन सजावत ।।
अनुज सखन पर डारि रजत रज, किलकि किलकि सुख पावत ।
रघुकुल कुमुद चन्द्र झाँकी यह, "गिरिधर" चितहि चुरावत ।।

(४३)

खेलन्ह को जनि जइयो ललन जरा बिलमइयो ।।
नयन चकोरनि बदन सुधाकर ।
छवि रस अमिय पियइयो जननि हिय हरषइयो ।।
छगन मगन अँगना नित बिहरत ।
तोतर बचन सुनइयो, शिशुन्ह जनि बिरझइयो ।।
बाल बिनोद मोद रवि किरननीं ।

आनन्द कमल खिलइयो, सुमन मन सरसइयो ॥
धूरि बिधूसर साँवरी मूरती ।
बारहिं बार दिखइयो, मधुर मुख मुसकइयो ॥
"गिरिधर" हृदय अजिर शिशु राघव ।
ठुमुकि ठुमुकि कल धइयो, अधिक जनि तरसइयो ॥

(४४)

दशरथ गोद राजत राम ।
अरुण तरुण सरोज लोचन, भक्त पूरन काम ॥
ललित लट लटकत कपोल सुलोल अति अभिराम ।
मनहुँ पाटल ऊपर अलिगन, नटत कृत विश्राम ॥
पीत पट श्यामल कलेवर, लसत सुजना राम ।
नील मणि गिरि पर लसत मानो, तड़ित ललित ललाम ॥
हँसत किलकत दसन दुइ दुइ, लसत शोभा धाम ।
मनहुँ अरुण पयोज दल पर, श्वेत कण कृत दाम ॥
शिव बिरंचि सुरेन्द्र शारद जपत जाकर नाम ।
बसहु "गिरिधर" हृदय संतत, सुभग शिशु श्रीराम ॥

(४५)

चलाओ जनि राघव पे सखि टोना ।
अति शिशु मन सम सुभ सुमन मेरे, अमित मदन मनखोना ।
नलिन नयन अंजन अति राजत, भाल तिलक लगि लोना ॥
कुटिल अलक लसे कमल बदनु लखु, मनहुँ नटत अलि छौना ।
चूमत कनक फूल सुकपोलहिं, मरकत मिलि जनु सोना ॥
नील जलज पर लहर जमुन जलु इमि लस गाल डिठौना ।
मधुर मधुर मुसुकानि हरति मन, द्वै द्वै दसन सुभौना ॥
तिरछे नयन जनि लखु मुख पंकज, गड़िहैं सर दृग कोना ।
ठुमुकि ठुमुकि बिहरत रज धूसर "गिरिधर" हृदय लुभौना ॥

(४६)

कौशल्या का वात्सल्य

इतहि मिलि खेलहुँ चारिहुँ भाई ।
राघव लखन भरत रिपुहन संग, प्रिय शिशु सखा बुलाई ।।
नृप आंगन नभ चारू चारि बिधु, पीयूष सुहाई ।
जननी चख चकोर प्रमुदित मन, पियहिं अघाई अघाई ।।
केलि मध्य लखि श्रमित तुमहि मैं, उबटि उबटि अन्हबाई ।
सानुज सखा समेत हरषि हौं मोदक मधुर खबाई ।।
तब बिधु बदन ललन देखे बिनु, लब जुग सरिस सिराई ।
छगन मगन लघु ललन लाड़िले, रामभद्र रघुराई ।।
बाहिर जनि निकसहु कोउ टोना, दइहि तुम्हहिं लगाई ।
"गिरिधर" प्रभुहि निहारि कौशिला आँचरि लेई छिपाई ।।

(४७)

स्वर्ग कहते किसे जानते हम नहीं,
स्वर्ग का देवता सामने आ गया ।
बन के बालक सलोना अवध भूप का,
मेरे नयनों मे अपवर्ग सुख छा गया ।।
आज बिहँसी दिशायें कमल खिल गये,
टिमटिमाते दिये ये सभी जल गये,
आज परियों ने मंगल सजाये मुदित,
मन अनूठा नया चन्द्रमा पा गया ।।
कोकिलाओं ने घोला सुरस कुञ्जमें,
रागिनी छाई मंगल की अलि गुञ्ज में,
भाग्य के उन छबीले कलश में अहो,
प्रेम का पुण्य पीयूष बरसा गया ।।
जो निगम को अगम शुद्ध मन को सुगम,
देके सरगम मनोरम विषय और सम,
दास "गिरिधर" की दृग तूलिका पर वही
अपने सुन्दर मधुर चित्र लहरा गया ।।

(४८)

आज सखि मैं एक कौतुक देख्यो ।
दशरथ अजिर धूरि धूसर वपु,–बह्म बन्यो शिशु पेख्यो ।।
जाके रोम रोम प्रति कोटिक, छीर सिन्धु लपटाने ।
सोई प्रभु कौसल्या थन पय हित, रिरकत फिरत ललाने ।।
निगम जाहि कह कहत निरंजन नेकु मरम नहिं पावै
ताहि सुमित्रा आँजि नयन महँ, आँजन चपरि पावै
जाकी माया कठपुतली ज्यों अगजग नाच नचावे
ताहि नचावत चुटकी दै दै, जननि अधिक सुख पावै
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड प्रलय गत जासु रोम प्रति राजे
"गिरिधर" प्रभु सोइ मातु कौसिला आँचर बीच बिराजे

(४९)

कहन लगे राघव मैया मैया ।।
चक्रवर्ती जू को कहत पिता प्रभु, लषन भरत जू को भैया
गुलुजी (गुरुजी) कहत वशिष्ठहिं टेरत, गुरु तिय कह कहे दैया
काकी कहत सचिव तिय कहँ प्रभु, कहत सुमन्त्र ककैया
चुटकी सुनि सुनि किलकि किलकि हरि ठुमुकि ठुमुकि नाचे भैया
लखि हँसि जननी दिखावत राजहिं घुटुरून अजिर दुरैया
"गिरिधर" कह अजहुँ चित चोरत तोतर बचन बुलैया

(५०)

खेल सखि साँवरो सलोनवाँ, ललनवाँ राजा के अँगनवाँ
राजा के अँगनवाँ राजा दशरथ के अँगनवाँ ।।
किलकि किलकि प्रतिबिम्ब निहारत,
मनि बीच चपल नयनवाँ, ललनवाँ राजा के अँगनवाँ ।।
घुटुरून चलि जननी ढ़िग आवत,
खन खन खनके कंगनवाँ, ललनवा राजा के अँगनवाँ ।।
कबहुँ भुसुण्डि जू को पकरन चहे हरि,
छम-छम छमके पैजनवाँ, ललनवाँ राजा के अँगनवाँ ।।
भरत लखन रिपुदमनहिं प्रेरित,

चित चोरे तोतरे बयनवाँ, ललनवाँ राजा के अँगनवाँ ।।
गिरि-गिरि उठि-उठि बिहँसत निरतत,
बरसत विबुध सुमनवाँ, ललनवाँ राजा के अँगनवाँ ।।
यह छबि सुमिरि-सुमिरि हिय हुलसत
ललचत "गिरिधर" के मनवाँ, ललनवाँ राजा के अँगनवाँ ।।

(५१)

आजु हरि कागहिं खीर पियावत ।
कनक कटोरे भरि-भरि पायस, आ आ कहि गुहरावत ।।
निकट बुलाइ बिठाय गोद महँ, बदन चूमि गुनरावत ।
मनहुँ नील नीरज जम्बूफल, पाटल कोष छिपावत ।।
कबहुँ कुटिल कच ढाँकि लेत तेहि, कबहुँक हृदय लगावत ।
मनहुँ बाल मनसिज सरसिज मिस, मञ्जुल मधुप लोभावत ।।
लै-लै लघु-लघु कवल अँगुरिअन, लालन ताहि जिआवत ।
सरजू जल निर्मल अति शीतल, हँसि-हँसि तेहि अँचवावत ।।
जूठन लहि मन मुदित भुषुन्डि, जननि निरखि सुख पावत ।
या प्रसाद "गिरिधर" रसना निसि बासर नित ललचावत ।।

× × × ×

झाँकी झाँकत कौसिला नृप दशरथहि दिखाय ।
भगत वछल शिशु राम पर नित "गिरिधर" बलि जाय ।।

छन्द

(५२)

झाँकी-झाँकि आई आज रघुराज मन्दिर की
मन्द- मन्द मुसुकात बाल सलोनो है
तरुण तमाल जलजात गात सोहे बीर
धीर मनमोहे पीर हरत ड़िठौनो है
दरपन निहारि विधु आनन बिसारि सुधि
हेरि-हेरि भूमि डारि सकल खिलौना है
कौसिला कुमार सुषमा शृंगार पै डारयो अलि
मूठ है कि जादू है कि मन्त्र है कि टोनो है

गीत

राघव निज दरपन बदन निहारि ।
ललनजी तन की सुरति बिसरि ।।
लखि ललकि-ललकि वाको चूमे,
अनुराग उमगि अंग झूमे,
सुख पुलकित लोंचन ढारत वारि ।। ललनजी ।।
कहुँ भूषण बसन बिसारे
मणिहार कहूँ महि डारे
लखि हरषतं आपनि हि अनुहारि ।। ललनजी ।।
कछु किलकि-किलकि वातें बोले
अति मधुर सुधा जनु छोले
लखि बिहँसत प्रेम मगन सब नारि ।। ललनजी ।।
पग ठुमुकि- ठुमुकि लाल नाचै
प्रतिबिम्ब रूप रस राचै
कहे लछिमन रिपुहन भरत पुकारि ।। ललनजी ।।
लै लै मोदक वाकों खवावैं
प्रभु चुटुकि बजाइ रिझावै
झाँकि-झाँकि मोद मुदित महतारि ।। ललनजी ।।
कहुँ तोतर गान सुनावे
कहुँ रूठि अँगूठो दिखावे
कहुँ "गिरिधर" ईश करत मनुहारि "ललनजी ।।

× × × ×

दशरथ नृपति दिखावति, झाँकी बोलि महतारि ।
"गिरिधर" प्रभु लै गोद नृप, मुदित नयन भरि वारि ।।

(५३)

आजु मेरे राघव धूरि भरे हैं।
नख सिख सुभग श्याम सुन्दर तनु, कोटि मनोज हरे हैं ।।
धावत ठुमुकि-ठुमुकि शिशु अँगना, खगपति गर्व हरे हैं।
हौं पकरन चाहति मोरि सजनी, भूषण सरकि परे हैं ।।
कबहुँ परात बिरमि कबहुँक शिशु कबहुँक कछुक खरे हैं।
कबहुं देखाय अँगूठो चिढवत कौतुक केलि करै हैं ।।
केहि विधि आलि गहौं मेरो छौना नटखट अति चपरे हैं।
अस मन होत ललकि मुख चूमु थन जुग दूध झरे हैं ।।
रानि बचन सुनि बिहँसति गुरुतिय लोचन नीर ढ़रे हैं।
यह शिशु रूप सुमिरि हि "गिरिधर" देह गेह बिसरे हैं ।।

(५४)

राघवजू को पुनि- पुनि जननि सिखावत।
गोद बिठाय दुलारि ललन को, नाना विधि समुझावत ।।
एते बड़े भये मेरे ललना, तौं पय नेह लगावत।
छोड़त नाहि अजहूं थन पीवत अति अनुराग बढ़ावत ।।
टुटि हैं दसन लाल के सिगरे कहि कहि जुगति बतावत।
दसन हीन लखि हँसिहैं बालक हँसि-हँसि मातु बुझावत ।।
जूठों करयों लखन लघु लोने विविध बहानों बनावत
कबहुं छुड़ावन हेतु राम सो थन पर मिरच लगावत ।।
लखहुं सखा सबरे सुत तेरे कबहुं न थन ढ़िग जावत।
तुम नहिं खात अशन मेरे छैय्या पय हित मन ललचावत ।।
करत न कानि जननि जुगतिन की आँचर बदन चुरावत।
गहि कर दूध पियत लखि राघव "गिरिधर" मन ललचावत ।।

(५५)

जननि हिय अस अभिलाष ठयो ॥
ठुमुकि ठुमुकि कब चलिहैं रमैय्या,
कब मोहि कहिहैं मैया मैया,
कब आँगन मँह खेलैं मेरे छैय्या,
अँगुरिन्ह पानि गह्यो ॥
तोतरि बचन अमिय कब बोलिहैं,
कब मेरे कर गहि आँगन डोलिहैं,
कबहिं खिलौना लागि मचलिहैं,
नैनन नीर चयो ॥
कब मेरे गोद तें चपरि परैं हैं,
नूपुर रुनझुन मधुर सुनै हैं,
निरखि नृपति लोचन फल पइहैं,
सुकृति दीप दयो ॥
कब हौं अँचर बिच चपरि चुरइहौं,
थन पय पुलकित शिशुहिं पियइहौं,
चूमि ललन मुख हृदय जुड़इहौं,
"गिरिधर" मोद भयो ॥

(५६)

धूर बिधूसर देखि के लालन ललत आँचर ओट चुराइ के,
चूमि के झूमि के भाव में ऊमि के आनन आलिन ओट दुराय के,
जोहति पोहति मोर व्यथा निज सोहत पुन्य के खेत निराय के,
"गिरिधर" ईश निहार विभोर हो मोहति ज्यौं कल चार थिरायके ॥

× × × ×

राघव मेरे धूरि कहाँ ते तनु आई ॥
फटिक रतन मय चिक्कन महि तल कमला स्वकरि सजाई ।
तहँ शिशु सकल अनुज संग खेलत नृप की रुचिर अँगनाई ॥
हौं करि जतन विभूषन नख सिख रचि- रचि के पहिनाई ।
तुम छन मँह करि धूरि विधूसर वाको दई बगराई ॥

कई प्रभु बिहँसि सुनहु मेरी जननी कहत न कछुक बनाई।
बालक एक आई रजभूषित मो तनु दई लपटाई ॥
कुन्द इन्दु कर्पूर बरन बपु सुरसरि सिर लहराई।
भाल बाल विधु भुजग विभूषण राख रही तनु छाई ॥
निरखि रहे चकि सब शिशु लखि लखि चख टकटकी लगाई।
तेहि छन धाई भेंटि मोहि भुज भरि मोद उमंग बढ़ाई ॥
छाँड़त नहीं मोहि कोटि जतन ते नाचत करन ठठाई।
देखत हँसत भरत आदिक शिशु बहु विधि ताल बजाई ॥
"गिरिधर" प्रभु की बचन चातुरी श्रवन सुखद सुनि माई।
सुमिरि महेश मिलनि रघुपति को नयन नीर भरि लाई ।

(५७)

आज हरि कौतुक एक कियो ॥
खेलत अजिर सीक धनु राघव, हँसि हित सहित लियो ॥ आज ॥
चाप चढाइ तानि सर के लिहि, पुनि संधान कियो,
लंकहि परी खरभरी तबही, दसमुख कम्प भयो ॥
निरखि मोद मन मगन सुमित्रा, नृपहिं बोलाई लियो,
कहति देखाई उर ल्याई ललन को, अब महि भार छियो ॥
झाँकी झाँकि हुलास नृपति उर, असुर समाज भियो,
इन्द्र धनुष लै उतरि गगन ते, जनु धनु लसत बियो ॥
लघु धनुही मँगवाई राम कहँ, दशरथ तुरत दियो,
बाल विनोद गाई रघुबर को "गिरिधर" सुखहिं जियो ॥

(५८)

दोहा :–

झाँकी दशरथ लाल की, बनी रहे दिन रैन।
निशि वासर तलफल रहें, बिना नैन दो नैन ॥

× × ×

ललन लोने अवधपति के, मुझे प्राणों से प्यारे हैं।
छबीले साँवले राघव, मेरी आँखों के तारे हैं ॥

घुराती चित्त को बाँकी, मदन मोहन की ये झाँकी,
दुलारे कौसिला जू के, मेरे जीवन सहारे हैं ।।
मधुर मुसुकान होठों पे, कपोलों की छटा न्यारी,
लटकती हैं लटें मुख पर , दशन दो वारे- वारे हैं ।।
अरुण अम्भोज से कर में, खिलौने मन को हैं हरते,
मनो निज सेवकों को ये, कृपा कर के दुलारे हैं ।।
ललकते हैं किलक राघव, पहुँच माता की गोदी में,
निरख कोसल सुता वैभव, बिबुध जय-जय उचारे हैं ।।
सिखाती माँ पकड़ उँगुली अजिर में लाल को चलना,
सुमिर शिशु राम की लीला, सुरति "गिरिधर" बिसारे हैं ।।

(५९)

साँझ सकारे सरयू किनारे,
खेलन को मत जाओ ।।
रमैया मेरे खेलन को मत जाओ ।
ए मेरे बारे, नयनों के तारे,
कोमल हैं तेरे पाँव,
रमैया मेरे खेलन को मत जाओ ।।
लखि मुख लाजति सरद जुन्हइया,
डीठि लगेगी कहति बलि मैया,
एहि आँगन खेलहु चारों भैया,
सखन्ह सहित सति भाव-रमैया मेरे ।।
अवलोकत भरि लोचन शोभा,
नयन चकोर बदन विधु लोभा,
नाशत निरखि सकल भव छोभा,
विलसत चौगन चाव......रमैया मेरे ।।
मनि बिनु फनि ज्यों जिये मेरे बारे,
त्यों जननी बिनु तुम्हहि निहारे,
करहु न आरि नरेन्द्र दुलारे,

नहु समुझि सुभाव.......रमैया मेरे ॥
मातु बचन सुनि श्री रघुराई,
जननि अंक बैठे मुसुकाई,
भगतवश्य झाँकी सुखदाई,
"गिरिधर" प्रमुदित गाव...रमैया मेरे ॥

(६०)

ठुमुकि ठुमुकि चले घुटुरुन अँगनवां
सुहावन लागे हे, रानी तोहरा ललनवाँ
ञ्जन नयन सोहे कलित कजरवाँ
चुरावन लागे हे, भावुक जन केर मनवाँ,
कमल बदन दमके दुइ दुइठी दतुलिया,
लजावन लागे हे, भक्त मानस सुमनवाँ ॥
निरखि- निरखि रामभद्र की सुरतिया
लुटावन लागे हे, राजा अनधन सोनवाँ
खेलत बिलोकि लघु राघव ललनवाँ
छिपावन लागे हे, "गिरिधर" हृदय भवनवाँ ॥

(६१)

प्यारे राघव पैजनिया बजाइ दे मधुर मुसुकाय दे रे ।
अपनी मोहन मुरतिया दिखाई दे, मधुर मुसुकाय दे रे ।
रुनक झुनक छम-छम नूपर की धूनि
लाला हमको सुधा ज्यों सुनाय दे, मधुर मुसुकाय दे रे ॥
चपल छबीली नयन चारु चितवन
बाल लीला सरस सरसाइ दे, मधुर मुसुकाई दे रे ॥
लटकति अलकें कपोलन के ऊपर,
बाँकी झाँकी के दरशन कराय दे, मधुर मुसुकाय दे रे ॥

घुटनों से चलके थिरके मचल के,
बोल तोतरि तनिक किलकाय दे, मधुर मुसुकाय दे रे ।।
"गिरिधर" हृदय अजिर मँह लालन
नाच-नाच के कृतारथ बनाय दे, मधुर मुसुकाय दे रे ।।

× × × ×

यह शोभा शिशु राम की निरखत मोद अपार ।
गिरिधर दृग चख चाहिके, बिसर गयो संसार ।।

(६२)

भावना करती प्रगट पाषाण से भगवान को,
साधना रचती तुरत हैवान से इन्सान को ।।
वासना झट ही बदलती क्रूरतम शैतान को ।
अर्चना भरती हरि के लोक के अहसान को ।।

× × ×

आज राघवजू के पंकज पाँय पैजनिया बाज रही ।।
रुन झुन करत मधुर मन मोहत, सुमिरत सकुल विमोह बिछोहत ।
देखि चित्त देह महँ लुभाय, पैजनिया बाज रही ।।
राज मरालिनी सहस सुहाई किधौं सरसिज ऽ नीड़ बनाई ।
किये मंजुल रसहिं अथाय, पैजनिया बाज रही ।।
मुनिगन अलि किधौं वेश बनाये जुगल नयन लखि-लखि ललचाये ।
मानो गुंजत हरि गुन गाय, पैजनिया बाज रही ।।
ठुमकि-ठुमकि डोलत जब आँगन, झुनुन-झुनुन बाजत रव मृदु गन
मानो वेद रिचा बिलमाय, पैजनिया बाज रही ।।
मुनि जन भाग सराहत ताकर चूमति जननि प्रमोद हृदय भर ।
दास "गिरिधर" बलि-बलि जाय, पैजनिया बाज रही ।।

(६३)

देखो देखो कौशिला जू को भाग, जहाँ शिशु राघव लसे ।
सुषमा शील सकेलि रचे विधि, जनु सनेह मूरति मंगल निधि
कैंधौं प्रेम को पद्म पराग सरस हर हृदय बसे ।।
निरखि खिलौननि लालन ललकत,
दाड़िम दशन लसत कल किलकत,
मानो शशि स्रवत सुधा को तड़ाग, मधुर हरि मुदित हँसे ।।
कबहुँ अरत प्रतिबिम्ब निरखि हरि,
मातु अँचर महँ ढुके प्रभु डरि-डरि,
देखि जोगी बिसारे बिराग, सुमन सुर हरषि खसे ।।
जय-जय कहि सुर तिय नभ झूमत,
कोसल रानी राम मुख चूमत,
लखि "गिरिधर" भरे अनुराग नयन रस रूप फँसे ।।

(६४)

मुकुन्द ललना रानी कौसिला खिलावै ।।
बार-बार वाहि चूम आनन दुलारे, लै उछंग झूमि-झूमि चूमे चुचकारे ।
भुवन मोहना, देखि लोचन जुड़ावै ।।
आँचर ओढ़ाइ दिव्य प्रेम पय पियावै,
पुलकि पुलकि ललकि लाल लोने हिय लावै ।
कमल लोचना, गाइ- गाइ हलरावै ।।
भूषण जडाऊ अंग-अंग पे सँवारे, पुनि-पुनि विधुवदन देखि नजरा उतारे ।
अमित मयना, वारि-वारि सुख पावै ।।
कबहुँ बोलाय संग चतुर चार भैया, चुटकी बजाय के नचावे बलि मैया ।
ठुमुक चलना, दशरथ को दिखावै ।।
लरखरात उठत गिरत चरण कमल सोहे, पैंजन की रुनझुन धुनि मुनि मन मोहे
बरस सुमना, देव गन गीत गावै ।।
आँचर से धूरि झाँरि राम अन्हवावें, आ रे निदरिया यों कहि के सुवावै ।
कनक पलना घालि माता झुलावै ।।

नैन मीचि उठत बहुरि निरखे खिलौना, सोहत कपोलन पें दुई-दुई डिठौना।
तोतर बोलना, दास "गिरिधर" को भावै ॥

× × ×

जय कौसल्या सुकृति तरु सुफल ललित शृंगार।
जय "गिरिधर" के प्राणधन, जय मुन्ना सरकार ॥

(६५)

हमार ललना आजु धुरिया में खेलैं ॥
कनक मनि जटित सोहें कौसिला के अंगना,
जामे खेले घुटुरुन छबीलो छोटो ललना,
हमार मोहना आजु धूरि सीस मेलै ॥
चुटकि बजाय लेइ अनुज शिशु बुलाय
किलकि किलकि थिरकि थिरकि खेलैं हरषाय,
हमार छगना आजु कौआ के ढेलै ॥
धूरि भीर लसै चारु श्याम शरीर,
झाँकि-झाँकि "गिरिधर" के चित्त भये अधीर,
जलज लोचना केश अँगुरिन्ह सकेलै ॥

(६६)

राघव छोड़ो ऽ रवा दुलारे ललना ॥
आँचर पकड़ तुम रोवत मचलत, कैसे मगाऊँ मैं गगन ते चन्दना
मणिभूषण महि पर बिखरायो, काटत लाला जू दशन बसना
सुभग खिलौनन दूरि पँवारत, रोये अरुनाये हैं नलिन नयना
उठहु ललन तोहें लाबु दुलहिनी, मिथिला तें आई है ललित लगना
सुनि चुपि भये निहोरत मातहि, कहे माई वाको दीजो मेरो कंगना
"गिरिधर" प्रभु गति लखि मातु विहँसति, सुकृत सराहे सुर झरि सुमना ॥

(६७)

दोहा :–

खेलत राघव शिशुन्ह संग, गये अधिक बलमाय।
दिनकर ढरत विलोकि हिय, कौसिल्या अकुलाय ॥

× × ×

प्यारे राही तुरत जरा जइयो उतै मेरे राघव से कहियो रे,
आज खेलन अति भोर पधारे, किये न कलेऊ ललित मेरे बारे,
उन्हें मेरो संदेशो सुनइयो जरा– मेरे राघव से कहियो रे ।।
मैं बहु विधि निज आलि पठाई, करि मनुहारि ललन समुझाई,
उन्हें तुमहूँ तनिक समुझइयो जरा– मेरे राघव से कहियो रे ।।
भुवन विमोहन मेरो सलोनो देखि तुम जनि डारियोटोनो,
उन्हें देखि जनि बिलमइयो जरा मेरे राघव से कहियो रे ।।
कहियो सुवन तोहि मातु वोलावत, तुम लगि पलकों के पाँवडे सजावत,
उन्हें "गिरिधर" की आनि देवइयो तुरत-मेरे राघव से कहियो रे ।।

(६८)

आज हरि निज गुरु गोद लसे हैं ।
श्वेत बसन लसे भूषण जड़ाउत, रुचिर निषंग कसे हैं ।।
पंच बाण मानो पंचबाण के निरखि प्रपंच तसे हैं ।
भौंह निरखि तिरीछे जेहि मनसिज मान कमान ग्रसे हैं ।।
शरद मयंक बदन मन भावन कछु मुख मोरि हँसे हैं ।
"गिरिधर" हिय सर भाव सरोरुह बालक मधुप बसे हैं ।

(६९)

हे सखि ! काग कछु बचन सुनावत ।
छगन मगन मेरो पुर बीथिन तैं खेलि अनुज संग आवत ।
श्रमित शिथिल भूषन सब अंगनि तनु शोभा अति पावत ।।
नील जलद मानो सुरसरी जल तें उडुगन जन अन्हवावत ।
भूखे सूखि गये मधुराधर चपरि चहूँ दिशि धावत ।।
आई गये राघव गुरु तिय ढ़िग समाचार खग लावत ।
या झाँकि रघुवंश तिलक की "गिरिधर" चित्त ही चुरावत ।।

(७०)

मेरे मन को भाये राम लला
किलकि-किलकि मेरे आँगन डोलत, मृदु मुसुकाये राम लला,
मेरे मन को चुराये, रामलला ।।

तोतरि बोलि चकित चित चितवत, रज लपटाये रामलला,
मेरो जिय ललचाये रामलला ।।
इन्हहिं बिलोकि स्रवत मम थन पय, होइहैं भुखाये रामलला,
मेरे हिय में समाये रामलला ।।
काह कहुँ कछु सूझत नाहीं, जग को भुलाये रामलला,
मेरे नयन लुभाये रामलला ।।
अस मन होत ललकि मुख चूमूँ सहज सुहाये रामलला,
मेरे अँचर छिपाये रामलला ।।
यों कहि मगन भई पुर नागरि, कछु सकुचाये रामलला,
"गिरिधर" उर आये रामलला ।।

दोहा :

झाँकी झाँकि अघात नहीं, निशि वासर मन मोर ।
रामचन्द्र चन्दा भयो, "गिरिधर" भयो चकोर ।।

(७३)

आज गलियन में खेलै देखो कौसिला ललन ।।
जिनके बिलोके भूले जग के प्रपंच सब,
कछु न सोहात सखि धाम अरु धन ।।
सासु औ ननद मे.. झगरो करति मोते,
शिशु पे बिकायो मेरो मोल बिनु मन ।।
हाथ में खिलौना लिये नवल तरंग हिये,
चोरे मन चित्त सखि तोतरे बोलन ।।
अनुज सखा समेत लोचनन लाभ लेत,
नाचो मोर मन मानो, लखि श्याम घन ।।
"गिरिधर" पलक के पाँवडे बिछाये जोहे
मोहे अवलोकि वाकी ठुमुकि चलन ।।

(७४)

माँगत आज चन्द्र रघुराई ।।
ठुनुकि ठुनुकि अति अरत लरखरत, पटभूषण बिबराई ।
रोवत लोटि जात धरनि पर, नयन नीर झरि लाई ।।

लखि दशरथ मनुहार करत बहु चूमि ललन समुझाई।
विविध खिलौने कनक मणिन्ह के, लालहि देत मगाई।
लेत न कछुक ललन अति रूठ्यो, गहि कर कमल बहाई।
बारहिं बार जनक जननिहि हरि, अम्बर रहे दिखाई॥
श्वेत खिलौना बहुत सलोनो, आनि देहु मोहि माई।
याके साथ सदा हम खेलैं सखन्ह सहित चहुँ भाई॥
आँचर पकरि मचलि कछु राघव, हसत मुदित लखि माई।
"रामभद्र आचारज" हिय मँह हुलसति हरि लरकाई॥

(७३)

सरजू के तीरे खेलै राघव सरकार हे।
संग सखा भाई सब आनन्द अपार हे॥
तरुण तमाल तर सुठि सुकमार हे।
जाहि देखि लाजे मन कोटि कोटि मार हे॥
कटि तूण धनु सर करन सुधार हे।
इन्द्र धनु लिये मानो जलद उदार हे॥
मन्द मुसुकानि लखि सुरति बिसार हे
अरुण अधर सींचे सदा सुधा सारा हे॥
कमल कपोल लसे नैन कजरार हे।
तिलक ललाट सोहे सुषमा शृंगार हे॥
शिशु केलि छप छप करें जलधार हे
मनहुँ नहात नील जलद बिचार हे॥
बरसे सुमन सुर करि जय जयकार हे।
"गिरिधर" शोभा देखि होत बलिहार हे॥

(७४)

सरजू के तीर आजु, खेलै रघुनन्दन बबुआ॥
अनुज सखा के संग, प्रेम उमंग रंग।
तरल तरंग संग, खेलै रघुनन्दन बबुआ॥
श्यामल शरीर राजै, कर धनु तीर छाजै।

जलद गंभीर धीर, खेलै रघुनन्दन बबुआ ।।
चिक्कन कपोल सोहै, लोचन बिलोल जोहै ।
आनन अमोल गोल, खेलै रघुनन्दन बबुआ ।।
बिबुध विमान बनै, विविध वितान तनै ।
मन्द मुसुकान आजु, खेलै रघुनन्दन बबुआ ।।
खेले भौंरा चक्क डोरी, अवध की खोरी खोरी ।
"गिरिधर" के चित्त चोर, खेलै रघुनन्दन बबुआ ।।

(७५)

निरख सखियाँ कौसिला जू के ललना ।
नख शिख सुभग काम शत सुन्दर, झूलत कंचन पलना ।।
चिकुर निकर विधु-मुख पर लटकत, कजरारे खंजन से नयना ।।
कछु कछु हँसत किलकि शिशु खेलत तोतरि मंजुल बयना ।।
चितई खिलौने गहन कहूँ लटकत राजत मधुरहि डोलना ।।
"रामभद्र दासहुँ" नहिं बिसरत राघव को घुटरुन चलना ।।

(७६)

राघव तुम काहू ते नाहि डेरावत ।
जो वरजति बार बार तोहि, सो न करत सकुचात ।।
मैं तोहि बहुत सिखावति लालन, छुअहु अनल जनि तात ।
तुम पुनि पुनि तेहि पकरन धावत, ताते जिय अकुलात ।।
जा गरजन ते डरत वीर मन, सुभट मौलि बिलखात ।
ता सिंहिनि सावक तुम खेचत दसन गनत मुसुकात ।।
जा अहि शिशु लखि धीरज टूटत, साहस हूँ सहमात ।
ता अहि शिशु कह डालि गले तुम, खेलत हिय हरषात ।।
हौं जानिय सतबीर बानि तेरी, चक्रवर्ती को जात ।
बिनु प्रयास तुम हथबल साधत, लखन लाल के साथ ।।
सुनि-सुनि बचन सुमित्रा के शुभ, दशरथ मन सकुचात ।
"गिरिधर" प्रभु लियो उमगि धुनषकर, भरयो वीर रस गात ।।

(७७)

शयन अब कीजिए राजीव नैन ।
दिवस गयो रजनी अब छायी,
खग गण कल-कल गिरा सुहाई,
पलंग पौढ़िये श्री रघुराई,
रघुपति करुणा ऐन ।। शयन ... ।।

मुनिगण निज-निज शयन विराजत,
उडुगन सहित चन्द्रमा राजत,
अवधपुरी शोभा अति छाजत,
सहज सुहावनी रैन ॥ शयन ... ॥
निज निज नीड़ बिहग अति शोभे,
प्रकृति छटा सबका मन मोहे,
जननी तव विधु आनन जोहे,
"गिरिधर" को सुख दैन ॥ शयन ... ॥

(७८)

देखो सखि राघव के उनींदे नैन ।
मनहुँ मनोहर खञ्जरीट जुग बसे कमल करि ऐन ॥
अरुन अधर लखि मनहुँ, बिम्बफल चपरि चहत हठि लैन,
निरखि कमान कछुक डरपत जनु ताते छोड़त चैन ॥
आलस बस जमुहात छनहि- इन दशन कान्ति सुख दैन
"गिरिधिर" चितइ चकित चित उमगत रघुकुल मनि को शैन ॥

(७९)

अब सोवहु राघव प्यारे दशरथ के राज दुलारे ॥
देखो अब रजनी आयी, चाँदनी छटक छबि छायी,
नभ राजत मंगल तारे, दशरथ के राज दुलारे ॥
तुम लेत ललन जमुहाई, पलके गिर रही सुहाई,
कछु नयन भये रतनारे, दशरथ के राजदुलारे ॥
तव पास निंदरिया आई, तुम्ह हँसत छगन सुखदाई,
"गिरिंधर" के प्राण पियारे, दशरथ के राजदुलारे ॥

(८०)

सोइये ललन तोहे कौसिला सुलावें ।
नयन उनींदे तेरे गिरति पलकियाँ,
खञ्जन सरिस नैन झप-झप जावे,
सोइये ललन मेरे निंदिया बुलावे ॥
भूषण शिथिल भये, आलस बदन छये,
अधर उघारी लाला मृदु जमुहावे,
सोइये ललन मेरे निंदिया बुलावे ॥
काहे को अरत तात मानत न मेरी बात,

आधी रात बीति आजु मातु बलि जावे,
सोइये ललन मेर ` निंदिया बुलावे ॥
राघव दृग मूँद लीजै मंगल शयन कीजै,
"गिरिधर" को श्रम छीजै राम गुन गावै,
सोइये ललन मेरे निंदिया बुलावे ॥

(८१)

शयन अब राजहुँ राज किशोर ।
बीतो दिवस गई अब रजनी,
रानिन्ह सहित विलोकहिं सजनी,
बिलखत कमल कुमुदिनी विहँसत,
प्रमुदित चक्क चकोर ॥
खेलत श्रमित भयो मेरे बारे,
अति अलसात नयन अरुणारे,
झपकी लेत छनहिं छन खेलत,
कछुक बिलोचन कोर ॥
तुम बतरात नींद नहिं आवे,
कहि माँ पुनि-पुनि मोहि बुलावे,
चुटकी दे मन मोद बढ़ावे,
करषत मानस मोर ॥
हौं बलि जाऊँ शयन अब कीजै,
लालन तव मग श्रम अब खीजै,
होत भोर पुनि दरशन दीजै
लखि "गिरिधर" की ओर ॥

(८२)

तुम सो जांवो मैं गाऊँ, तुझे निरख निरख सुख पाऊँ ।
अवलोक तुम्हारी झाँकी, सीमा जो विश्व कलापी ।
निज लोचन सुफल बनाऊँ ॥ तुझे निरख ॥ १ ॥
तव मृदुल चरण अरुणारे, हैं श्रमित सुनो मेरे प्यारे ।
तेरी प्रभु मैं बलि जाऊँ ॥ तुझे निरख ॥ २ ॥
हे राक्षस वंश निकन्दन, अब शयन करो रघुनन्दन ।
तुझे देख के हृदय जुड़ाऊँ ॥ तुझे निरख ॥ ३ ॥
निद्रा है तव ढ़िग आई, सोवो "गिरिधर" सुखदाई ।
तब चरणों में चित लाऊँ ॥ तुझे निरख ॥ ४ ॥

(८३)

शयन गीत

पलंग पर पौढ़हु बाल्मुकुन्द ॥
सिगरे दिन लरिकन संग खेल्यो, आँगन गृह पुर गली अलिन्द ।
अब सोवहु श्रम खोवहु लालन, राम भानु कुल कैरव चन्द ॥१॥
ऊंघत तात झपात नयन जुग, मानहुँ साँझ अरुन अरविन्द ।
कुटिल केश बिखरे मुख ऊपर, जनु पाटल पर नटत मिलिन्द ॥२॥
आई रैन नींद की बेरिया, सोवत अगजग खग अलिवृन्द ।
तुम बतरात जगावत मोकहँ छगन मगन मेरे परमानन्द ॥३॥
तुम सोवहु मैं गीत सुनाऊँ कौशल्यासुत आनन्द कन्द ।
प्रात बहुरि "गिरिधिरहुँ" लूटि हैं तब सरोज मुख छवि मकरन्द ॥४॥

(८४)

(प्रभात गान)

सपदि अब जागहु बालमुकुन्द ।
बीती रजनी भयो सकारे ।
शशिकर हीन छीन द्युति तारे ।
मुनि गन गावत सुजस तिहारे ।
कमल कोष पर नटत मुखरकल, मधुरस मत्त मिलिन्द ॥१॥
चलत सुहावन मलय समीरा ।
शीतल बह मृदु सरजू नीरा ।
तव पद ध्यान करत मुनि धीरा ।
मुदित कोक संकुचित कुमुदगण, विहँसि उठे अरविन्द ॥२॥
पूरब दिसि छाई अरुणाई ।
अति प्रिय खगगण गिरा सुहाई ।
भे प्रभात जागहु रघुराई ।
दरस हेतु तव द्वार विराजत, अनुज सखा शिशु वृन्द ॥३॥
राजीव-नयन नयन जुग खोलहु ।
राम जननि उर आनंद घोलहु ।
तोतरि बचन सुधा सम बोलहु ।
राघव लसहु सतत "गिरिधर" हिय, रविकुल कैरवचन्द ॥४॥

(८५)

प्रभातमंगल गान

तनिक दृग खोलहु राजीव नैन।
निरखे तव मुख छवि कल ऊषा।
साजेउ अंग बसन बर भूषा,।
उदित भयो पूरब दिशि पूषा,।
बिहग वृन्द कल मुखर लसत नभ, प्रमुदित तजि तजि अैन ।।
मुनिजन तव पद ध्यान लगावत।
किन्नर तव कल कीरति गावत।
मागध निरखि निरखि सुख पावत।
तब प्रभात जस गाइ शारदा, प्रमुदित गद गद बैन ।।
हौं बलि जा देव रघुराई।
आलस छोड़हु जन सुखदाई।
कनक कलस सरजू जल ल्याई।
उठहु धोइ मुख पियहु लाल पय, राघव त्यागहु सैन ।।
मातु बचन सुनि अति रस पागे।
राजिव नयन कृपा करि जागे।
मुख शोभा लखि भव भय भागे।
तुरत आई जननी ढ़िग बैठे, "गिरिधर" कहँ सुख दैन ।।४।।

(८६)

जननी हरिहिं उछंग लियो है
सजल नयन तन पुलक बदन विधु नयन चकोर कियो है ।।
श्याम शरीर तड़ित झिंगुली गोरोचन तिलक दियो है ।।
नील जलद लखि उडुगन रविकर, मनसिज मनहुँ धीयो है ।।
निगम नेति कहि कहि शुक शारद हारत हहरि हियो है ।।
सोई अज प्रेम बिबस कौसल्या थन पय ललकि पियो है ।।
सुमन बरसि सुर भाग सराहत बिधि नहीं भुवन वियो है ।।
बालचरित गुनि गुनी रघुवर को "गिरिधर" सुखहिं जियो है ।।

(८७)

गुरुजीके गोद खिलौना हो, कहुँ नजर न लागे।
नील सरोरुह श्याम सुभगतनु। निरखत लोचन लोना ॥
हो कहुँ नजर न लागे ॥
कुटिल अलक लटकत मुख ऊपर
कमल दलन अलि छोना, हो कहुँ नजर ......॥
दुइ दुइ दशन अधर मृदु पल्लव
सुभग नयन कर कोना हो, कहुँ नजर.........॥
धूलि बिधूसर किलकत खेलत
श्यामल कुँवर सलोना, हो कहुँ नजर..........॥
मिथिलाकी सब नारि बाँवरी,
लाये कुँवर पर टोना, हो कहुँ नजर...........॥
"गिरिधर" मुदित निरखि शिशु रघुवर,
होइगा जबन रहा होना, हो कहुँ नजर........॥

(८८)

राघव लसत गुरुजी की कनियाँ
सुन्दर नील, तमाल बरन बपु
नख सिख सुभग सकल सुख दनियाँ ॥
कुटिल अलक अलि आनन विधु पर
कानन लसित ललित नगफनियाँ ॥
खंजन नयन निरंजन अंजन
चोरत चितहिं मधुर मुसुकनियाँ ॥
पुनि-पुनि ललकि ललकि मुख चूमत
पुलकत सुनि-सुनि शिशु किलकनियाँ ॥
निज पट कबहुँ अँगोछत हरि मुख
गोबत जनु शशि दमकि दमिनियाँ ॥
कबहुँ दुलारि ललन हलरावत
लखि-लखि हुलसत दशरथ रनियाँ ॥
"गिरिधर" लहत सुकृत फल मुनिवर
यह छबि अगम-निगम सुख खनियाँ ॥

(८९)

खेलत कोशल राज सुत बिबिध खिलौना संग।
"गिरिधर" प्रभुहिं निहारी मन, उमगत अधिक उमंग ॥

× × ×

हमार ललना आज झुनझुना बजावै।
आज झुनझुना बजावै आज झुनझुना बजावै ॥
दसरथ के आँगन में काक संग खेलै।
किलकि किलकि ललकि ललकि धूरि सीस मेलै।
भुवन मोहना भक्त मनके चुरावै ॥
छतरी हिन्डोला औ शेर हिरन गाय।
गोलि भौंरा चकडोरी मोर के नचाय।
छगन ॰ ॰ ना संग बालक खिलावै ॥
कनक खंभ बीच देखि छाहँ ते डेरात।
नाचि नाचि कूदि कूदि दूध भात खात।
कमल लोचना हँसि भाइनह खियावै ॥
निरखि निरखि भूप लेत बालक उछंग।
सजल नयन शिथिल वयन मन में तरंग।
ठुमुकि चलना चुटकि दै दै नचावै ॥
कौसिला सुकृत देखि देवगन सिहात।
हरिष हरषि बरसि फूल फूलि न समात।
सरस रचना दास "गिरिधर" बनावै ॥

(९०)

दशरथ के ललित ललनवाँ अँगनवाँ खेलै।
पियरी झिंगुली सोहे, भूषण बसन जोहे।
मोहे लखि जननी के मनवा ॥ अँगनवाँ खेलै ॥
कुण्डल कपोल गोल तिलक अलक लोल।
बोलें बर तोतरि बयनवाँ ॥ अँगनवाँ खेलै ॥
कौशिला दुलारे वारे कर पद बाारे बारे।
कजरारे खञ्जन नयनवाँ ॥ अँगनवाँ खेलै ॥
मधुर- मधुर हँसे, अरुन अधर लसे।

बिधु मुख दुइ-दुइठी दशनवाँ ।। अँगनवाँ खेलै ।।
पगन पैजनी बाजे श्याम तन धूरि राजे ।
लखि लाजे कोटिक नयनवाँ ।। अँगनवाँ खेलै ।।
उठि- उठि लरखरे "गिरिधर" नेह करे ।
लसै लोल हियके अयनवाँ । अँगनवाँ खेलै ।।

(९१)

ललन रघुरैया आँगन में खेलै ।
छगन मगन मेरो चलत लरखरत ।
धूरि धरत सिर छैया ।।
पूप देखाई तोतरे बचननी ।
बिहँसि बोलावे तीनों भैया ।।
कबहुँक परिछाहिन तें झगरत ।
कबहुँक नाचे ता ता थैया ।।
श्याम शरीर झिंगुलिया सोहत ।
मुख मोहे शरद जुन्हैया ।।
दै दै सैन दिखावत भूपहि ।
अलि गन लै लै बलैया ।।
कबहुँक जननी निकट चलि आवत ।
कबहुँक ठुमुकि परैया ।।
कब हुँक मातु तोरि तृन निरखति ।
चिर जिओ राघव रमैया ।।
"गिरिधर" मुदित बाल जस गावत
मोद मनावे सब मैया

(९२)

आज सखि राघव अधिक अरे ।
मांगत पुनि पुनि गगन सुधाकर,
आँचर कर पकड़े ।।
करत निहोर अनेक जतन हौं, व्याज अनेक करे ।
मानत कछु न सुसुकि रोवत शिशु,
लोचन सलिल भरे ।।

मींजत कर खञ्जन दृग कमलनि, लोटत भूमि परे ।
भूषन बसन दूरी डारत रिसि
निज अंग धूरि भरे ।।
हौं केहि भाँति मनावहु लालन, मन अति सहमि डरे ।
यह झाँकी मृदु राम लला की,
"गिरिधर" चितहि हरे ।।

(९३)

खेलै भौंरा गोली चकडोरि, राघव ललना ।
झाँकी झाँकि भई मति भोरि, राघव ललना ।।
संग सखा शिशु अनुज मनोहर ।
आनन्द उदधि हिलोरि ।। राघव ललना ।।
एक लै फिरत एक लै फेंकत ।
झुकि झुकि हँसत बहोरि ।। राघव ललना ।।
सरजू के तीर भीर भई भावन ।
धाये नर नारी खोरि खोरि ।। राघव ललना ।।
दसरथ हृदय प्रमोद उमंग अति ।
लिये जनु सुकृत बटोरि ।। राघव ललना ।।
को कहि सकैं अवध कर आनन्द
हिय हुलसानी बानी मोरि ।। राघव ललना ।।

(९४)

राम लाला को आँख भर निहार सखियों ।
टोनावाली आपन टोनवाँ सँभ्हार रखियो ।।
नजरवाली आपन नजराँ सँभ्हार रखियो ।।
रूप के निधान सोहे साँबरो ललनवाँ ।
मुदित झुलावती सुमित्रा जी पलनवाँ ।
चूमि चूमि मुख करत दुलार सखियों
जलद बरन सोहे सुन्दर कुमार हे ।
कौशिला कुमार मेरे प्राण के अधार हे ।
शोभा देखि लाजै कोटि कोटि मार सखियों ।।
मदन कमान जैसी भाल पें तिलकिया ।

लटके कपोल ऊपर कुटिल अलकिया ।
कानन कुण्डल सोहे नयन कजरार सखियों ।।
कमल दसन दुइ दुइ सोहत दतुलिया ।
बदरा के बीच जैसी चमके बिजुरिया ।
बोले तोतरे बचन सुधा सार सखियों ।।
अरुण अधर सोहे गले बनमाल हे ।
पियरी झिंगुली सोहे किंकिनी रसाल हे ।
करें पाँव में पयजनियाँ झनकार सखियों ।।
भरि भरि आँख देखो रामकी सुरतिया ।
हिय में बसावो मेरे मुन्नाकी मुरतिया
लिजै राइ लोन तुरत उबार सखियों ।।
निगम अगम राम सुगम दिखइले ।
कौशिला की गोद ब्रह्म बेटा बनके अइले ।
"गिरिधर" बालरूप नित्य बलिहार सखियों ।।

(९५)

कौशल्या जब बोलन जाई ।
ठुमुकि ठुमुकि प्रभु चलहिं पराई ।।

× × ×

आजा निकट रघुरैया, कौसल्या तोहे लाड़ करे ।
आजा निकट मेरे छैया, कौसल्या तोहे लाड़ करे ।।
खेलत लरिकन घरिया बीती ।
तव दरसन हित अँखियाँ रीती ।
मुनिजन के सुख दैया, कौसल्या तोहे लाड़ करे ।
ठुमुकि ठुमुकि धावत मेरे बारे ।
श्रमित कमल पद अति अरुणारे ।
छगन मगन चारों भैया ।। कौसल्या तोहे लाड़ करे ।।
भोजन हित तोहे तात बुलावत
तुम बिनु कारन गहरू लगावत ।
जोहे सुमित्रा मैया ।। कौसल्या तोहे लाड़ करे ।।
जोगी मुनि जेहिं ध्यान न पावत ।

हौं केहि भाँति धरन तेहिं धावत ।
लेती मैं तेरी बलैया ।। कौसल्या तोहे लाड़ करे ।।
हाथ लिये मोदक मैं ठाढ़ी ।
सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी ।
रघुकुलचन्द रमैया ।। कौसल्या तोहे लाड़ करे ।।
आजा ललन तोहे दूध पिआऊँ ।
आँचर पट महँ ललकि छिपाऊँ ।
"गिरिधर" ऱ्ष बढ़ैया ।। कौसल्या तोहे लाड़ करे ।।

(९६)

अवधपति रानी पुन्य कवन किये रे ।
ब्रह्म निरीह सुभग शिशु ह्वै तव,
थन पय ललकि पिये रे ।।
कवन विधान नहाइ सुरसरि ।
कवन दान दिये अँजलि भरि भरि ।
जाते भये तेरो सुत श्री हरि ।
सुकृत न जगत बिये रे ।।
पूजे कवन पितर गुरु देवा ।
तोषे कहु केहि विधि महिदेवा ।
रंगनाथ करि केहि विधि सेवा ।
तौल कबहिं धीये रे ।।
कबहिं आकाश में दीप बराये ।
भूसुर गन केहिं भाँति जिवाये ।
केहि तप बल तव गृह हरि आये ।
सुत सुख तोहिं दिये रे ।।
जेहिं लगि जप तप करें मुनि ज्ञानी ।
पूत भयेउ सोइ सारंग पानी ।
सुकृत पुँज कौसल्या रानी ।
लालति अंक लिये रे ।।
गुरु तिय बचन सुनत पुलके तन ।

गहे चरन रानी प्रमुदित मन ।
गाइ गाइ शिशु राघव गुन गन ।
"गिरिधर" सुखहिं लिये रे ।।

× × ×

जय नख सिख सुकुमार शिशु, सुषमा अंग अपार ।
जय"गिरिधर" के प्राणधन, जय मुन्ना सरकार ।।

(९९)

श्री भुषण्डि दर्शन

अवधरानी अचरज एक भयो ।
श्याम रंग सब अंग काग इक , दरशन आज दयो ।।
रोम रोम जाके राम रम्यो है, अति विचित्र उपयो,
राम राम नित रटत मगन ह्वै, उमगत प्रेम नयो ।।
जूठन खात उड़त अंगना बिच सठता जनु अथयो,
जाय धरन शिशु घुटुरन धावत, मुख बिच मेलि लयो ।।
उँगलि बहुरि कर परसि शीश पर राघव अभय दयो,
किलकि धाइ पुनि पकरि रहस बस लीलहि प्रभु खीझयो ।।
कुलगुरु तिय बर बचन मातु सुनि, दृगन्ह नीर उमग्यो,
धन्य भुषुण्डि बाल लीलहि तेहि"गिरिधर" प्रभु रीझयो ।।

(१००)

रिमझिम रिमझिम बरसे बदरिया भीजैं राघव लाला ना ।
बरसा रितु अति सुखद सुहाई कारी बदरिया छाई ....रामा
चम चम चमके अवध अटरिया, भीजैं राघव लाला ना ।।
कोयल कू कू गीत सुनावे लालन सुनि हरषावें ... रामा ।।
बिहँसें रघुवर की महतरिया, भीजैं राघव लाला ना ।।
पकड़न मातु सुमित्रा धावैं आँगन तें लै आवें, ... रामा
गीली हरि की पियरी चुनरिया, भीजैं राघव लाला ना ।।
तारी दै दै कुँवर बर नाचें "गिरिधर" लखि लखि राचे ... रामा
गावति कजरी अवध गुजरिया, भीजैं राघव लाला ना ।।

(१०१)

मैं तो लाई खिलौने आज तुम्हारे लालन को
मैं तो लाई खिलौने आज अवधपति लालन को ॥
चकई भौंरा घुनघुना गोली रचे बिबिध बिधि साज ॥
काशी तें करी जतन लै आई सोने को सकल समाज ॥
सबरे भगत खिलौना बनिके जुरि गै निज निज काज ॥
खेलहिं हँसी इन्हहिं संग लालन होई अचल कुलराज ॥
रिद्धि सिद्धि कछु हौं नहीं चाहती सुख सम्पती नहीं काज ॥
अवध निवसि "गिरिधर" प्रभु पालिहौं रुचि सुख सकल समाज ॥

(१०२)

जरा चलके अयोध्या में देखो, राम सरजू नहाते मिलेंगे ।
बालकों के जो संग में बिहरते, कुछ मधुर मुस्कुराते मिलेंगे ॥
जो था व्यापक निरामय निरंजन, हो गया वह प्रगट ब्रह्म साजन ।
जहाँ दशरथ मुकुन्द को मुदित मन, गोद में ले खिलाते मिलेंगे ॥
जहाँ घुँटनों के बल से बिचरते, बाल लीला मधुर मंजु करते ।
अपने लाड़ले भुसुण्डिजी को कर से, राम लड्डु खिलाते मिलेंगे ॥
जहाँ करते मधुर दिव्य लीला, मोहिनी विश्व की पुण्य शीला ।
अपनी श्याम शरीर छटा से, लोक लोचन चुराते मिलेंगे ॥
जो हैं कौशल्याजी के दुलारे, भावुकों के जो आँखों के तारे ।
वे मनोहर वदन मोहिनी से, कुछ मधुर मुस्कुराते मिलेंगे ॥
जहाँ भावुक भरत पादुका को, अपने उर से लगाते मिलेंगे ॥
जहाँ हनुमत सहित श्याम सुन्दर धारे सायक धनुष ज्ञानमंदिर ।
इस अकिंचन अनाथ "गिरिधर" को, दिव्य करुणा लुटाते मिलेंगे ॥

(१०३)

ललन मेरे किनको किनारे लगइ हौ ॥
भव प्रवाह मँह बहत घनेरे,
आवत नहीं पद पंकज नेरे,
नित कर टेक सहारा न दइहौ ॥
मातु बचन सुनि प्रभु मुसुकाने,

राघव कहत बचन रस साने
सन्मुख होत पगार बनइहौं ॥
बहत प्रवाह दीप बहुतेरे,
लहत करम बस विविध थपेरे,
कितने को ललन तीर पै लइहौ ॥
लियो न मातु सबनि को ठीको,
मैं शरणागत को लायक नीको,
आये शरण मैं पार लगइहौं ॥
दीपावलि की मधुर यह झाँकी,
बिलसति नित भक्तन उर बाँकी,
"गिरिधर" राघव पर बलि जइहौं ॥

(१०४)

माई री मैंने एक अचरज आज देख्यो ॥
साँची कहहु झाँकि वह झाँकी मैं निज नयन सफल करि लेख्यो, ।
प्रात गयी गनपति पूजन हित लै निज संग राम रघुराई।
धूप दीप नैवेद्य विविध करि मोदक मंजुल जुगल चढ़ाई।
मैं दृग मूँदि खोलि एक पल मँह जो कछु लख्यो सो कहि नहि आवत।
सूँढ़ बढ़ाई गणेश राम कँह देख्यो मोदक मधुर खवावत
सूँढ़ मेलि प्रभु पंकज मुख मँह खात सरस उपमा एक आवे।
मनहु श्वेतघन नील जलद मँह पीत पराग धरत छवि पावे।
करत न नेकु किलकि शिशु राघव खाति चपरि पुनि हाथ बढ़ावे।
लखि गनपति की प्रीति ललन जू पै गिरिधर जूठन हित ललचावे।

× × ×

प्रथम पूज्य निज पूज्य को मोदक रहे खियाय।
प्रीति अलौकिक दुहुन की लखि"गिरिधर" बलि जाय ॥

(१०५)

बनालो आज सर्वस तुम खिलौने बन के आए हैं।
लुटा दो आज सर्वस तुम खिलौने बन के आये हैं ॥
जिसे नित नेति कह कह कर, सदा श्रुतियाँ रिझाती हैं।

अवध के मित्र गण उनको सखा कहकर बुलाए हैं ।।
न आते हैं जो सपनो में यति के ध्यान में ईश्वर ।
अवध की वीथियों मे वे ललन बन कर सिधाये हैं ।।
निगम को भी अगम व्यापक सदा साकेत में राजे
वही दशरथ के आँगन में तिलक आनन्द मनाये हैं ।।
पकड़ पाते नहीं मुनिगण कभी भी जिसको हाथों से ।
उन्हीं " गिरिधर" प्रभु को अब जननी आँचल छिपाये हैं ।।

(१०६)

पलंग पर पौढ़हु राजकुमार ।।
बासर बाल सखन्ह संग क्रीडत शिथिल भयो शृंगार ।
अब राजिये पंलग पर लालन हरहु सकल भय भार ।।
आई निशा उदित विधु अम्बर उडुगन लसत अपार ।
मनो मुनिगन रघुवंस तिलक के बरनत पावै न पार ।।
अवधनगर भामिनी मुदित मन घर घर मंगलचार ।
निज उर तव आरती उतारति मनिगन भूषण वार ।।
सुख सोवहु श्रम खोवहु लालन, रामभद्र सरकार ।
प्रात सपदि जागिये बिहँसी मुख "गिरिधर" प्राण अधार ।।

(१०७)

शिशुन्ह समेत उड़ाव चंग रघुकुल कमल पतंग ।
सखिन्ह सहित ऋषि तिय निरखि बोली सहित उमंग ।।

× × ×

लालनजू धीरे पतंग उड़ाओ ।
धीरे पतंग उड़ाओ, लालनजू ....।।
चलत समीर तीर सरजू के ।
शिशुन्ह उमंग बढ़ाओ ।।
उड़ि जनि जाइ वायु के झोकनि ।
केलि को सफल बनाओ ।।
तजि जनि देहु कमल करतें एहि ।
नातो सरस निभाओ ।।
ढीले गिरति पराभव रज भरि ।

याको न महि में मिलाओ ॥
खेंचत टूटि जाइ डोरी जनि ।
चंग को मान न नसाओ ॥
तव कर टेकि वायु तें नभ उड़ी ।
अस संयोग बनाओ ॥
"गिरिधर" प्रभु या मन पतंग को ।
अभय निशान सजाओ ॥

(१०७)

आजु हरि जेवत विविध विधि जेवना ॥
कनक थार भरे बहुविधि व्यंजन ।
आम सरस फल मीठ सुभेवना ॥
हय पर चढ़े धनु सायक लैकर ।
निरखत चकित हो विलोल खिलौना ॥
हँसि हँसि मातु सुमित्रा खियावत ।
गुरु तिय कहे लाल मृदु फल लहुना ॥
दशरथ कौशल्या अवलोकत
कहत सखिन ये पदारथ बहुना ।
कछुक खात कछुक हय. सिरफेंकत ।
नृप कह रानिहिं राम छबि चहुना ॥
"गिरिधर' को ठाकुर अति सुन्दर ।
राघव सम त्रिभुवन महँ शिशु कहुना ॥

(१०९)

अवधपति आज जेवावत राम ॥
कनक थार पकवान मिठाइ व्यंजन विविध ललाम ॥
कौसल्या लिये हाथ कनक घट चँवर सुमित्रा ढारे ।
थारी हाथ कैकेयी प्रमुदित पुनि-पुनि हरिहिं निहारे ।
बढ़्यो कवल मेल्यो मुख भीतर मिरची दशन तल आई ।
तीक्ष्ण लग्यो नयन भरि आयो, रोइ पड़े रघुराई ॥

लखि गुरु बधु डाटि सब रानिन्ह, राम अंक भर लीन्हें ॥
आँचर आँसू पोंछि विधु आनन सुमधुर मोदक दीन्हें ॥
लखि सुत दशा हँसत अति दशरथ हरष विवस सब रानी ।
यह सुख समउ कहें किमि" गिरिधर" सुमिरि मगन भइ बानी ॥

(११०)

आज थारिन्ह सजो जेवनार, जेवों राम लला ॥
छप्पन ोग छतीसों व्यंजन,
षटरस रुचि अनुसार ॥ जेवों रामलला ॥
नवधा भक्ति की रुचिर मिठाई,
मेवा स्वाद अपार ...... जेवों रामलला ॥
सरयु जल पावन अति निर्मल,
शीतल सुधा उदार ..... जेवों रामलला ॥
विविध भाँति पकवान बनाये,
भोजन विविध प्रकार ....जेवों रामलला ॥
अनुज सखन्ह मिलि हँसि हँसि जेवहुँ ,
दशरथ राजकुमार ......–जेवों रामलला ॥
रुचि अनुरूप कलेऊ कीजिए,
गाऊँ मैं मंगलचार ....जेवों रामलला ॥
हमहि कृपानिधि जूँठन दीजै,
गिरिधर प्राण अधार ....जेवों रामलला ॥

(१११)

आजु हरि हँसि हँसि भोग लगावत ।
लखि जननी सुख पावत ॥
कछुक खात कछु अनुजन्ह सौंपत, कछु कछु धरनि गिरावत ।
कछुक चपरि चल काग बोलि कै, बरबस बिहँसि खवावत ।
बासन्ह मेली हाथ रघुकुलमणि, आँचर माँहि लगावत ।
राम लला की यह शिशु झाँकि "गिरिधर चितहिं चुरावत ॥

(११२)

★ मिथिला-आगमन ★

अवध नगर से पधारे दोउ भैया।
रिषि संग सोहें लखन रघुरैया ॥
साँवरे किसोर गौर सुन्दर है जोरिया,
तनु अनुहरे सखि चन्दन की खोरिया,
मन्द-मन्द मुसुकात दशरथ के छैया ॥ रिषि संग....
चौतनी सुभग शीश पीत पट काछे,
मिथिला डगर सखि सोहे आगे-पाछे,
मोह लेन् हमार मन लछिमन रमैया ॥ रिषि संग...
तून कटि कसे लसे कर शर धनुहियाँ,
कोमल कमल पाँव नाहिन पनहियाँ,
आनन बिलोकि लाजे कोटिक जुन्हैया ॥ रिषि संग...
ताडका संहारि के सुबाहु रन मारे,
मुनि तिय उधारि आज मिथिला पधारे,
लोचन अतिथि भये मुनि जन सुखदैया ॥ रिषि संग...
रूप पारावार सखि सुठि सुकुमार हैं,
सियाजू के जोग बर कौसिला कुमार हैं,
"रामभद्र" ईश होइहैं जनक के जमैया ॥ रिषि संग...

(११३)

बालक वृन्द समेत प्रभु, कौसल्या के गेह।
करत कलेऊ मुदित लखि, गिरिधर मगन सनेह ॥

× × ×

आज हरि जेवत विविध विध जेवना
कंचन थार भरे बहु व्यंजन कनक कटोरन उपमा कहु ना
मुदित सुमित्रा चँवर डुलावती, कैकेइ लखि - लखि सुख रस भेवना
कंचन थार विचित्र मिठाई कनक कटोरन धरे बहु जेवना ॥
कौसल्या मुख कवर खिलावती अलिगन चहुदिसि भरे बहु सेवना
मातु अरुन्धती दृग जल सींचति कहे लाल सरयू के शुचि जल पिवना।
"गिरिधर" उमगि उमगि छवि निरखत राघव करत सकेलि-कलेवना

(११४)

ललन प्यारे अयोध्या के मुदित जेवनार को जेवों।
दुलारे कौसिला के हे मुदित जेवनार को जेवों।
बनी नैवेद्य की थाली, मिठाई की छटा न्यारी,
मुदित मुसकाके हे राघव, मुदित जेवनार को जेवों ।।
मगन कोसल्सुता लखकर, तुम्हारी चन्द्र मुख शोभा,
आयोध्या ५. रतन राघव, मुदित जेवनार को जेवों ।।
तुम्हें यदि भाव से कोई, खिलाता वो अधिक रुचता।
सुरति के भाव को राघव, मुदित जेवनार को जेवों ।।
ग्रहण नैवेद्य को करके छिपो "गिरिधर" के मानस में।
चपल शिशु श्याम घन राघव, मुदित जेवनार को जेवों ।।

(११५)

खेलन्ह को नहिं जइहौं जननि मैं तो आजु एक कपि लइहौं
अरुन बदन कंचन तनु शोभा,
लम्बी लूम लखत मनु लोभा
मैं तो वा बिनु तोष न पइहौं ।।
चंचल अति चितवन को झाँकी ,
वाको देखि देखि लोचन जुड़इहौं
उछलि उछलि जाऊँ संग काके,
सरजू तट खेलिहौं संग ताके,
वाको नयना का पुतरी बनइहौं ।
जब लगि मैं वह कपि नहि पइहौं,
तब लगि तेरी गोद न अइहौं,
तेरो लालन कबहुँ न कहइहौं ।।
भोजन शयन कछु नहीं भावत
पवन–तनय हित मन ललचावत,
वापे "गिरिधर" प्रभु बलि जइहौं ।।

(११६)

शिशु राघव के मिलन हित हनुमानजी की उत्कण्ठा

दरशन दीजै राघव हमें, अव कबलौं अधिक तरसैहौं ।।
तव कारन भूतल पर आयो ,
बानर तनु धरि आस लगायो
कब मानस की प्यास बुझैहौं ।।
सूखि गये आँसू आखिन्ह के,
कब करुणा सलिल बरसैहौं ।।
चाहत चलत प्राण दरशन बिनु,
झलकत तन कररूह परसन बिनु,
कब मन के मनोरथ पुरइहौं ।।
अब हनुमान के प्राण बचाओ ,
आवो सपदि कृपानिधि आवो
दास "गिरिधर" को कब अपनैहौं ।।

(११७)

कोटि कला करि चातुरि चारु रचा विधिहुँ मानो काम अथाई ।
चित्र विचित्र सुभित्ति मनोहर माणिक मोतिन्ह चौक पुराई ।
पद्‌भ सुराग खचे महिपे, कहि जाई न भूपति की अंगनाई ।
"गिरिधर" ईश जहाँ रघुनन्दन खेलत बालक चारिओ भाई ।।

आलीरी काली नयनन्ह लाभ लह्यो
औचक चितइ चपल घन सुन्दर ,
जब शिशु अँचर गह्यो ।।
पलक उठाइ बिलोकन लागी,
नख शिख रूप परम बड़ भागी,
करते सुमन थाल मैं त्यागी,
धीरज, मन ना रह्यो ।।
किलकत कछु कछु धूरि विधूसर,
लटकट कुटिल अलक मुख ऊपर,
कंज कोशगत जनु बहु मधुकर,

मद छकि घेरी रह्यो ॥
रामहिं निरखि हुलास भरयो उर,
चूमि लई तेहिं काल मुखर तर
पुलक शरिर छरत थन रस भर,
मुख ते कछु न कहयो ॥
ओटि लै लखति राम महतारी,
हँसति सुमित्रा दै दै तारी,
"गिरिधर" प्रभु पर गै बलिहारि।
अम्बक अम्बु बह्यो ॥

(११८)

★ विंश्वामित्रजी का वात्सल्य ★

शयन अब कीजिये राजीव नैन ॥
दिवस गयो रजनी अब आई,
खग गण कल-कल गिरा सुहाई,
पलंग पौढ़िये श्री रघुराई, रघुपति करुणा ऐन ॥
मुनिगण निज- निज सदन विराजत,
उडुगण सहित चन्द्रमा राजत,
अवधपुरी मणि दीपक साजत, सहज सुहावनि रैन ॥
भूरि भाग सुकृति जन जोहैं
निज-निज नीड़ बिहँग अलि सोंहैं
भृकुटि छटा सबको मन मोहैं ,"गिरिधर" को सुख दैन ॥

(११९)

★ विश्वामित्रजी की चिन्ता ★

आजु मैं केहि विधि प्रभुहिं जगाऊँ ।
मंगलवाद्य सुनत जो जागत सो अब मैं कहाँ बजाऊँ ॥
कनक कलस सरजू जल निर्मल आज कहाँ मै पाऊँ ।
भूरि भाग माता कौसल्या आज कहाँ ते लाऊँ ॥
केहि विधि कहहुँ बचन प्रिय सुन्दर, राग कवन मैं गाऊँ ।
"गिरिधर" प्रभु के बदन कमल पैं बार -बार बलि जाऊँ ॥

(१२०)

रामजी पहुनवा अइले मिथिला नगरिया हे ।।
सुन्दर सोहे कुमार, रूप सुधा पारावार,
भरु भरु भरु आलि लोचन गगरिया हे ।।
आछे पीट पट काछे, लखन सोहें पाछे पाछे,
आछे, आछे दखि देखि, भूल सब गुजरिया हे ।।
रूप की मोहिनी डारी, मोहि लेलै नर नारी,
"गिरिधर" प्रभु अइले, भाव की डगरिया हे ।।

(१२१)

कनि हेरो रघुनाथ हमारी ओरिया
सुन्दर श्याम गौर मनोहर,
अँखिया में बसली मधुर जोरिया ।।
मिथिला में आके तू जादू चलइल
मोहि लेल मिथिला के सब गोरिया ।।
नयन चलाके मधुर मुसुका के,
कैल जनक जू के चित्त चोरिया ।।
"रामभद्राचार्यहिं" हँसि हेरहु
जलज विलोचन की कोरिया ।।

(१२२)

मालिनी और प्रभु का प्रश्नोत्तर

प्रश्न– कवन नगर के पथिक दोउ श्याम गौर
कहाँ तेरो पिता जी के नाम धनुधरिया
कवन पठाये तुम्हें काहे इते आये बाग
कहाँ नाम सुखधाम कहुँ धनुधरिया ।।

उत्तर– पश्चिम अवध के दुलारे हम दोउ बन्धु
दशरथ पिता जी के नाम है मलिनियाँ
गुरु जी पठाये हम फूल हित आये बाग,
राम औ लखन हमरो नाम है मलिनियाँ ।।

मालिनी की अनुमति—

बड़ो भाग मिथिला के बाग को पधारे आप
मिथिला के धन्य नर- नारी धनुधरिया
रूप के निधान भगवान करुणानिधा
लीजै बन फूल को उतारी धनुधरिया ॥

प्रश्न— नयन कमल औ गुलाव से अधर तेरे
नाभी सरवर बर बारी धनुधरिया,
तुम फुलवारी रूप परम अनूप राम
कौन हेतु आये फुलवारी धनुधरिया ॥

प्रभु का उत्तर—

मालिनी वचन सुनि बोले रघुवंश लाल
साचे हम फुलवारी रूप हैं मलिनियाँ
जनक कुमारी फुलवारी मिलिने के हेतु
आये हम वाग हैं अनूप हे मलिनियाँ ॥

मालिनी का प्रश्न

केस को बिलोकि सब मोर छिपि जइहैंहि
खंजन नयन अटकैहें धनु धरिया
चन्द्रमुख चखिहैं चकोर आइ घेरि घेरि
कौन विधि सुमन को पइहैं धनुधरिया ॥

लक्षमण जी का उत्तर—

गुरु ढिग सिखे हम बान के विधान सब
प्रबल प्रतापहुँ के पुंज हैं मलिनियाँ
चिरइ भिगाइ सब लइहैं फूल-फल हम
"गिरिधर" प्रभु लता कुंज हे मलिनियाँ ॥

(१२३)

कहियत भिन्न न भिन्न

तुम रघुकुल कैरव चन्द्र राम, मैं हूँ फिर तेरी सीता ॥
तुम नील सरोरुह मेघश्याम, मैं बिजली परम पुनीता ॥
तुम निर्गुण व्यापक ब्रह्म रूप, मैं हूँ फिर तेरी माया ।

तुम नित्य बुद्ध परिशुद्ध आत्म, मैं हूँ फिर तेरी काया ।।
तुम निर्मल सागर वारि राम, मैं हूँ फिर तेरी लहरी ।
मैं हूँ तन्त्री तुम तार राम, तुम गीत और मैं गहरी ।।
तुम रघुकुल कैरव चन्द्र राम, मै हूँ फिर तेरी सीता ।
तुम सुरतरु पावन पारिजात, मै तेरी लता पुनीता ।।
तुम परमेश्वर हो शक्तिमान, मैं तेरी शाश्वत शक्ति।
तुम ज्ञान अखण्ड कृपानिधान, मैं हूँ "गिरिधर" उर भक्ति।।

(१२४)

तोहे राखु सजनवा कवन विधि से ।।
हियरा में राखु नयन मोरे तरसे,
नैनों में राखु तो जिया तरसे ।।
नयन निहारुँ आपन पौ वारुँ.
आरति उतारुँ रोम-रोम हरषे ।।
"गिरिधर" प्रभु सिय सुमिरि भोरि भई,
प्रीति पुरातन लघु बरसे ।।

(१२५)

मैं तो राघवजू को देखके लुभाई गई री......।।
सीता सजनाको देखके भुलाय गई री.......।।
कोटि मनोज सुभग सिय साजन
नख सिख निरखि ठगाय गई री.......।।
माथे मणि मौर तिलक श्रुति कुण्डल
अलके तो चितहि चुराय गई री ......।।
खंजन नयन बदन बिधु निन्दक
चितवन की जादु चलाय गई री........ ।।
दाड़िम दशन अधर अरुणारे
मुसुकन छवि मन भाय गई री .... ।।
अंग अंग लसत विवाह विभूषण
शोभा दृगन्ह समाय गई री .... ।।
हम सिय सहित अवधपुर जाईबे
"गिरिधर" प्रभु पे बिकाय गई री .... ।।

(१२६)

सखी मिथिलेश बगिया में, कुँबर दो आज आये हैं ।
जिन्हे अबलोक कर सहसा, मदन कोटिक लजाये हैं ।।१।।
सलोने साँवले गोरे बयस में है अभी थोड़े ।
बड़े भोरे किशोराकृति, सकल लोचन चुराये हैं ।।२।।
पखी है मोरः सिरपें, तिलक रेखा भी हैं बाँकी ।
मनोहर भौंह की झाँकी, कमल लोचन सुहायें हैं ।।३।।
कपोलों की छटा न्यारी, बदन बिधु कान्ति है प्यारी ।
अधर बिन्बा से मुसुकाते, सभी के मन को भाये हैं ।।४।।
हृदय पर मंजु बनमाला, श्रवण सौन्दर्य का प्याला ।
बसन भूषण मनोहर तम, जुगल दोने बनाये हैं ।।५।।
भुजायें मंजु करि करसी, प्रभावर नाभि सर सरसी ।
बिलसता पीत पट कटिपर, निरख जी को लुभायें हैं ।।६।।
चरन जनभीति के मोचन, सिया करलो सफल लोचन ।
चलो देखो इन्हीं के गुण, मुदित "गिरिधर" भी गाये हैं ।।७।।

(१२७)

"सुमिरि सीय नारद बचन, उपजी प्रीति पुनीत"
(सीताजी की प्रभु मिलन के लिये विकलता)

बीत गई सारी रैना मेरे राम न आये ।
घरिक पड़े नहीं चैना, रघुनाथ न आये ।
कैसेक धीर धरु मोरी सजनी ।
विरह की अगिनी बुझै ना ।। मेरे राम न ...।।१।।
पागल ज्यों पीय पुकारें ।
निमिषहुँ नीन्द पड़ै ना ।। मेरे राम न ...।।२।।
केहि कर से पतिया मैं भेजुँ ।
प्रियतम निकट बसै ना ।। मेरे राम न ...।।३।।
जनक सुता कहँ अवसि मिलो प्रभु ।
तुम बिन चैन पड़ै ना ।। मेरे राम न ...।।४।।
"गिरिधर" प्रभुहि भजति भई भोरि ।
मुख नहीं आवे बैना ।। मेरे राम न ...।।५।।

(१२८)

सीता की धनुष के प्रति प्रार्थना

ऐ रे धनुष तूँ है निष्ठुर परूष
कहिं कलइ मुरकि नहीं जाय ।।
प्राननाथ कोमल अति मोरे,
आये धनु तोरन ढ़िग लोरे ।
सूरज किरन मेरे पंकज सुमन,
कहिं धूप महँ जनि मुरझाय ।।
ईस करहुँ मनुहारि हमारी,
हरहु धनुष गुरुता अति भारी
सीता सजन कौसिला के ललन
नाथ "गिरिधर" के झुकि जनि जाय ।।

(१२९)

विवाह पंचमी

घर के सुन्दर मधुर रूप लालन,
देखने आप मिथिला को जइयो ।
चारु शोभा सदन इन्दु आनन,
प्यासे नर-नारियों को दिखइयो ।।
दिव्य भूषन बसन तन पे धारे,
दोनों दशरथ नृपति के दुलारे,
रूप की मोहिनी सब पे डारे,
चारु चितवन की जादू चलइयो ।।
देख तुमको जनकपुर की नारी,
होगी बड़भागिनी औ सुखारी,
उनके मन पे ठगौरी-सी डारी,
उनके लोचन सफल तुम बनइयो ।।
छू के मंजुल चरण रज तुम्हारी,
हो न जाये रतन सब ये नारी,
लगता मुझको यही भय है भारी,
प्रेम संयम कठिन ये निभइयो ।।
जाओ सुख से जनकपुर को जाओ,
सबके जीवन सरस तुम बनाओ,
देख कर के नगर शीघ्र अइओ,
दास "गिरिधर" के भव भय नसइयो ।।

(१३०)

विवाह पंचमी

मिथिला के भण्डप बिराजे रघुराज आज,
दूलह समाज साज साजे चितचोर है।
ब्याह के विभूषण बसन अंग अंग लसे,
झालर हरात माथे मञ्जु मणि मौर है।
मन्द मन्द मुसुकात लोचन जलद चारु,
चितवत चहु ओर तिरछे दृगकोर है।
"रामभद्राचार्य"हेरि हेरि के निहाल होत
भुवन विमोहे आज कौशिला किशोर है।

(१३१)

आज मण्डप बिराजे देखो सिया के पिया ॥
एड़ी में महावर मंजु लसत बिअहुती धोती,
मरकत तडित ज्योति चोरत जिया ॥ देखो सिया.....
सुषमा शृंगार कैंधो सीय सुखसार कैंधो
प्रति अंग मार कैंधो बास किया ॥ देखो सिया.....
माथे मणि मंजु मौर शुभगण को शिरमौर
तिरछे नयन कोर हरत हिया ॥ देखो सिया.....
कनक कुण्डल चारु मंजु दृग कजरार
अधर सु अरुणार मन बस किया ॥ देखो सिया......
"गिरिधर" प्रभु छवि कहि न सकत कवि
मृग मृगी नर नारी देखि ज्यों दिया ॥ देखो सिया.....

× × ×

रूप अनूप बिलोकि के पुर नर नारी विभोर।
रामचन्द्र मुखचन्द्र अरु गिरिधर नयन चकोर ॥

(१३१)

ऐसन स्वरूप हम अखियो न दिखले हे रघुनन्दन दुलहा,
लाजे लखि- कोटि-कोटि मार हे रघुनन्दन दुलहा ॥
अवध सुकृत बर राम प्रकट उलेन हे रघुनन्दन दुलहा,

मिथला सुकृत ससुराल हे...... ॥
कौशिला की कोख पर तृन तोर वारौं हे रघुनन्दन दुलहा,
समधिन सुनयना बलिहार हे रघुनन्दन दुलहा ॥
दशरथ सुकृत पुञ्ज लोक में उजागर हे रघुनन्दन दुलहा,
समधी जनक पुन्यसार हे रघुनन्दन.........॥
पुन्यरासि सकल बराती औ धराती हे रघुनन्दन दुलहा,
धन्य- धन्य जीवन हमार हे रघुनन्दन.......॥
मिथला अवध लसे सिन्धु नित डूबल हे रघुनन्दन दुलहा
"गिरिधर" के भाग अपरम्पार हे रघुनन्दन दुलहा ॥

(१३३)

दूलह रूप सजे रघुनन्दन, कोटि मनोजन की बलिहारी।
साथ बराती छबीले बने सब, रूप अनूप सुवेश सँवारी ॥
जामा धरे अभिराम कसे कटि पीत पिछोरी की शोभा नियारी
मानो मरक्कत के गिरि पे लसि दामिनि की द्युति सी उजियारी

× × ×

ऐसन दुलहा न देखौं नजर से।
मानो बिरचे विधाता स्वकर से स्वकर से ॥
धोती बियहुती की शोभा निराली,
बादल पे मानो है दामिनी उजियारी,
रूप सुन्दर सँवारे सुघर- से- सुघर- से ॥
एड़ी महावर सुहावन सुभाए,
देखि-देखि मुनिगन के मानस लुभाए,
बाजे नूपुर पगन में मुख- से- मुखर से ॥
भूषण जड़ाउ लसे मुखवा में पान है,
हाथ में रुमाल सोहे मन्द मुसुकान है,
चूवैं अमृत सो पल्लव अधर-से-अधर से ॥
देखि के विभोर भई मिथिला की नारी,
राघव की शोभा पे तन मन वारी,
धाइ खोरिया बहारे अँचर से अँचर सें ॥
लखि- लखि दुलहा जुड़ावे निज छाती,
नाचे प्रेम मुदित घराती- बराती
भये लाखों निहाल 'गिरिधर''-से गिरिधर-से ॥

(१३४)

झुक जइयो ललन इक बार, किशोरी मेरी छाटी सी।
सुनियो विनय दशरथ के लाला,
पहिरो आज विजय जयमाला,
हम गावें मंगल चार ।। किशोरी मेरी ...।।
व्याह उछाह सुमंगल गावे
नगरवासी लोचन फल पावे
तब जुगल चरण बलिहार ।। किशोरी मेरी ...।।
"गिरिधर" प्रभु झुकि माला लीजै
लोचन लाभ सखिन्ह कँह दीजै,
हम गावें सुमंगल चार ।। किशोरी मेरी ...।।

(१३५)

गले आज जयमाल प्रभु के पड़ी है।
सखी देखो कैसी ये मंगल घड़ी है ।।१।।
महेश्वर धनुष राम ने आज तोड़ा।
सिया से मधुर नेह का ताग जोड़ा।
चकोरी सरीसी मगन भाव रस में।
लिये हाथ जयमाल सीता खड़ी है ।।२।।
जनक की मिटी आज चिन्ता निराशा।
मिटी दुष्ट भूपों की निज भाग्य आशा।
खुले आज सौभाग्य मिथिला जनों के।
लसे राम के उर में मुक्ता लड़ी है ।।३।।
पढ़े बेद ब्राह्मण मुदित उच्च स्वर में।
भरा आज आनन्द अम्बर नगर में।
नहीं आज सुख से समाता जनकपुर।
गगन में हुई पुष्पमाला झड़ी है ।।४।।
मुदित मंगलाचार सखियाँ हैं गाती।
विबध देवियाँ नाचती जी लुभाती।
हुई रानियों की प्रफुल्लित है छाती।
जुगल जोड़ि "गिरिधर" के उर में जड़ी हैं ।।५।।

(१३६)

रघुबर भेल सुभगवर हे, मैथिल सुखकारी ।
सीता मेलि दुल्हनिया हे, सुन्दर अति न्यारी ।
श्यामल बरन सुहाबन हे, मुखचन्द्र लुभाये ।
चम्पक बरन सिया के हे, रति कोटि लजाये ।
मंडप मध्य बिराजति हे, सुन्दर बर जोरी ।
"गिरिधर" प्रमुदित देखथि हे, शोभा नहीं थोरी ।

(१३७)

आज राम उर राजे जयमाल सखिया,
आज मिथिला के बासी हैं निहाल सखिया,
सीता स्वयंवर पुरारि धनु तोरयो,
बड़े-बड़े भूपन मान मद मोरयो,
शोभि रहे कौसिला के लाल सखिया ।।
गावत गीत मुदित नरनारी,
बरषि सुमन भये विवुध सुखारी ,
आज बाजि रहे बाजने रसाल सखिया ।।
बाजत झाँझ भेरि शहनाई,
मंगल गावत मुदित लुगाई,
आज राजा निहार सब बेहाल सखिया ।।
जनक को प्रण जयो सीता को मंगल,
देखि देखि रहषे सकल भक्त मण्डल,
"गिरिधर" को आनन्द विशाल सखिया ।।
रानी सुनैना जी आरती सजावें,
नर नारी गज मोती माणिक लुटावें,
हिय हरषे जनक भुआल सखिया ।।

(१३८)

नीको बड़ लागै मोहें जनक जमइया ।।
आगे पाछे सोहे आछे पीतवर पट काछे,
दोऊ कुँवरन बिच लसत लुगइया ।।
सुभग निषंग कसे नूतन उमंग लसे,

धरे कर धनु बाण मन के हरइया ।।
रूप के अगार सुकुमार बल पारावार,
सुकृत शृंगार देखो कौसिला के छैया ।।
लोचनन लाभ देत बन्धु बनिता समेत ।
"गिरिधर" भु आये मिथिला के ठइया ।।
कहत विभोर भये नर नारि चित दये,
जीवन को लाभ लये देखि दोनों भइया ।।

(१३९)

दूलह देखो विदेह लली को ।।
कनक मुकुट सिर तिलक भाल पर,
केस ऐ गुच्छा सोहे कुसुम कली को ।।
विदेह लली को मिथिलेश लली को ।।
अरुण अधर पूरन विधु आनन
कमल कपोल मन मोहे छली को ।।
नख सिख व्याह विभूषण भूषित
उर पर हार लसे मोति लड़ी को ।।
मुसुकानि मधुर तिरछी सी भौंहे ।
कर कंकन सोहे अतुल बली को ।
मिथिला के लोग मोल बिनु बिक गये
भान न रहयो गृह धाम गली को ।।
"गिरिधर" प्रेम पुलकि मन बरनत
भूरि भाग सिया लाड़ली लली को ।।

(१४०)

एक कहें हरि व्यापक ब्रह्म निरामय दारिद दुःख दमैया ।
एक कहें रघुनाथ अनाथ के नाथ सहायक बाप औ मैया ।
एक कहें सिय साजन सुन्दर श्री मिथिलापति केर जमैया ।
"गिरिधर" हूँ हिय हेरि कहें मेरे जीवन को धन राम रमैया ।।
रमैया ले चल मिथिला धाम ।
जहाँ जानकी जाइ प्रगट भई ललना ललित ललाम ।।
धरती जहाँ बनी महतारी ।
जुगल उपासक सब नर नारी ।

तुम्हहिं देहि नित मंगल गारी ।
तब विवाह रस गाइ रसिकजन, पावहिं सब मन काम ।।
कमला बिमल अमिय रसधारा ।
भीगा भगति से कन कन सारा ।
मन्दिर रुचिर न वलखा प्यारा ।
सीताराम रटत कल खगकुल, दूधमति अभिराम ।।
सागर सरस जहाँ बहु तेरे ।
सारी सरहज सार घनेरे ।
रसिक हृदय अतिशय प्रिय तेरे ।
तुम्हहूँ बँधे ग्रन्थि बन्धन में, बना बने श्री राम ।।
अगम पंथकी व्यथा मिटा दो ।
मंजिल को अति शीघ्र मिला दो ।
''गिरिधर'' को युगरूप दिखा दो ।
युगल रूप माधुरी नयन भरि निरखूँ आठों याम ।।

(१४१)

मिथिला बिनोद

लली को अबध में ही चलना पड़ेगा ।
इरादे तुम्हें ही बदलना पड़ेगा ।
सखि ! मोह को छोड़कर के सभी को ।
अवध के किले में टहलना पड़ेगा ।।
न भूलूँगा मैं एकपल भी अवध को ।
अली तुमको यादों से टलना पड़ेगा ।।
जनकपुर को ही भाव सरयू में बहकर ।
अवध की रजों में बिलसना पड़ेगा ।।
अवध में ही ''गिरिधर'' को प्रभु की छवि पर ।
तुम्हें रात- दिन ही मचलना पड़ेगा ।।

(१४२)

आज मुदित अवध नर नार सजनी,
चारों बहुओं में सिया सुकुमार सजनी ।।

चम्पा के भी लाज लागे देखि के बरनवाँ,
एड़ियें महावर शोभे कमल चरनवाँ,
लाल लाली सोहे, पालकी ओहार सजनी ।। चारों बहुओं में ।।
कानन्ह पें कुण्डल सोहे सिन्दुर सोहे मँगिया,
सकल सराहति कौसल्याजू के भगिया,
सोहे नाक नथ होंठ अरुणार सजनी ।। चारों बहुओं में ।।
खञ्जन नयन सोहे मुख सोहे पनवाँ,
शीश चूड़ामणि सोहे करमें कंगनवा,
सोहे लाल लाल घूँघट कंठ हार सजनी ।। चारों बहुओं में ।।
नयनन को लाभ लेती अवध सजिनयाँ
चित्त को चुरावे सखि सिया दुलहनियाँ,
"गिरिधर" युगल चरण बलिहार सजनी ।। चारों बहुओं में ।।

(१४३)

(वन गमन के समय श्री सीता जी की श्री राम जी से प्रार्थना)

छाड़ि कहाँ जइबे हो चरन गहिबे ।
साँबली सुरतिया नयन भर निहरबे,
तुम्हें देखि देखि जीबन को फल लहिबे ।।
सीतल सलिल से कमल पद पखरिबे,
बैठि तरु तर वयरिया करत रहिबे ।।
कंद मूल फल खाइ मुखिया निबरिबै,
घोर बन की बिपतिया कछु न कहिबे ।।
निज कर से पल्लब के दोना सँबरिबे ।।
नाथ सितिया औ घमबाँ सहज सहिबे ।।
"गिरिधर" प्रभु संग कानन में रहि के,
परन कुटिया में सुरपुर सरिस रहिबै ।।

(१४४)

सीताजी के प्रति श्रीरामजी की करुणा

सीता मोहि संग कानन जात ।
अति सुकुमारि न योग्य विपिनके, ताते हौं डरपात ।।
पृथ्वी तुम कोमल बन जावो ।
दिनकर शीतलता सरसावो ।
मारग तुम अति लघु हो जावो ।
पोंछ पसिने बहो मंदतर, शीतल सुरभित बात ।।
काँटों से पग छिल न जाये ।
कुसुम कली भी ना मुरझाये ।
प्रकृति न इन पर विपति ढहाये ।
छाँह करो घन चली सुहागिन, प्रिय संग मंजुलगात ।।
दण्डकवन अति दूर न जावो ।
गिरिवर मारग से हट जावो ।
सुरगण पंथ सुमन बरसावो ।
देख मैथिली की तनु मृदुता, "गिरिधर" मन बिलखात ।।

(१४५)

वनगमन के समय श्रीरामजी का पिताजी के समक्ष निवेदन

तात मोहि बारक नेकु निहारो ।
तुम हो हम सब के सुखदायक, सिर पर निज कर धारो ।।
सीता अनुज सहित वन जातहि, निरखि निमेष निवारो ।
राजतिलक करि भाई भरतजू को, मनिगण भूषन वारो ।।
विधि गति जानि तजिय पितु बिसमय, प्रणय प्रवाह सँवारो ।
चूमि दुलारि तनय कहँ सादर, आशिप वचन उचारो ।
बरस चतुर्दश विपिन निवसि फिरि, देखिहौं चरन तुम्हारो ।
अस जिय जानि बिदा दीजै अब, तजिये विषाद अपारो ।।
सुनि सुतबचन लाई उर भूपति, स्रवत नयन जलधारो ।
"गिरिधर" प्रभुहि निहारि विसूरत, चलत नाहि कछु चारो ।।

(१४६)

अवध बासियों की दुःखभरी प्रार्थना

कानन की कुटिया में कैसे तुम रहोगे
कैसे तुम्हें राघव दो भायेगी
तुम्हें कैसे अयोध्या भूल जायेगी ।।
चूम चुचकार के दुलार के कुमार तुम्हें, कहाँ मा कलेवा खिलायेगी
कहाँ बिठला के तुम्हें गोद में प्रमोद भरी, प्रेमपय पावन पिलायेगी
सरयू की लोल लोल लहरों की केलि तुम्हें,
सपनों में क्या नहीं लुभायेगी ।। तुम्हें कैसे अयोध्या ...।।
पलकों के पलनोंमें पौढ़ा के पल पल, तुमको पिताश्री दुलारते ।।
सेवक पुनीतमीत मानस भवन में, आपकी ही आरती उतारते ।।
कुश की चटाइ पें नींद कैसे आये तुम्हें,
करुणा भी देख दुःख पायेगी ।। तुम्हें कैसे अयोध्या ...।।
महलों को छोड़ सीय लक्ष्मण सहित तात, काँटों पें रजनी बिताओगे ।
कोमल शरीर धीर दारुण समीर कैसे, सह सह के कन्द मूल खाओगे ।
राजवेश त्याग कैसे पहनोगे बल्कल,
जटा कैसे शीश पें सुहायेगी ।। तुम्हें कैसे अयोध्या ।।
रुक जावो मत जावो करुणानिधान अब, डूबते अवध को उबारलो ।
"गिरिधर" के नाथ हे अनाथ नाथ जन को, नीरज नयन से निहार लो ।
चलते . बिलोक राम बिना पदत्राण तुम्हें,
छाती मही की फट जायेगी ।। तुम्हें कैसे अयोध्या ...।।

(१४७)

भोजपुरी गीत

(सुमन्तजी का करुण निवेदन)

राम लखन बट क्षीर मांग जब, सिरपें जटा बनाये ।
सीता सहित चले कानन दिशि, सचिव नयन जल छाये ।।
कहें अधीर सुमन्त्र रामपद, विरह दवानल दागे ।
छाती पीट रोय बालक ज्यौं, प्रभु सन बिनबन लागे ।।

× ×

दशरथ के वारे दुलारे कौशल्या के, राजा क सुनिल संदेश ।
हे ललना ! लवट अजोधिया के देश ।।

तोहरा के खातिर हम रथिया लियइली ।
मन में मनोरथ के थलिया सजइली ।
गंगा नहाइ के लवटि चल रामजी, जिनि जा तू कानन प्रदेश ।
हे ललना ! लवट अजोधिया के देश ।।
कोमल चरनवाँ में गड़ि हैं कंकरिया ।
काँटा भरलिबा पहाड़ी डगरिया ।
मुरझै है घमवाँ में चेहरा गुलाबी, कैसे तू सहबा कलेश ।
हे ललना ! लवट अजोधिया के देश ।।
लरिका लखन संग में कर में धनुहियाँ ।
पैदल तू चलल न पग में पनहियाँ ।
सीता सुकोमल विपिन कैसे रहि हैं, ह्वै जै हैं अनरथ अदेश ।।
हे ललना ! लवट अजोधिया के देश ।।
राउर बिना राजा छोड़ि हैं परनवाँ ।
मरि जइहैं लोगवा औ ह्वैइहैं मसनवाँ ।
दिनवाँ में छाइ जइहैं रतिया अन्हरिया, असमय अथइहैं दिनेश ।
हे ललना ! लवट अजोधिया के देश ।।
कैकइ अभागिनी क छतिया जुड़इली ।
सिगरी नगरियाँ में अगिया लगइली ।
"गिरिधर" के अँखियाँ क पुतरी हे राघव, हियरा में रह तू हमेश ।
हे ललना ! लवट अजोधिया के देश ।।

(१४८)

(सुमन्त्रजी की प्रार्थना)

तुम्हारे संग रहिबे हो, बिपिन बिहारी ।
तुम्हारे संग चलिबे हो, बिपिन बिहारी ।।
छोड़ि मंत्रीपद तुम्ह संग रहिबे, सहिबे बिपिन दुख भारी ।।
शीतल ताप सकल हम सहिबे, साँवरि मूरति निहारी ।।
दल फल मूल फूल सब खइबे, परन कुटीर बहारी ।।
तुम्हारे गुन गइबे, हो बिपिन बिहारी ।।
बार बार मुख कमल विलोकत, पुर सुख सकल बिसारी ।।
तुम्हारे होइ के रहिबे हो बिपिन बिहारी ।।

"गिरिधर" प्रभु अब जनि मोहि त्यागहु, कृपा जलधि भयहारी ॥
तुम्हारे पद गहिबे, हो बिपिन बिहारी ॥

(१४९)

केवट का प्रेमाग्रह

बिना पग धोये नाथ नाव ना चढ़ाइ हौं ।
रावरे चरन धूरि, मानुष करणी मूरी ।
तरनी तरेगी कैसे, दूजि मैं गढ़ाइ हौं । बिना पग ...॥
गौतमकी नारी तारी, मैं हूँ पाप भूरो भारी ।
असुरारी राघव वारी, धोखे ना गढ़ाइ हौ ॥ बिना पग ...॥
परिवार यामें लाग, जागो मेरो भूरी भाग ।
दीन धनहीन कैसे, जीविका चलाइ हौं । बिना पग ....॥
जौं पे नाथ चाहौं पार, जानकीपते उदार ।
चरन पखारी देहु, पार मैं पठाइ हौं । बिना पग ....॥
"गिरिधर" पें कृपा कीजे, अधम उधारी लीजे ।
चरन पखारन दीजे, बात ना बढ़ाइ हौं । बिना पग ....॥

(१५०)

केवट की गंगा मैया से प्रार्थना

धीरे से बहो गंगा मैया, उस पार हमें तो जाना है ।
श्रीराम लखन औ सीता को, उस पार ह में पहुँचाना है ॥
तुम प्रभुके पद से निकली हो, कोमलता मालुम है तुमको ।
जग के रक्षक को लहरों की, ठोकर से आज बचाना है ॥
अपनी लहरें कर मन्द मन्द तू देख मुकुन्द मुखारबिन्द ।
श्रीरामचन्द्रजी को अपने, मन मन्दिर में बिठलाना है ॥
जिन रघुवर का ले नाम सभी, भव सागर पार उतरते हैं ।
केवट को ही सानंद उन्हें, सरिता से पार लगाना है ॥
यों गा-गा कर केवट प्रमुदित, ले पार गया श्रीरघुवर को ।
सब पतित तरे अब तो केवल "गिरिधर" को ही अपनाना है ॥

(१५१)

सुमन्त्रजी की प्रार्थना

मेरी विनती सुनो राम प्यारे ।
घर चलो कौशिला के दुलारे ।।
आपके हेतु स्यन्दन मैं लाया ।
भावना के सुमन को सजाया ।
अश्रु कलशों को रच रच सँवारे ।
घर चलो कौशिला के दुलारे ।।
देखो खग मृग सभी रो रहे हैं ।
तेरी यादों में हय खो रहे हैं ।
हिन हिनाते बिलखते बिंचारे ।
घर चलो कौशिला के दुलारे ।।
सीता कैसे विपिन में रहेगी ?
धूप को चन्द्रिका क्यों सहेगी ?
हठ तजो हे अवध के सहारे ।
घर चलो कौशिला के दुलारे ।।
हैं तलफती दुःखी तेरी मैया ।
लेते राजा हैं तेरी बलैया ।
दास "गिरिधर" के नैनों के तारे ।
घर चलो कौशिला के दुलारे ।।

(१५२)

केवट की गंगाजी के प्रति प्रार्थना

मेरे राघव अति सुकुमार, मन्द धार बहियो जी ।
गंगा सुनि लीजो विनय हमार, मन्द धार बहियो जी ।
तुम रघुपति पद नख तें प्रगटी जू
ताते करि लीजो हृदय विचार ।। मन्द धार ...।।
सुठि सुन्दर सुषमा कर कोमल रघुवर जू
चलो हरन महा महि भार, ।। मन्द धार ...।।
सीय लखन संग कानन गमने जू
ये तो कोसल राजकुमार ।। मन्द धार ...।।
प्रभु मुख पंकज मुदित बिलोकिय जू
ये तो गिरिधर प्राण अधार ।। मन्द धार ...।।

(१५३)

ग्रामवासियों की जिज्ञासा
(भोजपुरी गीत)

कहवाँ से अइला धनुर्धर बटोही तू, जइब कहाँ कौन धाम ।
हे बबुआ ! आपन बतादा तू नाम ।।
केकरा के कोखिया में लिइल जनमवाँ ।
कौने पिताका विदित कइला नमवाँ ।
रउआ के कोमल कमल पद के रजसे, पावन भइल कौन धाम ।
हे बबुआ ! आपन बतादा तू नाम ।
तोहरा के अबही बा थोरी उमरिया ।
राजा के लक्षन से संजुत शरीरिया ।
तीनों के देखि के लजाइ जाली चम्पा, विजुरिया सजल घनश्याम ।
हे बबुआ ! आपन बतादा तू नाम ।।
कौने नृपतिया से लछिमी रिसइली ।
कहवाँ के लोगवा के भगिया नसइली ।
कौने कसुरुबा से अइला तू बनवाँ, औ सहल कठिन सीत धाम ।
हे बबुआ ! आपन बतादा तू नाम ।।

(१५४)

वन पंथ में मिले हुए ग्रामिणों की प्रार्थना

जौनपुरी गीत

राम चले बन लै बनिता बनि तापस बन्धु बन्यो बनचारी
पंकज पाँय बिना पनहीं धनुहीं सर तून धरे व्रतधारी
रूप निहारि विभोर भये बिसरे सिगरे गवई नरनारी
आँचर छोर से पोछिं के लोर कहे कर जोरि के बूढ़ी मतारी

× × ×

हम खाबै बजरी तोहैं खियउबै चाउर ।
हे वेटवा ! रुकि जा दुइ चार दिन आउर ।।
तीनिउ जने अमवाके निचवाँ छहाँइल ।
बाट भुखान बहुत रोटी साग खाइल ।
हम पीवै मड़वा तोहैं पियौबइ जाउर ।

हे बेटवा ! रुकि जा दुइ चार दिन आउर ।।
खाइ बदे मिले साग हरियरि मुरइया ।
सोवै बदे बाटै एक टुटही मड़इया ।
ई तोहार घर न ससुर ननियाउर
हे बेटवा ! रुकि जा दुई चार दिन आउर ।।
सूरज के घमवाँ से मुख कुम्हिलाये ।
भुखिया पियसिया से गुड़वा, पिराये ।
मानत न बात बा सुभाव लरिकाउर ।
हे बेटवा ! रुकि जा दुई चार दिन आउर ।।
कोमल सरीर बाटै साथ मेहरारु ।
छोट भाइ संग जैसन बिरवा लजारु ।।
हमरी जान तोहर माई बाप बाटै बाउर ।
हे बेटवा ! रुकि जा दुई चार दिन आउर ।।
मानि जा तू बात सफल झोपड़ी बनाव ।
ग्राम नर नारिन्ह के इच्छा पुराव ।।
"गिरिधर" के हिये बस इहै ठीक ठाउर ।
हे बेटवा ! रुकि जा दुई चार दिन आउर ।।

× × ×

एहि विधि रविकुल कमलरवि, मग लोगन्ह सुख देत ।
जात चले देखत बिपिन , सिय सौमित्रि समेत ।।

(१५५)

(ग्राम बधूटियों का प्रश्न)

कोटि मनोज लजाबनि हारे ।
सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे ।।

कौन दोनों में देवि ! तिहारो पति ।
श्यामल गौर किशोर मनोहर,
सुन्दरता तनु सुषमा अटी........ कौन दोनो में ...।।
अंग अंग लसत अनंग अमित छबि ।
देखि के भूलें तन मन की गति....कौन दोनों में..... ।।
बार हि बार तुम्हे हँसि निरखत ,

साँवरो कुँवर लुभावे रति .....कौन दोनों में ....।
अति अलबेले सलोने कुँबर दोउ,
शोभा कहत सकुचाति मति ..... कौन दोनों में.....॥
"गिरिधर" स्वामिनी कछु न दुराऔ ,
समझाबो सब कारन सति ....कौन दोनों में..... ॥

(१५६)

खंजन मंजु तिरीछे नयननि।
निजपति कहेउ तिन्हहि सियँ सयनन्हि ॥

(सीताजी का उत्तर)

कौशिला को दुलारो हमारे पतिं,
श्याम शरीर सरोरूह लोचन,
उपमा कहते लजाती मति.....कौशिला को....॥१॥
इन्हहीं के लागी करत जप तप ब्रत,
मुनि गन साधक जोगी जति .....कौशिला को....॥२॥
शारद शेष महेश सकल श्रुति,
जानत कोउ ना इनकी गति....कौशिला को.....॥३॥
"गिरिधर" प्रभुहि बुझाय सखिन्ह चली,
सजल नयन भई सीता सति ......कौशिला को.....॥४॥

(१५७)

भोजपुरी गीत

(छन्द)

कौन उपासन कइलू सिया कब जाइ प्रयाग तू गंग नहइलू।
का कहिके गिरिजा पूजिलू अरु कैसे तू प्रेम का नेम निभइलू ॥
शंकर मानस राज मराल के नैन बिसालके बीच बसइलू।
"गिरिधर" विश्व विलोचन चोर के आनन चन्द चकोर बनइलू ॥
भूलि गइलि सुधिया, लुटाई गइली मनवा।
हियामें बस ले हो, सिया तोरा सजनमा ॥
आनन मयंक सिर सुमन मुकुट पर,
सिंह कटि तट पर बल्कल पट पर,

लटक सुलट पर अटकट नयनबा,
हिया में बसले हो सिया तोरा सजनवा ।।
नील नब नीरद सुश्यामल शरीर पर,
धर्म धूर धीर राम रघुबंश वीर पर,
बचन गंभीर पर मोहल मयनवा,
हिया में बसले हो सिय तोरा सजनवा ।।
तनु धनु बान पानि मन्द मुसकनियाँ,
श्रवन कपोल गोल लोल चितवनियाँ,
मंजु मंजु बानी सुधा सींच देलें मनवाँ,
तनिक हसलें सीता तोहरा सजनवा ।।
तोहराके सथबा ई कैसे अइली बनवाँ,
लालन लखन कंज कोमल चरनवाँ
"गिरिधर" हिरदय से सुषमा निधनवाँ,
कबहुँ न खसलें कौशिला के ललनवाँ ।।

(१५८)

राघव पिया मोरे साजन सलोने, कानन है कितनीक दूर ।
कियो है गमन जहाँ मेरे जीवन धन
भवन के सुख तृन तूर.........कानन है .... ।।
सूरज किरन लागि सूखे अधर पुट
थकि के भये अंग चूर..........कानन है . ...।।
बैठि बिटप तर चरन पखारूँ
अँचरा से झारूँ तन धूर........कानन है .....।।
सघन विपिन बिच कुटिया बनाओ,
भवन बसाओ जरूर......कानन है...... ।।
"गिरिधर" प्रभु सुनि प्रिया के बचन भरे,
जलज नयन जल पूर....कानन है ...... ।।
कित बन अबहि सुनहु सिय सुन्दरी,
कहि चितये हित भूर .....कानन है ....।।

(१५९)

(चित्रकूट जी स्वयं श्रीरामजी का स्वागत कर रहें हैं)

पधारो भक्तवत्सल भगवान ।
दीनदयाल उदार शिरोमणि करुणा शील निधान ।
आरतहरन शरण अशरणके समरथ सहज सुजान ।।१।।
परसि कमल पर दीन बन्धुके हौं अब भयो महान ।
करुणा करि प्रभु दरसन दीन्हों, फूल्यों सुमंगल खान ।।२।।
सीता लखन सहित करुणानिधि, धरे तून धनु बान ।
"गिरिधर" प्रभु मम उपरि बिराजहु, करहु मधुर मुसुकान ।।३।।

(१६०)

कोल किरातों की प्रार्थना

मेरे राघव परम कृपाल चित्रकूट बसियो जू ।
भवभंजन दीन दयाल चित्रकूट बसियो जू ।।१।।
तव पद कमल परसि भयो पावन कानन जू ।
कीजो कोल किरात निहाल, चित्रकूट बसियो जू ।।२।।
ललित लखन संग सोभित सिय के साजन जू ।
मानो चंपक तड़ित तमाल, चित्रकूट बसियो जू ।।३।।
त्रिविध समीर सुनिर्झर पयसरि पावन जू ।
इहाँ सवरितु सुखद सुकाल, चित्रकूट बसियो जू ।।४।।
असन बसन फल मूल सुपल्लव आसन जू ।
हम करबे सुपास रसाल, चित्रकूट बसियो जू ।।५।।
परम कृपा परिपूरन आनन्द के घर जू ।
देखि मिटि हैं हमार दुकाल,चित्रकूट बसियो जू ।।६।।
हम सब दास कमल पद सेउब छन छन जू ।
तुम निर्भय कौशिला के लाल, चिंत्रकूट बसियो जू ।।७।।
कोल किरात बचन "गिरिधर" प्रभु सुनिये जू ।
भरे नीरज नयन विशाल, चित्रकूट बसियो जू ।।८।।

(१६१)

अति बड़भाग हमारे, आज राम पधारे ।।
सियाजू के लोचन तारे,आज राम पधारे ।।
मुनि जन जतन करत जेहि कारन, तापस वेश सँवारे ।।
जटा मुकुट सिर सारस नयननि, द्दगभरि हमहु निहारे ।।
चित्रकूट के खग मृग धनि सब, परसत चरन तुम्हारे ।।
राजीव लोचन सोच विमोचन , मदन विमोहन हारे ।।
विगरी जनम अमित की सुधिरिहिं, तव पद कमल सहारे ।।
परन कुटी हम तुम तगि बिरचे, रचि फल- मूल सुधारे ।।
सीता लखन समेत बिराजहु, तून बान धारे ।।
यह छबि सुमिर ध्यान मह "गिरिधर" राघवजू के चरन पखारे ।।

(१६२)

चित्रकुट नित राजो मेरे राघव राघव प्यारे चत्रककूट नित राजो ।
परनकुटी करि मन्दाकिनि तट, विमल विवेक निछाजो ।।
मेरे सघव प्यारे चित्रकूट नित राजो ।।
कन्द मूल फल देब तुम्हहि हम, अनत कहुँ जनि जाजो ।।
सकल सुपास तुम्हहिं मिलिहैं नित, तापस मन महँ भ्राजो ।।
मंगल होहिं भुवन तिहुँ राघव , दुःख दारिद सब भांजो ।।
"गिरिधर" जानि अपनपौं हम कहँ, आयसु दै जनि लाजो ।।

(१६३)

देखे री मैन चित्रकूट रमे राम ।।
शिव विरंचि से जिनके सेवक, भजहि त्यागि मद काम ।
सोइ कामदगिरि परन कुटि तर सेवक साधु अकाम ।।
जाके भृकुटि विलास मात्र ते, रचेउ भुवन आराम ।
"गिरिधर" प्रभु सोइ मुदित सजावत सीतहि ललितललाम ।।

(१६४)

सीताजी के हर्षोद्गार

मोहे बिसयो अवध को धाम, चित्रकूट प्यारो लगे ।
जहाँ रमि रहयो राम अकाम, चित्रकूट प्यारो लगे ।।
जहाँ मन्दाकिनी अमृत की धारा बहे,
जहाँ कामद सकल दोष दारिद दहे,
जहाँ प्रकृति छटा अभिराम, चित्रकूट प्यारो लगे ।।
जहाँ झरना सुधा वारि संतत झरें,
जहाँ मुनिगण तपस्या निरन्तर करें,
जहाँ साधक लहें मनकाम, चित्रकूट प्यारो लगे ।।
जहाँ तरुवर सदा चारि शुभफल फरें,
जहाँ अनसूया जन की असूया हो,
जहाँ खगकुल रटें सीताराम, चित्रकूट प्यारो लगे ।।
जहाँ मधुकर मधुर ईश गायन करें,
जहाँ मारुत मलय मनमें आनन्द भरें,
जहाँ "गिरिधर" प्रभु विश्राम, चित्रकूट प्यारो लगे ।।
जहाँ राजत चारों धाम, चित्रकूट प्यारो लगे ।।

(१६५)

अनुसूयाजी का गीत

कानन की कुटियाँ में फूलों का पालना
झूलें तीनों देवता झुलावैं मुनि ललना ।।
आज है त्रिदेव बने बालक पधारे
नन्हें मुन्हे अनुसूया के आँखों के तारे
चूम के सिखावें मातु धुटनों स चलना ।।
चित्रकूट कानन की शोंभा निराली
साज रही धरती भी मंगल की थाली
किलकै विनोद करी तोतरी सुबोलना ।।
कबहूँ उछंग लैके मातु हलरावै
कबहुँ पालने घालि लोरिया सुनावे
"गिरिधर" अधीश मगन भूल सब छलना ।।

(१६६)

मोहे विसरो अवध को घाम चित्रकूट प्यारो लगे ।
जहाँ राजत ब्रह्म अकाम, चित्रकूट प्यारो लगे ।
जहाँ मन्दाकिनी अमृत की धारा वहे ।
जहाँ कामद सकल दुःख दारिद दहे ।
जेहिं निरखे मिटत घोर धाम, चित्रकूट प्यारोलगे ।।
जहाँ झरना निरन्तर सुधा रस झरे ।
संत मुनिगन प्रफुल्लित तपस्या करें ।
जहाँ प्रकृति छटा अभिराम, चित्रकूट प्यारो लगे ।।
जहाँ सासु अनुसुइया, विराजे भली
जहाँ कोलिन्ह किरातिन्ह हैं भोलि अली
जहाँ " गिरिधर" प्रभु विश्राम, चित्रकूट प्यारो लगे ।।

(१६७)

राज कौन अब चलावे, भैया भरत के बिना ।।
राम लखन सीता ने कीन्हे, चित्रकूट में डेरा,
रघुकुल सूर्य नृपति भी डूबे छायो अवध अंधेरा,
दीपक कौन अब जलावे, भैया भरत के बिना ।।
विधवा मातु शीश धुनि रोये, बिकल सकल नर नारी,
राम बिरह ज्वाला में झुलसे, प्रजा अवध की सारी ,
अगिया कौन अब बुझावे, भैया भरत के बिना ।।
खग मृग बिकल विपिन में विलपें , हयशाला में घोड़े,
तोता मैना पिंजरन्ह तड़पे, गरे गात जिमि ओले ,
ढ़ाढ़स कौन अब बँधावे, भैया भरत के बिना ।।
छत्रभंग सूनो नृप मंदिर, विपिन गये रघुनन्दन,
कुसमय अवध राजमाता सब, करती सिर धुनि क्रंद्रन,
दुःखवा कौन अब छुड़ावै, भैया भरत के बिना ।।
पठये राम लखन सीता वन, आप विधवपन लीन्ही,
राज समाज शोक में डूब्यो, कहा कैकेयी कीन्ही,

लजिया कौन अब बचावे, भैय्या भरत के बिना ।।
भायप भक्ति प्रेम की सीमा, रिषि का जैसा जीवन,
भयउ न भुवन भरत सा भाईं, "गिरिधर" का अवलम्बन,
भक्ति कौन अब बढ़ावे, भैया भरत के बिना ।।

(१६८)

बिहरत सिय रघुवीर तीर मन्दाकिनी के ।
संग लखन रनधीर तीर मन्दाकिनी के ।।
शीतल पवन सुविजन डुलावै ।
सुरगन मुदित सुमन बरसावै ।
बोलत कोयल कीर, तीर मन्दाकिनी के ।।
हेरि हिरन तन सुधि बिसरावत ।
भूलि भगिबो भाग सराहत ।
बहल दृगन्ह ते नीर .....तीर मन्दाकिनी के ।।
जनकनन्दिनी अरु जानकी जीवन ।
मोर कहे मोरे दोऊ घन ।
नाचल होय अधीर , तीर मन्दाकिनी के ।।
जनक दुलारी के पद परसत ।
चित्रकूट के कण कण हरषत ।
भईं दरस की भीर, तीर मन्दाकिनी के ।।
घर बैठे सिय राम पधारे ।
भील कहे धनि भाग हमारे ।
धन्य हमारी तकदीर, तीर मन्दाकिनी के ।।
देखे आईं सिया रघुराई ।
"गिरिघर" के दोउ नयन जुड़ाइ
जुगल रूप जागीर, तीर मन्दाकिनी के ।।

(१६९)

हमारे यहाँ प्रभु को आना पड़ेगा।
कुटिको सुहागिन बनाना पड़ेगा ।।
दिखाना पड़ेगा मधुर मञ्जु मूरति,
तृषको जनों की बुझाना पड़ेगा ।।
सफल कर हमारी तपस्या क्रिया को,
हमें धोर भय से छुड़ाना पड़ेगा ।।
प्रणत पाल विरुदावली जग में जाहिर ,
बचन भक्त जन के निभाना पड़ेगा ।।
दरस देके "गिरिधर" को निज कारुणी से,
बिहँस कर गले से लगाना पड़ेगा।

(१७०)

जाके बरसो बदरवा रे, जहाँ राजे सिया के पिया ।
जहाँ धरे मुनि वेश मनोहर, बनिता अनुज सहित बसे गिरिवर
जाके गरजो नगरवा रे, जहाँ बसे सिया के पिया ।।
सुनि-सुनि गरजनि तव नाचहि शिखि, सुख पावहिं प्रिय प्रीतम-
जाके सरसो अगरवा रे ....जहाँ राजे ।।
जनक लली की सारी भीजै, रामचन्द्र लखि-लखि अति रीझै
जाके ढ़रको गगरवा रे, ...जहाँ राजै ....।।
गिरिधर को संदेश सुनाओ, राम सिया को तपन बुझाओ
जाके बनके डगरवा रे ....जहाँ राजै....।।

(१७१)

जाके बरसो बदरवा रे जहाँ राजे सिया के पिया ।
चित्रकूट वर शैल मनोरम,
विलसत जहँ नित सिय पुरुषोत्तम,
दामिनी तरुण तमाल जलद सम,
जाके सरसो सगरवा रे जहाँ राजे सिया के पिया ।।
कौन बिरछ तल राजत हौइहैं,

ग्रीषम द्ग ा बिकल मुरझइ हैं,
आतप महँ छाया सुख पइहैं
जाके ढरको गगरवा रे जहाँ राजे सिया के पिया ॥
जनक सुता की सारी भीजैं
लखि-लखि राघव हृदय पसीजै
तुम ते "गिरिधर" प्रभु श्रम छी जै
जाके धुमड़ो नगरवा रे, जहाँ राजे सिया के पिया

(१७२)

साधुजी सुखद जटायु की मीच ॥
कौशल्या सुत गोद बिराजत;
भुक्ति मुक्ति पै एक संग लाजत,
प्रेम पुलकि राजीव नयन ते,
नयन सलिल तन सींच ॥
जो गति अगम निगम कही गावे,
सुर पुर अरु वेदान्त बतावे,
निज कर कमल परसि हरि सो गति,
देत सकुचि अति हीच ॥
बार बार प्रभु पंख सुधारत,
धूरि जटायु जटान सों झारत,
"गिरिधर" लखि निज सर्वस वारत ,
धन्य धन्य यह मीच ॥

(१७३)

शबरी की प्रार्थना

दशरथ राज दुलारे रमैया प्यारे आजा रे
रानी कौशल्या के बारे रमैया प्यारे आजा रे
निशदिन तेरी बाट -निहारूँ, मृदु पलकों से पन्थ बुहारूँ
सन्तन के रखवारे, सो दरश दिखा जा रे ॥
होत शरीर क्षीण बल छिन-छिन, बिरह अगिन ज्वाला बढ़े दिन-दिन
नव घन रूप सँवारे, सो अगिन बुझा जा रे ॥

घोर निशा संकट चहुँ पाहिं, आन्हर सूझत अब कछु नाहीं,
रघुकुल के उजियारे, सुपन्थ दिखा जा रे॥
तुम्हरे दरश हित जीवन राखे, सत्य कहें जे मन अभिलाषे,
मुनि जन मन के सहारे, सो धीर बन्धा जा रे॥
राघव तनिक विलम्ब न करिये, जनम जनम की साँसति हरिये
"गिरिधर" प्राण पियारे मधुर मुसुका जा रे॥

× × ×

कौसल्या अरू तनय कर, निरखत मधुर विनोद।
दशरथ प्रमुदित भाव रस, पुनि पुनि मगन प्रमोद॥

(१७४)

अशोक वाटिका में सीता जी की व्यथा :

मधुर दिन बीत गये मेरे
अब इन पापी असुरवृन्द ने, आये प्राण हेरे॥
जनकपुरी की वह खुशियाली,
अवधपुरी की मधु हरियाली,
ग्रीष्म समय की चण्ड व्यथा में, जला दिये डेरे॥
चित्रकूट का वह सुखसारा,
दण्डक का प्रिय वैभव न्यारा
कपट कनक मृग की लालच ने, दिये बिपत धेरे॥
आर्यपुत्र भटके बन बन में
मै सह शोक अशोक विपिन में
को "गिरिधर" प्रभु को समझाये, मम दुःख बहु तेरे॥

(१७५)

कंचन की नगरी जला गयो रे माई
अंजनाजू को बारो॥
वारिधि को लांध्यो औ लंकिनी को मार्यो
सियाजू को धीरज बंधा गयो रे माई
संत जन को सहारो॥

निशिचर संहार्यो औ वन को उजार्यो
लंका की होली रचा गयो रे माई
केसरी को दुलारो ॥
चटकत चपेटों से गरज लरज के
वीरों में खलबली मचा गयो रे माई
रामजन को उबारो ॥
गिरिधर के प्रभु को सुमिरि आज साहस
शोणित की सरिता बहा गयो रे माई
सियाजू को दुलारो ॥

(१७६)

विभीषण की व्यथा

बने सबके स्वामी, मिलोगे कैसे कैसे ।
सुनो अन्तर्यामी, मिलोगे कैसे कैसे ॥
बिलोकें जो तुमको नहीं है वे आँखें।
हृदय पाप निर्भर कहाँ तुमको राखें ।
बतादो हे स्वामी, मिलोगे कैसे कैसे ॥
नहीं कुछ भी साधन नियम यज्ञ पूजा ।
तुम्हारे बिना जग में कोई न दूजा ।
मैं खल क्रूर कामी, मिलोगे कैसे कैसे ॥
रहा दास "गिरिधर" तुम्हारे भरोसे ।
रहा वो न भूखा जिसे तुम परोसे ।
पतित हूँ मैं नामी, मिलोगे कैसे कैसे ॥

(१७७)

वशिष्ठजी से सभी वानरों का परिचय देते हुए प्रभु श्री राम ने कहा,

ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे
भये समर सागर कहँ बेरे ॥

तब पीछे खड़े हुए मौन हनुमानजी को देख वशिष्ठजी ने पूछा ये कौन है ? इनका परिचय क्यों नहीं देते ?

ललन मेरे कौन पवन को बारो
अति अगाध पाथोधि लांधि केहि,
विपिन अशोक उजारो ॥
भुज बल मथ्यो निशाचर जूथहि
कियो दशमुख मुख कारो
अक्ष मारि रिपु धारि धूरि करी,
बिटप सकेलि उपार्‌यो।
खल मद मथि निःशंक सभा बिच
केलि लंक जेहि जार्‌यो ॥
सिय सुधि ल्याइ जियाइ सकल कपि
आप को भयो सहारो।
मारि अकंपन ल्याइ सजीवनि
लखन प्राण रखवारो ॥
पुनि पुनि हौं पूछत रधुनन्दन
नीरज नयन उचारो।
"गिरिधर" प्रभुहि बताईं कृपानिधि
हरौ सब शोक हमारो ॥

(१७८)

वशिष्ठ जी को राघवेन्द्र हनुमानजी का परिचय दे रहे हैं।

सुनिये मुनि ए अंजनी के बारे।
पिङ्ग नयन पवि दशन अरुण मुख, त्रिभुवन के उजियारे।
साधु शिरोमणि जनक लली सुत, मेरेहु तात दुलारे ॥
शतयोजन बारीश लांधि जेहि भयो सिय प्राण अधारे,
दै मुद्रिका बाहुबल पावक जातुधान तृन जारे ॥२॥
कोटि कोटि भट एक धाय करि अक्षहिं चपरि पछारे,
मेघनाद को गर्व दुरि करि जेहि वाटिका उजारे ॥
कनक पुरी होरी जराई जेहि सुखी किये सुर सारे,
मुठिका घात तोरि छाति जेहिं निदरि निशाचर मारे ॥

जिनके सुमिरि प्रताप तेज बल हृदय हहरि सुर हारे,
ते कपि न. : भानु लखि सहमे जनु चकोर भट भारे ।।
सिय सिन्दूर जीवन लछिमन को भरत प्राण रखवारे,
रावन समर अगाध जलधि ते कौतुक महँ मोहि तारे ।
इनको रिनी भानुकुल है यह ये अति हितु हमारे,
"गिरिधर" प्रभु हनुमन्त लाइ उर श्रीमुख बिरुद उचारे ,

(१७९)

आज राधव को राजतिलक है ।
देखो सभी ठाँव सुख की छलक है ।।
रण में रावण को जीता पूर्णकाम ने
माता सीता को पाई अभिराम ने
देखो मंगल भुवन राजे, कौशिला सुवन
छाई खुशियों की मंजिल छलक है ।।
सुख में नाचे सकल लोकपाल हैं
सब के लोचन प्रफुल्लित निहाल हैं
झूमें आनन्द उमंग उमगे सब अंग अंग
छाई अंगो में मंजुल पुलक है ।।
बैठे सिंहासन राम सिय सोहते
राजे भूषण बसन मन मोहते
माथे कंचन मुकुट सोहे बन्धु सब निकट
कान कुण्डल की झिलमिल झलक है ।।
माता कंचन की थाली सँवारती
आरतीहर की आरती उतारती
सोहे सीता के संग, मोहे कोटिक अनंग
लगी "गिरिधर" की इकटक पलक है ।।

(१८०)

होनी हो के रहती टाले नहीं टलती,
एक दिन हुआ था वनवास आज देखो राजतिलक है ।।

जिनके माथे जटा मुकुट का दृश्य सभी ने देखा,
उनके माथे पर बिलसेगी आज तिलक की रेखा,
होनी हो के रहती ....।।
आज अवध में आनन्द लहरें छाई है खुशियाली,
प्रकृति सुन्दरी भी इठलाती ले मंगल की थाली,
होनी हो के रहती ....।।
सुर दुन्दुभी बजाये नभ में नगर नारि- नर नाचें,
मंगल मञ्जु मनोरथ पूरे श्यामल रूप पे राजें,
होनी हो के रहती ....।।
चलो सखि सब मिल के देखें आज अवध रजधानी,
''गिरिधर'' प्रभु राघव हैं राजा श्री सीता महरानी
होनी हो के रहती ....।।

(१८१)

जय जय जय श्री मारुत किशोर ।
श्रीरामचन्द्र लोचन चकोर ।।१।।
जाम्बूनद गिरि सुन्दर शरीर ।
रणधीर वीर जय महावीर ।।२।।
जय हरण शरण सेवककी पीर ।
रघुवीर वीर जय हरण भीर ।।३।।
अंजनी भूमिगत पारिजात ।
रघुनाथ भ्रमर मन वारिजात ।।४।।
जय जय गुणमंदिर पवनपूत
जय सुभट शिरोमणि रामदूत ।।५।।
जय लंका पुर दाहन कृपाल ।
लंगूल लसित विकराल ज्वाल ।।६।।
जय अट्टहास कंपित सुकाल ।
जय काल काल अंजनी लाल ।।७।।
जय रावण कुल वल धूमकेतु ।

भवसागर चरण सरोज सेतु ॥८॥
जय रामायण माला सुमेरू ।
"गिरिधर" हि कृपा करि नेकु हेरू ॥९॥

(१८२)

(इक्ष्वाकु कुलगुरु सागर का प्रभु के प्रति वात्सल्य)

सागर निज मन करत विचार ।
निरखि नयन भरि कोटि मयन छवि, कोशल सुता कुमार ॥१॥
अति कोमल लघुबयस मृदुल तनु, दशरथ राजकुमार ।
कैसे घोर कठोर राक्षसन्हि, जुरिहि समर महि रार ॥२॥
भुवन विदित दशमुखको विक्रम, खलबल मूल अपार ।
कैसे कुलिस कठोर भेदि हैं, सिरीष सुमन सुकुमार ॥३॥
मन सम अगम अथाह सबहि विधि, नीर प्रवाह हमार ।
नीलकमल सम रामकटक संग, केहि विधि उतरिहिं पार ॥४॥
बाल मराल अवध नृप ढ़ोटा, किमि हरिहैं महि भार ।
"गिरिधर" प्रभु कैसे धनु सर गही, करे रावन संहार ॥५॥

(१८३)

बिराजो सिंहासन सरकार ।
नख सिख लसित बसन मनि भूषन, कोशल राजकुमार ॥
रजत धातु वर कलित अनूपम शुचि आसन सुखसार ।
ललित छत्र राकेश विनिन्दित मुकुट मंञ्जु कलहार ॥
भाल तिलक मकराकृत कुण्डल नयन नलिन अनुहार ।
इन्दुबदन सुखसदन कुन्द रद मुनि मोहन श्रृंगार ॥
दरसन लागि भक्तजन आरत जुरे मनन के तार ।
"रामभद्रदासहि" अबलोकहु श्री राधव सरकार ॥

●

श्री कृष्ण-लीला माधुरी

(१)

शुकाचार्य जी की भावना

मैं तो बाहर नहीं तात आऊँगा, गर्भ में रह के हरिगुण गाऊँगा।
चाहे सुख में रहूँ चाहे दुःख में रहूँ
चाहे नरकों में रह के जम की यातना सहूँ
मैं तो यहीं रह के प्रभु को रिझाऊँगा ।। गर्भ में रहके ...।।
मुझे बाहर ठगेगी माया जगदीश जी
मुझे ममता सतायेगी घर खीश की
मैं तो जाके जगत में दुःख पाऊँगा ।। गर्भ में रहके ...।।
चल रही मोह झंझा भयंकर वहाँ
काम व्यापार चलता निरन्तर जहाँ
मैं तो सपने में भी कल न पाऊँगा ।। गर्भ में रहके ...।।
पिसते कोल्हू में ज्यौं जीव सारे जहाँ
मरते बेमौत प्राणी बिचारे वहाँ
देख जग को अधिक घबराऊँगा ।। गर्भ में रहके ...।।
अब तो प्रभु का भजन करके सोऊँ यहीं
भूल कर भी जगत हेतु रोऊँ नहीं
मैं यहीं श्याम मन्दिर बनाऊँगा ।। गर्भ में रहके ...।।
मुझे बाहर न मुनिवर बुलायें कभी
देके झूठा भुलावा न रिझायें कभी
मैं तो "गिरिधर" प्रभू की शरण जाऊँगा ।। गर्भ में रहके ...।।

(२)

व्यास जी की वेदना

हे शुक मत जाओ मत जाओ,
हे पिञ्जरे के कीर उड़न्तु, कुछ तो दया दिखाओ ।।
विलप रही है तेरी माता,
हृदय पिता का भी बिलखाता,

यह कानन- दृग नीर बहाता,
निठुर हृदय हे सहज बिरागी, कुछ अनुराग जनाओ ।।
बालक वृन्द खिलौने लाये,
मृदु मानस में दीप जलाये
मैं मंगल के थाल सजाये,
दूर न जाओ खेल खेलकर, पितु मन मोद बढ़ाओ ।।
देखो मुनिगण रोते सारे,
छोड़ न जाओ हमें हे प्यारे,
कहाँ चले द्विज वृन्द बिसारे,
"गिरिधर" मानस वन में छिपकर, मृदु भागवत सुनाओ ।।

(३)

व्यास जी की वेदना

ओ निठुर कीर हममे बिरह दुःख भरे
उड़के पिंजरे से तोते कहाँ जा रहे
देखो मइया तेरी फूट कर रो रही
पुत्र के प्रेम में देह सुधि खो रही
नेक जाओ ठहर अब तो मानो गहर
क्यों हमें आज तुम तात तरसा रहे ।। उड़के ...।।
तुम हो दीवाने घनश्याम के प्रेम के
तुम हो मस्ताने अभिराम निज नेह के
अपनी ममतामयी स्नेह डोरी फँसा
तोड़ उसको निठुर क्यों कहाँ जा रहे ।। उड़के ...।।
तेरा बूढ़ा पिता वत्स विलखा रहा
अपनी आँखो से आँसू वो वरषा रहा
मान "गिरिधर" विनय पास से मत उड़ो
प्रार्थना क्यों कठिन बन के ठुकरा रहे ।। उड़के ।।

(४)

अवतार लो अवतार लो ।
हे दीनबन्धु कृपानिधे, अवतार लो अवतार लो ।

हे सत्यसन्ध दयानिधे, अवतार लो अवतार लो।।
पृथ्वी भयाकुल हो रही दृग अश्रु से मुख धो रही,
अब धैर्य अपना खो रही सिर पीट के वह रो रही,
हे देव बिपति सुधार लो अवतार लो अवतार लो ।।
ये गाय मारी जा रहीं दिन रात अति बिलखा रहीं,
तव नाम ले चिल्ला रहीं, श्रुति संस्कृति बिलपा रहीं,
हे कञ्ज नयन निहार लो, अवतार लो अवतार लो ।।
"गिरिधर" तुम्हारी भारती, हे कृष्ण कृष्ण पुकारती,
भारत भवन की आरती करुणा निसार सँवारती,
बिगड़ी कृपालु सँवार लो अवतार लो अवतार लो ।।

(५)

सर्वेश सर्व सुधार दो अवतार लो अवतार लो ।
आवो जगत उद्धार दो अवतार लो अवतार लो ।।
देखो ये गैया रो रही आँसू से आंगन धो रही ।
गोपाल विरुद संभाल लो, अवतार लो अवतार लो ।।
चोटी बिलुम्बित हो रही अबला भी धीरज खो रही ।
भारत का भार उतार लो, अवतार लो अवतार लो ।।
सुख सेतु सम्बल खो रहा, यह धर्म सिर धुनि रो रहा ।
"गिरिधर" को आज उबार लो, अवतार लो अवतार लो ।।

(६)

श्याम सुन्दर न देरी लगाओ,
देवकी की विपति को मिटाओ ।।
रात दिन तेरी करती प्रतिक्षा ।
कर रही भाग्य की भी समिक्षा ।
प्यारे सपनों को स्वर्णिम बनाओ ।।
देवकी की विपति को मिटाओ ।।
कंस के जेल में तेरी मैया
क्या रहा कर यहाँ तू कन्हैया
भक्तवत्सल तरस अब बुझाओ

देवकी की विपति को मिटाओ ।।
तेरी यादों में सुख खो रही है
तेरी मैया बहुत रो रही है
नाथ "गिरिधर" के भव भय नशाओ
देवकी की विपति को मिटाओ ।।

(७)

अब आवो यदुकुल नाथ अधिक तरसाओ नहीं
रो रोकर कहती ओ मैया ।
आवो आवो कुँवर कन्हैया ।
राँभ रही सारी ब्रज गैया ।
अपनाओ यदुकुल नाथ, अधिक ....।।
सूख गई कालिन्दी सरिता ।
यह ब्रजभूमि शोक दुःख भरिता ।
खल गण कल्प बेलि है हरिता ।
सरसाओ यदुकुल नाथ, अधिक ....।।
बंसी मधुर बजा मधुबन में ।
पुलकपूर्ण करके कणकण में ।
प्रेम सुधा "गिरिधर" के मन में ।
बरसाओ यदुकुल नाथ, अधिक ....।।

(८)

आज ब्रज एक ढाढ़ी चलि आयो
रूप शील वपु परम मनोहर, श्याम शरीर सुहायो
संग लियो एक शंख अनूपम गरुड़ देव संग लायो
लसत सुभग भुज चारि रुचिर वाके, आयुध सकल छिपायो ।
नन्द विरुद कहे विविध मधुर अति माँगनो ललित सुहायो
कछु नहिं चहत नन्द और मैं बहु विधि कहि समुझायो
"गिरिधर" गीत दरश हित लोचन ललकि रहयो ललचायो ।।

(९)

आज प्रगट्यो मदन गोपाल बधाई बाज रही ।।
भादौं कृष्ण तिथि अष्टमी, सगुन सुमंगल मास ।। बधाई ...।।
व्यापक ब्रह्म निरीह निरंजन धरनि सुमंगल रसाल ।। बधाई ...।।
गावत किन्नर हरषि हरषि हिय, नाचहिं दै दै ताल ।। बधाई ...।।
उमगि चलो आनन्द नगर नभ, सुर नर नाग बिहाल ।। बधाई ...।।
लै लै चली बधाव ग्वालिनी, भरि भरि मंगल थाल ।। बधाई ...।।
गोपी गोपवृन्द अति प्रमुदित, मोद विनोद विशाल ।। बधाई ...।।
"गिरिधर" गाइ कृपा वर माँगत, जयति यशोदा के लाल ।। बधाई ...।।

(१०)

चालो चालो री छबीली ब्रजनार, यशोदा को लाला भयो ।।
दूध दही भरी थार सजाओ,
घर-घर मोतियन चौक पुराओ
गाओ-गाओ री सुमंगलचार ।। यशोदा को ......।।
आज नयन भर रूप निहारें,
ब्रजनन्दन को सर्वस वारें,
चिर जीवहुँ महर को कुमार ।। यशोदा को ......।।
आज महर गृह नाचैं गावें
कान को लखि दृग सफल बनावैं,
जय जय "गिरिधर" प्रभु सरकार ।। यशोदा को ...।।

(११)

आज सब मिल मंगल गाओ, यशोदा जी को लाला भयो ।
आज घर घर चौक पुराओ, यशोदा जी को लाला भयो ।
व्यापक अकल निरीह निरञ्जन ।
प्रगट्यो ब्रज शिशु बन जनरञ्जन ।
आज मंगल थाल सजाओ ।। यशोदा जी ...।।
सजि सजि सहज सिंगार सुहागिनी ।
नन्द भवन आवहिं बड़भागिनी ।
आज मोतियन थाल पुराओ, ।। यशोदा जी ...।।
नाचहिं मुदित सकल ब्रजनारी ।
दधि माखन छिरकहिं सुखकारी ।

आज अबीर गुलाल उड़ाओ ।। यशोदा जी ...।।
जय जय कहहिं बधावनु लावहीं ।
देहि असीस निछावरीं पावहीं ।
आज नभतें सुमन बरसाओ, ।। यशोदा जी ...।।
प्रमुदित नन्द यशोदा रानी ।
निरखि निरखि शिशु सारंग पानी
आज "गिरिधर" प्रभु गुन गाओ, ।। यशोदा जी ...।।

(१२)

मैं तो ढ़ाढ़ी बन के आयो वधावा ले के आयो
यशोदा जायो ललना वधावा ले के आयो
आज सफल भयो जनम हमारो नन्दनन्दन निज नयन निहारो
सफल भयो जिवना वधावा ले के आयो ।।
जा छल सुन्यो विरिज प्रभु आयो प्रेम मुदित हरिषतमन धायो
आनन्द उमग्यो नयना वधावा लल्लके आयो ।।
सरल भयी अनदेखी डगरिया, आई छन में गोप नगरिया
लिये भावना के सुमना वधावा ले के आयो ।।
चार पदारथ कछु न चहत हौं, ब्रज की रज निज शीश धरत हौं
चिरजीवों नन्द नन्दना वधावा लेके आयो ।।
चार पदारथ कछुन चहत हौं, ब्रज की रज निज शीश धरत हौं
चिरजीवों नन्द नन्दना वधावा लैके आयो ।।
"गिरिधर" जनम-जनम को ढ़ाढ़ी, कान्ह दरस हित लालच वाढ़ी
मोको दीजो मेरो मँगना वधावा लेके आयो ।।

(१३)

वाजति बिरिज वधईया -वधईया मोहन प्रगह भये ।।
भादौं कृष्णपक्ष तिथि अष्ठमी, रोहिणी नखत सुखदईया ।।
लै लै ललन ललकि लखि नाचै, प्रभुदित लोग लुगईया ।।
मणि मोतिन चौके चारु पुरावत, नन्द लुटावै धन गईया ।।
हाँथ नहर लैके नाउन ठनगत, धगडिन नेग मगईया ।।
बाजत ढ़ोल मृदङ्ग झांझ डफ, शंख सरस शहनईया ।।

मंगल गान करति वृज गोपिन्ह, प्रमुदित यशुमति मईया ।।
नन्दभवन भई भीर सुहावन, अगर अवीर उडइया ।।
"गिरिधर" मुदित बधाई गावत, चिरजीवो मीत कन्हैया ।।

(१४)

आई मंगल घड़ी बरसे फूलन्ह झड़ी ।
बेला भाई, विश्व में आज बजती बधाई ।।
क्या सुहाना समय भाग्य बन आ गया ।
मेघ मंडल गगन मध्य था छा गया ।
कृष्ण पख अष्टमी भा रही यामिनी ।
बेला भाई, विश्व में आज बजती बधाई ।।
इन्दु प्रमुदित नखत संग में राजते ।
देवगण अंजली भाव की साजते ।
साजकर आरती गा रही भारती ।
बेला भाई, विश्व में आज बजती बधाई ।।
आज गोकुल का सौभाग्य होता अमर
दास "गिरिधर" के प्रभु दिव्य नर देह धर
भक्त गण नाचते प्रेम से राचते
बेला भाई, विश्व में आज बजती बधाई ।।

(१५)

चलो चलो री सकल ब्रजनारि
कन्हैया जूँ को जनम भयो ।।
नन्द महर घर आज बधाई
आठो सिधि नव निधि घर आई
सजो सजो री सुमंगलचार ।। कन्हैया जूँ को ...।।
आज जगे सखि भाग हमारे
परमेश्वर नन्द भवन पधारे
लुटो लुटो री आनन्द प्रसार ।। कन्हैया जूँ को ...।।
चलके ललन को पलना झुलावें
"गिरिधर" प्रभु लखि नयन जुडावें

जियो जियो मेरे नन्दकुमार ।। कन्हैया जूँ को ...।।

(१६)

यशोदा तूने ब्रह्मको पूत बनायो ।
यशोदा तूने ईश को पूत बनायो ।
व्यापक अकल अनीह निरंजन नेति नेति श्रुति गायो ।।
सोइ शिशु रूप पलंग नव शोभित सुन्दर रूप सुहायो ।।
जाके रोम- रोम प्रति राजत बहु ब्रह्माण्ड समायो
सोई लघु-लघुकर चरन लसित लसे देखत मन ललचायो....।।
जाकी भृकुटि विलास मात्र ते कालहुँ जिय डरपायो ।।
सोइ प्रभु निरखि छाह निज डरपत नयनन्ह नीर बहायो ।।
सुनत जठेरिनि के मृदु बचनन महरि हरष मन पायो ।।
"राम भद्रदासहिं" यह कौतुक सुमिरि सुमिरि अति भायो ।।

(१७)

आज घर घर मंगल साजो, मोहन मेरे ब्रज आये ।
आज मोतियन थाल भराओ, मोहन मेरे ब्रज आये ।।
मोदमें मग्न सबै मिली ग्वालिनी ।
हार बनावत प्रमुदित मालिनी ।
आज घर घर दीप जलावो, मोहन मेरे ब्रज आये ।।
योगी जती नित ध्यान लगावत ।
शिव सनकादि दरस नहीं पावत ।
आज नयनों की प्यास बुझाओ, मोहन मेरे घर आये ।।
व्यापक ब्रह्म प्रकट सचराचर ।
"गिरिधर" प्रभु शिशुवर राधावर ।
आज लखि लखि नयन जुड़ाओ, मोहन मेरे घर आये ।।

(१८)

जरा चलके वृन्दावन को देखो, श्याम यमुना नहाते मिलेंगे ।
गोपियों के भवन में वे घुसके, मंजु मक्खन चुराते मिलेंगे ।।
जो था व्यापक सकल लोक पालक, बन गया है वही गोप बालक ।
जहाँ हलधर श्रीदामाके संगमें, कृष्ण गौवे चराते मिलेंगे ।।

जहाँ राधाके प्राणोंसे प्यारे, रोहिणी औ जसोदा दुलारे ।
वे सलोने मदन मोहिनीसे, लोक मानस लुभाते मिलेंगे ।।
पहने गुंजा औ वैजन्ती माला, वे सलोने सुघर नन्दलाला ।
लेके काली कमरिया लकुटिया, बाल कौतुक कराते मिलेंगे ।।

जो कालीके शीशों पर नाचे, नारियोंके गलैचोंपे नाचे ।
जहाँ चढ़के कदम्ब बिटप पर, रास लीला रचाते मिलेंगे ।।
जहाँ बाँके बिहारी की झाँकी, है बिलोकनि तिरीछी सी बाँकी ।
इस अकिंचन अनाथ "गिरिधर" को वे ही मुरली बजाते मिलेंगे ।।

(१९)

अभी हमने जी भरके देखा नहीं हैं ।।
अभी हमने जी भरके देखा नहीं हैं ।।
अये श्यामसुन्दर हृदयमें तो आवो ।
सरस माधुरी आज दृगभर पिलावो ।
तुम्हारे दरसको तरसती रही मैं ।
क्योंकि, अभी हमने जी भरके देखा नहीं है ।।१।।
तरसते रहे चारु लोचन हमारे ।
नहीं तुम पंधारे जनोंके सहारे ।
कृपा करके अब आज भगवन् उधारे ।
क्योंकि, अभी हमने जी भरके देखा नहीं है ।।२।।
अये नन्दनन्दन मधुर मुस्कुरालो ।
नयन नीर "गिरिधर" के सार्थक बनालो ।
जरा लाल मस्ती में मुखड़ा दिखालो ।
क्योंकि, अभी हमने जी भरके देखा नहीं है ।।३।।

(२०)

आज सखि आँख भर देखो अजब मोहनकी झाँकी है ।
रसीली है चपल चितवन कटीली भौंह बाँकी है ।।१।।
मुकुट शिखि पिच्छका सुन्दर अलक लटके बदन ऊपर ।
कपोलोंपे सुभग कुण्डल तिलक सुषमा कलाकी है ।।२।।

अधरपे राजती बंसी कमल कुड़मलपें ज्यों हंसी ।
गले में राजतीमाला वसन शोभा चलाकी है ॥३॥
त्रिभंगी चाल मतवाली देह द्युति घन घटा काली ।
सभीपे मोहनी डारी सुछवि "गिरिधर" ललाकी है ॥४॥

(२१)

देवकी की वेदना

यशोदा तैने बहु विधि पुन्य कियो रे ।
जाते बालकृष्ण तव आँचल, अपनो बास कियो रे ॥
जो हरि क्षीर सिन्धु के क्षिरनि, कबहुँ न ध्यान दियो रे
सोई अब ललकि बैठि तव गोदहिं, थन पय उमगि पियो रे ॥
घुटुरुनि चलत ठुमुकि कल किलकत, अलकनि ओट कियो रे,
सुन्दर रूप निहारि श्याम को, नैनन लाभ लियो रे ॥
मैं अभागिनी कंस बन्दिगृह शोक वियोग छियो रे,
"गिरिधर" जसुमति सम बड़ भागिनी को कहि सके बियोरे

(२२)

★ देवकी जी का अनुत्ताप ★

मेरो लालन आज सुखी व्रज होइहैं ।
आज नन्द की महर सुहागिनी, प्रभु मुख कमल बिलोकत होइहैं !
मैं न देखि पाई वह सुषमा, छुटुरुन चलत चपल शिशु होइहैं
लै लै गोद नन्दसुख उमगत, जसुमति मुदित वलैय्या लइहैं ॥
हाँ दिन गिनति कंस कारागृह, विधि मेरी बिपति कबहिं अब खोई हैं
"गिरिधर" कबहिं होइ सो शुभ दिन, जबहिं आइ निज दरसन दइहैं ॥

(२३)

यशोदा पुनि पुनि प्रभुहि सिखावें ।
बार-बार मुख चूमि कान को, कान में कहि समुझावें,
छी-छी, थू-थू कहति मोरि मुख, श्याम ते रजहिं छुड़ावें ॥
कबहूँ माखन देति यशोदा कबहुँक पय पिवरावें ।
टूटेगा तेरो दाँत ललन मेरे करि करि जतन बुझावें,
यह लीला गोपाल राय की "गिरिधर" चितहिं चुरावें ॥

(२४)

राजत कान्ह नन्दकी गोद
नखसिख सुन्दर धूरि बिधूसर,
नील सरोरुह जनु नव जलधर;
बैठे मुदित पितु अंक लालजु,
बहुविधि करत विनोद ॥
कबहुँ रहस बस सीस हीलावत,
नयन मीच कबहुँक मटकावत,
खेलत मनहुँ कनक तरु अंकन,
नवल अमल अम्भोद ॥
बातें करत लसत लरिकाई,
अंगुरिन भालके तिलक मिटाई,
लखि बिहँसत प्रमुदित नन्दराइ,
"गिरिधर" मगन प्रमोद ॥

(२५)

यशोदा पुनि-पुनि हरिहिं दुलारै
करि मनोहार हरिहिं उर लावति, आनन चूमि-चूमि चुचुकारै ॥
लै उछंग हलराइ मल्हावति, थन पय पियाइ निकट बैठारै
बारति छबि पर बसन धेनुमणि, विधु मुख दृग अनिमेष निहारै ॥
कबहुँक महरि लवण राई लै, छगन मगन की नजर उतारै
कबहुँक टोटक मन्त्र कछुक पढ़ी गौ पूच्छन तें ललनहि झारै ॥
कबहुँक महर बुलाइ दिखावति ब्रज अनन्द पर सुर सुख वारै
झाँकी झाँकि ललन ""गिरिधर" को सुरपति निज सब सुकृत निवारै ॥

(२६)

यशोदा बड़ो नटखट ललन तुम्हारो ।
बीच गलिन महँ रोकत टोकत चंचल कान्हरो कारो ॥
अब लौं कछुना कही तुम्हहिं तें हुतो संकोच हमारो
अब का कहहुँ निमिष महँ याने लाज शरम तजि डारो ॥

जाति हुति निज गयल रहस बस करि सिंगार तनु सारो
छैल छबिलो निपट निडर तेरो गागर ढेलन मारो ॥
गगरी फुटी चुनरिया भीगी तापे दई मोहि गारो
सासु ननद तें करी शिकायत चल न तहाँ कछु चारो ॥
हार तोरि घट फोरि मोरि मुख चोर्यो चित्त हमारो
एतेहु पर "गिरिधर" लागत मोहि सदा प्राण तें प्यारो ॥

(२७)

लाला के पाँव पैजनी बाजे रे ॥
भुवन विमोहन छगन मगन मेरो,
लाला के नैन कजरा राजे रे ॥
कुटिल अलक भाल लसती तिलकिया,
लाला के कर कंगना राजे रे ॥
अरुण अधर विधु बदन सुधामय,
लाला के कण्ठ कठुला राजे रे ॥
"गिरिधर" के मीत पे लगाओ जनि नजरिया,
लाला के तन झिंगुली राजे रे ॥

(२८)

हमारो कान्हा सकल सुभग सिर मौर ।
नख सिख रुचिर ठगौरी डारी, अंग अगंनि करि ठौर ॥
जा तनु की लघु एक किरन लहि काम बाम भई बौर,
सो राधिका बिकी बिन मोलहिं निरखि बिलोचन कोर ॥
मोर मुकुट सिर झख-ध्वज कुण्डल, लसत मालिका छोर,
नील जलद पर मनहु पाँति बक बिलसत पीत पिछौर ॥
नित वृषभानु सुता पद सेवत रिद्धि-सिद्धि सब और,
ताकर चित निज मन्द हँसन ते "गिरिधर" प्रभु लियो चोर ॥

(२९)

छबि देखो जशोदा दुलारे की ।
मरकत श्याम तमाल कलेबर, मदन विमोहन हारे की ॥
कुंचित केश मयूर मुकुट सिर, अरुण नयन रतनारे की ॥

लटकत ललित छबीली मटकन बदन दशन बर वारे की ॥
जेहि चितवत तेहि बस करि राखत, राधा प्राण पियारे की ॥
हाथ लकुटि लसे कमरी काँधे, गोकुल के रखवारे की ॥
गिरिधर लखि "गिरिधर" मन मोहत, माधव मुरली वारे की ॥

(३०)

नन्द तेरो आज सुभाग भयो ।
जहँ जन्मे श्री कृष्ण कन्हाई, पूत पुनीत लयो ॥
परमारथ ही पाई सुकृत फल, जग जस अमल जयो
परमात्मा बाल होई बिलसत, मंगल मोद भयो ॥
जिनके दरस लगि जोगिन के, कोटिक जनम गयो
"गिरिधर" सोई तव अंक बिराजत, धनि-धनि बिरुद बयो ॥

(३१)

आज पूतना को दया नहिं आई ।
सिरिष सुमन सुकुमार सुतन लखि नहीं मन में शरमाई ॥
नयन पुतरि ज्यों जेहि नित जोगवत सजग जशोमति माई ।
ऐसे शिशु कहँ पापिन थन में दीन्हेसि गरल पियाई ॥
पियऊ आँस पर पान सहित प्रभु दिये गोलोक पठाई ।
गिरिधर सुमन मुदित सुर बरसत जय जय कुँवर कन्हाई ॥

(३२)

★ यशोदा-विलाप ★

हमारा कन्हैया कहाँ खो गया,
हमारे हृदय की खुशी ले गया ॥
ओ जमुना मइया विनय है हमारी,
मुझे ले के दे दे तू मेरा बिहारी,
हमारा अजिर तो सूना हो गया ॥
दिखाऊँ मैं मुख आज नन्द बाबा को कैसे,
जिऊँ आज मोहन बिना हाय कैसे,
अचानक विधाता ये क्या हो गया ?
उड़ाया किसी ने ये आँधी बनाकर,

कहाँ छिप गया लाडला मेरा "गिरिधर"
भवन का मेरे ये दिया छिप गया।।

(३३)

मुरलिया कान्हा मधुर बजा।
रोम रोम रसमय हो मेरा, मिट जाये जनमों का फेरा
वशीकरण का मंत्र फूँक दे, मंगल तान सुना ।। मुरलिया ।।
भूल जाँय अग जग के नाते
जो तुमसे हैं दूर ले जाते,
नित्य अनल ज्यों हृदय जलाते,
हे मनमोहन राग सुधा से, दारुण अगिनि बुझा ।। मुरलिया ।।
बावरी ह्वै गईं ब्रज की नारी,
लोक लाज कुल कान बिसारी
"गिरिधर" तेरी प्रेमकला यह, याको अब अपना ।। मुरलिया ।।

(३४)

आओ भोग लगाओ, मेरे श्याम जी ।।
आप भी खाओ राधा जू को लाओ,
प्रेम सहित सब पाओ, मेरे श्याम जी ।।
ऐसी विधि से भोग लगाओ,
सब अमृत ह्वै जावे, मेरे श्याम जी ।।
जो जन याको जूठन पावे
सो तेरो ह्वै जावे, मेरे श्याम जी ।।
"गिरिधर" दोउ कर जोरि निहोरत
मधुर-मधुर मुसुकाओ, मेरे श्याम जी ।।

(३५)

सोचे ब्रज की गुवालिनी, ब्रज की गुवालिनी
कैसेक मथिये दही रे दही, सखि दही रे दही ।।
आयो कुंज बिहारी, सखि कुंज बिहारी।
शोभा निरखि, सुधि रही न रही ।।
पकरे चुनरी हमारी, पकरे चुनरी हमारी

मोहन मेरी नथनी, गही रे गही ॥
झगरे ननदी दुखारी, झगरे ननदी दुखारी,
सासु सत गारी, कही रे कही ॥
मेरो मदन मुरारी, मेरो मदन मुरारी
मन की सुरतिया, लही रे लही ॥
मैं तो दासी तुम्हारी, मैं तो दासी तुम्हारी
"गिरिधर" कही ये, सही रे सही ॥

(३६)

कोई कछुक-कछुक याको बोले रे, पै कन्हैया लाला मेरो है ॥
याके कारन कोटि जतन किये, जमुना रात नहाये,
तीरथ ब्रत उपवास जग्य तप, कोटिक विप्र जिवायें,
या तो बाहर भीतर डोले रे, पै कन्हैया लाला मेरो है ॥
नाम मात्र याको महर जसोदा तनय रूप में जायो,
हमने घालि पालनो मंजुल, याको मुदित झुलायो,
चाहे काहु के संग या खेले रे पै कन्हैया लाला मेरो है ॥
बेल के पात चढ़ाय शम्भु को, हमने यह बर पाये,
"गिरिधर" प्रभु शिशु रूप गोद लै, जीवन सफल बनाये,
चाहे मरम अपनो नहिं खोले रे, पै कन्हैया लाला मेरो है ।

(३७)

भक्तन की मोदमयी कामना पुराइबे को, लीलाधर बीच-बीच मोद को बढ़ावे हैं
भक्तन के मंजु मन मधुकर रमाइबे को, रसिक रिझाइबे को रास प्रभु रचावें हैं
मुरली बजाइबे को भावना सजाइवो दो मन्मथ लजाइवे को प्रेम विरुझावे हैं
"गिरिधर" से दीनन को अमृत चखाइबे को चखिबो को माखन मृदु मोहन ब्रज आवे हैं ॥

बाज रही जमुना के तीर मुरलिया, बाज रही जमुना के तीर
सुनि के गुवालिन जोगिन बनी गै
सुधि ना रही कछु बिसरयो शरीर ॥
छाडि- छाडि धन धाम काम श्याम पहिं आई
भाये मन गोपिन्ह के प्रभु बलवीर ॥

देखि प्रभु चन्द्र मुख भई है चकोरी
गोरि भाव रस भोरी धरत न धीर ॥
बाँके बिहारी पे सर्वस वारे
"गिरिधर" प्रभु लखि ह्वै गई अधीर,

(३८)

देखो री एक कौतुक जसोमति माई ॥
साँझ समय सिगरी ब्रज गइया हुँकरि लवाई लवाई।
निकट जाइ तेरो सुत चाटत सूंघत रहत पिन्हाई ॥
थन पय स्रवति मेलि मुख पंकज गैया रही पियाई।
जनु सुरभी निज प्रेम कलश तें मेघहिं रहि अँचवाई ॥
लखहु महरि शिशु कहँ सब गउअन उबटि रही अन्हवाई ॥
नेकु न डरत पियत पय बिहँसत प्रमुदित बाल कन्हाई ॥
जो कहुँ आवत बछरू रहस बस सींग ते देहि भगाई।
घेरि रहति अरु पलक न टारति चितवहि गोकुल गाई ॥
सुनि सखि बचन निरखि यह शोभा मातु मुदित मुसुकाई।
"गिरिधर" जोहि नन्दनन्दन छबि हरषि नयनफल पाई ॥

(३९)

कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे ।
विपत्ति के क्षणों को गुजारा करेंगे ॥
जो आयेगा संकट कहेंगे तुम्हीं से,
चरण आँसुओं से पखारा करेंगे ॥
उठाओगे जो तुम नखों पे गोवर्धन
तुम्हारा बदन हम निहारा करेंगे ॥
बजाओगे मोहन मधुर बाँसुरी तुम,
सरस राग में हम सँवारा करेंगे ॥
छिपोगे कहीं जाके कुञ्जों में "गिरिधर"
वहीं चुपके चुपके निहारा करेंगे ॥

(४०)

चोरी चोरी माखन खा गयो री माई एक बालक छोटो सो
सखियों ने पूछा तेरे माई बाप कौन हैं ?
नन्द यशोदा बता गयो री माई एक बालक छोटो सो
सखियों ने पूछा तेरो नाँव गाँव क्या है ?
गोकुल औ कनुआ बता गयो री माई एक बालक छोटो सो
सखियों ने पूछा तेरे गोप सखा कौन हैं ?
हलधर श्रीदामा बता गयो री माई एक बालक छोटो सो
सखियों ने पूछा तेरी गोप सखी कौन है ?
राधा औ ललिता बता गयो री माई एक बालक छोटो सो
सखियों ने पूछा तेरो बाल सखा कौन है ?
"गिरिधर" को नाम बता गयो री माई एक बालक छोटो सो

(४१)

काहे माटी खाई कन्हाई, पूछत निपट रिसाई ॥
संग खेलत तेरे सुबल सुदामा,
पुनि पुनि कहत भाई बलरामा,
माटी खाई तब घनश्यामा,
बार-बार मोते आर करत हैं, पुनि-पुनि ठाँव दिखाई ॥
दूध- दही को खाओ नाहीं,
व्यंजन षट्रस मंदिर माँहीं,
सुधा स्वाद मुनि सिद्ध सिहाहीं,
ताहि त्याग कर मदन गोपाल मेरे, माटी क्यों रहयो खाई ॥
सुनि मृदु बचन कहत बनवारी
माटी नहीं खायो महतारी,
झूठ कहत सिगरे ब्रज नारी,
नहि पतिआव महरि मेरे ऊपर, दैहौं बदन दिखाई ॥
बदन दिखाई भुवन परिपाटी
जसुमति मोह जवनिका फाटी,
अति सभीत छूटी कर साटी,
बालकृष्ण लीला अवलोकत, "गिरिधर" बलि-बलि जाई ॥

(४२)

यशोदा मैया मैं नहीं माखन खायो ।
रोवत कान्ह आँसु मुख धोवत, करि बहु जतन दुरायो ।। यशोदा मैया ।।
गोरस खाइ फोरि गयो मटकी, औरन मोहि लगाओ ।
तेरे आगे ग्वालबाल सब, मेरो कर पकरायो ।। यशोदा मैया ।।
मेरे कहाँ कमी माखन की, छकड़न दही भरायो ।। यशोदा मैया ।।
बाल गोपाल चोर माखन को, "गिरिधर" मन अति भायो ।।
यशोदा मैया ।।

(४२)

प्रिया जू की मधुर मधुर मुसुकान, कान की कुटिल अलक लटकान ।
कान को गोरज तिलक बिराजे, राधा जू को बिन्दिया राजे,
श्रुति कुण्डल की झिलमिल झलकान । कान की ।।
याके खंजन दृग कजरारे, राधा के नयन रतनारे,
सखि बिलसत युगल छबीली शान ।। कान की ।।
याकी सोहें छबीली भौंहें, राधा चितवत तिरछौहें,
दोउ निरखत भक्त सकल अघान ।। कान की ।।
याके हाथ मुरलिया राजै, राधा कर कंगना बिराजै,
"गिरिधर" उर लसत युगल की तान । कान की ।।

(४४)

लालन कबहिं कहहिं मोहि मैया ।
कबहिं चलहिं घुटरन नन्दनन्दन हरि संग हलधर भैया ।।
कबहिं मांगि माखन मेरो खाइहिं, छगन मगन मेरो छैया ।
कबहिं उबटि अन्हवाइ मुदित मन, जाइ चरावहिं गैया ।।
धूरि विधूसर गात ललित मुख, आइहिं कब यदुरैया ।
बैठि जसोदा नयन जुड़ाइहिं, "गिरिधर" चित सुख दैया ।।

(४५)

आज हरि जेवत मंगल थार ।।
छप्पन भोग रचे बहुव्यंजन, छरस रुचि जेबनार ।
कनक कटोरन शाक सुहावन, स्वादहु रुचि अनुसार ।।

कनक कलस जमुना जल सोहत, सुरभि सुधा शशी सार ।
ललिता सखी सप्रेम परोसति, मोद विनोद अपार ॥
राधा सहित रसिक प्रिय जेवत, माधव नन्द कुमार ।
झाँकी निरखि मुदित आलीगनि, जय "गिरिधर" सुकुमार ॥

(४६)

नयनों में नींद भरि आई गोपाल के ।
अरुण तरुण सरसीरूह लोचन, लसति ललित अलसाई ॥
शरद कमल हिमकर सम आनन, उलटि लकुट जमुहाई ॥
छिन -छिन पलक उघारत मूँदत, खञ्जन द्युति ललचाई ॥
भूषण बसन शिथिल सब अँगन, अलक लटत मूँदि आई ॥
थपकी दै दै अंग सुहावति, ललित पलँग पौंढ़ाई ॥
"गिरिधर" वह छबि निरखि निरखि के, बार-बार बलि जाई ॥

(४७)

माधव आज बने अभिराम ।
अखिल लोक लावण्य सिन्धु लखि, लाजत कोटिक काम ॥
वेणु बजावत ब्रज मग आवत, संग सखा बलराम ।
मेचक कच कुंचित रजरूपित, नखसिख शोभाधाम ॥
मोर मुकुट सिर भाल तिलक छबि, कुण्डल ललित ललाम ।
अरुण अधर मुख शरद सुधा[illegible] गल गजमुक्ता दाम ॥
वाल विनोद धेनुवर बीचहीं, बिलसत ब्रह्म अकाम ।
इन्द्र धनुष बिच लसत व्योम जनु, "गिरिधर" प्रभु घनश्याम ॥

(४८)

चाल त्रिभंगी दिखादे कन्हैया, जरा मुरली मधुर बजादे ।
साँवरि मूरति सुछबि सुधासे, नैनों की प्यास बुझादे ॥
बाँके बिहारी चपल चारु चितवन, चितइ चितइ हरषादे ॥
चटक मटक चटकीली रँगीली, झाँकी के दरशन करादे ॥
बैठके मोहन कदम्बकी डरिया, मधुर मधुर मुसुकादे ॥
ब्रज बनितन संग नाच रसिक प्रिय, घुँघरुकी तान सुनादे ॥
"गिरिधर" हृदय सरस वृन्दावन, मंगल रास रचादे ॥

(४९)

ऐसी तान सुनइयो कन्हैया मेरे ।
भूल जाय व्यवहार जगत को ।
ऐसी कृपा बरसइयो । कन्हैया मेरे ॥
तन मन धन सब तुम पर बारी ।
अब न हमें ठुकरइयो । कन्हैया मेरे ॥
मोहन मूरित सुछवि सुधारस ।
नयन चकोरहीं पिअइयो । कन्हैया मेरे ॥
मंगल रास रचाय रसिक प्रिय ।
मुरली मधुर बजइयो । कन्हैया मेरे ॥
राधावर नटवर "गिरिधर" कहँ ।
चरन सरोज दिखइयो । कन्हैया मेरे ॥

(५०)

प्यारे मोहन मुरलिया बजाय दे, मन्द मुसुकाय दे रे ॥
वृन्दावन की कुंज गलिनमें ।
तान मीठी साँवरियाँ सुनाय दे, मन्द मुसुकाय दे रे ॥
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल ।
टेढ़ी चितवन की जादु चलाय दे, मन्द मुसुकाय दे रे ॥
दै दै ताल सखिन्ह संग नाचत ।
गोपीजनकी मनोरथ पुराय दे, मन्द मुसुकाय दे रे ॥
कीर्तिकुमारी के सर्वस बिहारी ।
रास कौतुक मनोहर रचाय दे, मन्द मुसुकाय दे रे ॥
परम पुनीत मीत "गिरिधर" के,
दिव्य लीला के दरशन कराय दे, मन्द मुसुकाय दे रे ॥

(५१)

बसुरिया बाज रही जमुनाके तीरे ।
मीठी सुरीली रसीली है तानें, सुनिके समाधि तजे धीर ॥
मुरलीकी धुनि सुनिके भागी गुजरिया भूलि गयी अपना शरीर ।
भोजन शयन छोड़े भूषन बसन छोड़े, छोड़े रतन मोती हीर ॥
बाँके बिहारीकी झाँकी निराली, देखि भई गोपी अधीर ।
"गिरिधर" के चरणों में तन मन बारी, पहुँची कालिन्दीके तीर ॥

(५०)

ऐसी तान सुना कन्हैया, मैं नाचूँ तू गा ॥
कन्हैया मैं नाचूँ तू गा ॥
रसकी धार बहे जीवन में ।
मस्त फिरुँ मैं वृनदावन में ।
रूप तुम्हारा हो इस मन में ।
कल्प कल्प मेरा तन्मय हो, ऐसी मस्त बना ॥
कन्हैया मैं नाचूँ तू गा ॥
रूप तुम्हारा सतत निहारूँ ।
तव चरणों में तन मन वारूँ ।
जीवन को भी तृण कर डारूँ ।
अब बृजराज किशोर मुझे तो, ऐसी टेर सुना ॥
कन्हैया मैं नाचूँ तू गा ॥
निरख बदन मैं सब कुछ भूलूँ ।
भजन तुम्हारा कर कर फूलूँ ।
आनन्द के झूले पर झूलूँ ।
श्री राधिका संग अब गिरिधर, ऐसा रास रचा ॥
कन्हैया मैं नाचूँ तू गा ॥
देख तुम्हें निज नयन जुड़ावुँ ।
जीवनका अनुपम फल पावूँ ।
तुम पर निज सर्वस्व लुटाऊँ ।
हृदय बसो "गिरिधर" के स्वामी, मुरली मधुर बजा ॥
कन्हैया मैं नाचूँ तू गा ॥ ४ ॥

(५३)

नटवर कुँवर कन्हाई कब पीर हरोगे
पागल है वन वन महँ ढूँढ़त सुधि बुधि सब बिसराई ।
दीन दयालु उदार शिरोमणि, गुन अवगुन समुदाई ।
कत हृदय करोगे ॥

तुम बिनु प्राण चलन चहे प्रियतम।
हहरि हहरि अरगाई, कब विपति हरोगे ।।
कब "गिरिधर" गोपिन के सिर पर।
कृपा सुधा बरसाई, कर कञ्ज धरोगे ।।

(५४)

मोहन आज बने गोदनारी
देखि मुदित भइ सखिन संग लै, आइ तहँ वृषभानु दुलारी ।।
काह लिखइहौ कहत बिहसि हरि, नयन नीर भरे कीर्ति कुमारी ।।
बाम बाहु लिखु नटवर नागर, दाहिन भुज लिखु कुंज बिहारी ।।
अँगुरिन लिखु अनंग मद मर्दन नख पर लिखु गोवर्धनधारी ।।
कंठ कन्हैया उर पर "गिरिधर" लिखिये नाम विचित्र विचारी ।।
कर परसत पहिचानि गई प्रभु राधा लये उर लाय मुरारी ।।

(५५)

आजु मोरी गयी है मुरलिया चोरी।
ता बिनु शिथिल भये सिगरे अंग, देह दशा भयी भोरी ।।
चितवन चकित चहूँ दिसि चक पक खोजत सबा वृज खोरी।
पावत नहिं फनि मनि ज्यों व्याकुल, कान्हा कहत निहोरी ।।
को है हितु हमार सखिन्ह महँ देवो बाँसुरियाँ मोरी।
हा हा करत हठि पाँव परत हौं नहिं करि हौं बरजोरी ।।
याके बदले नौ लाखन को गैय्या दइहौं छोरी।
कबहूँ आरि आलि न करिहौं दइहौं न गागर फोरी ।।
निरखि दशा प्रियतम की बिहँसत श्री वृषभान किशोरी।
गिरिधर आनन बिधुहिं बिलोकति भयी सखि चन्द चकोरी ।।

(५६)

पालत नेह नातो जदुराई।
लोक वेद सब दूरि करत है श्याम सनेह सगाई ।।
तजि गोलोक सकल सुख वैभव, हाटक भवन अथाई।
नन्द जसोमति प्रेम बिबस प्रभु ललन भये हठि आई ।।
जेहि निज भृकुटि बिलास रहसि नित मायहि नाच नचाई।

सोइ ब्रज युवति ताल पर नाचत भूलि सकल ठकुराई ॥
जेहि कमला करतल नित लालति निज उर कमल छिपाई ।
वृन्दावन तेहि पद पंकज तें धावत धेनु चराई ॥
लोक वेद मरजाद त्यागि सब गोपी शरणहिं आई ।
तिनके सुजस देव मुनिवर तें हरि करि कृपा गवाई ॥
नेति नेति कहि जाकी महिमा वेद पार नहीं पाई ।
सोइ निरगुनहि उलूखल बांध्यो चपरि जसोमति माई ॥
कोटि जनम लगि साधन करि करि चिन्तहि मुनि समुदाई ।
सोई प्रभु बाल सखन्ह संग खेलत हँसत करत रुगदाई ॥
लोक पाल जम वरुण काल पर जेहि निज मीति चलाई ।
सोइ वृषभानु सुता पद चाँपत ईश्वरता बिसराई
दवा पान कालिय नथि गिरि धरि ब्रज की बिपति बटाई
शरद पूर्णिमा रजनी मुदित मन गोपिन्ह रास रचाई ।
नेह निबाहन हार लोक तिहुँ कान्ह सरिए नहीं भाई ।
यह जिय जानि मन्द "गिरिधरहुँ" तासन करी मिताई ॥

(५७)

मुरहर ! रन्धनसमये मा कुरु मुरलीरवं मधुरम् ।
नीरस मेधो रसतां कृशानुरप्येतिकृशतरताम् ॥

× × ×

कन्हैया तोरी मुरली जादू भरी ॥
कंटे बाँस की गजब बँसुरियाँ,
मोही धुनि सुनि सकल गुजरियाँ,
या सौतन कहँ तबहुँ मेरे पिय, तैं कत अधर धरि ॥
कैसो बसीकरन है यामे,
सकल मधुरता निवसि जामें,
जीवन रस की मूरि सुधामय, जोगि समाधि हरि ॥
जब हम चाहत करन रसोई,
तब याको मंगल स्वर होई,
निखिल भुवन रस पूरि ललन तुम, हरित करत लकरि ॥

इंधन समय न याहि बजाओ,
सासु ननद ते जनि झगराओ,
यों कहि घुंघट ओट "गिरिधरहिं" निरखत डगर अरि ।।

(५८)

देखो री सखी रास रचायो श्याम ।
वृन्दावन जमुना तट सुन्दर, त्रिविध पवन अभिराम ।
विहरत सखिन बीच नन्दनन्दन, जन मन पूरन काम ।।
विवुध विमान निशान बजावत, सुर बर जोरि ललाम ।
बरसत सुमन छनहि छन हरषत, करषत चितहि अकाम ।।
दै दै ताल नचत नट नागर, जन सुर तरु आराम ।
"गिरिधर" निरखि रास यह प्रमुदित, जयति कृष्ण सुखधाम ।।

(५९)

चलो री सखी देखन हरिको रास ।
वृन्दा विपिन पुलिन जमुनाको, हिमकर किरन विलास ।।
शीतल मंद सुगंध पवन चले, सरसिज शरद विकास ।
विलसत विमल गगन उडुगन जुत, सब विधि सकल सुपास ।।
गावत जस गन्धर्व मधुर सुर, किन्नर सहित हुलास ।
विहरत श्री वृषभानुसुता संग, प्रमुदित रमा निवास ।।
मनहुँ नील नीरद चपला संग, करत केलि महि पास ।
लोचन लाहु लेहु अलि एहि छन, मन कर तजहु हरास ।।
"गिरिधर" प्रभु लीला मुनि मोहनि, निगम अगम यह रास ।।

(६०)

चलो री सखियों वो रास देखें, जो वन में माधव रचा रहे हैं ।
बजा अपनी सुरीली बंसी, दिलो में हलचल मचा रहे हैं ।।
पहन के गुंजा मोती की माला, मयूर मुकुटी छबीली चितवन ।
फिरा के अपनी रसीली भौंहे, सभी के मनको चुरा रहे हैं ।।
मचल मचल के वो प्यारे नटखट, चला के चंचल दृगों के टोने ।
अनेक गोपीजनों से "गिरिधर" श्री राधिका को मना रहे हैं ।।

(६१)

श्याम तूने कैसी रास रचाई ।
निज माया बल, वृन्दावन महँ, सरस बसन्त बसाई ।
शरद फुल मल्लिका मनोहर, शुभ चान्दनी सुहाई ।।
चढ़ि कदम्ब माधव त्रिभंग भै, मुरली मधुर बजाई ।
सुनि सुनि धाम काम तजि जहँ तहँ, धाई सकल लुगाई ।।
प्रति अंगना मध्य नन्दनन्दन, मण्डल बरन न जाई ।
तडित सहस्र बीच जनु निरतत, सावन घटा लुभाई ।।
बाजत बलय किंकिनी नूपुर, नाचत तिय जदुराई ।
"गिरिधर" मुदित निरख यह झाँकी, जय जय कुँवर कन्हाई ।।

(६२)

विहरत श्याम गोपिन्ह संग ।
शरद शशी पूरन बिराजत, रहस विवश विहंग ।।
विमल वृन्दावन निकुञ्जन, जमुन तरल तरंग ।।
सप्त ताल त्रिताल दै हरि, नचत सहित उमंग ।
कनक मनिगन मध्य निरतत, मनहुँ घन महि रंग ।।
बजत झांझ मंजीर मञ्जुल शंख ललित मृदंग ।
बरसि हरषि प्रसून गावत, बिबुध वेश कुरंग ।।
चकित इत उत चपल चितवन, कृष्ण राधा संग ।
रास मिस "गिरिधर" करत मद, रहित अमित अनंग ।।

(६३)

मैं बार बार बलिहारी मोहन मैं तुम पे बलिहारी ।।
शरद मयंक समान मनोहर, लख तब आनन शोभा ।
भूल गया संसार हमारा, तन मन तुझ पर लोभा ।
हे प्रणत भीति दुःखहारी, मोहन मैं तुम पे बलिहारी ।।
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल, भाल तिलक की झाँकी ।
मधुर मधुर मुसुकान अनूपम, चंचल चितवन बाँकी ।
लख भूलि मैं सुख सारी, मोहन मैं तुम पे बलिहारी ।।
श्याम शरीर सुभाय सुहावन, उर बैजन्तीमाला ।

मन मन्दिरमें रमा निरन्तर, ललित त्रिभंगी लाला।
तुम राखो लाज हमारी, मोहन मैं तुम पे बलिहारी ।।
दीन बन्धु करुणा के सागर, कृपा सुधा बरसादो।
"गिरिधर" मन वृन्दावन में प्रभु, मुरली मधुर बजादो।
नन्दनन्दन रास बिहारी, मोहन मैं तुम पे बलिहारी ।।

(६४)

चलो चलो री सखि वृन्दाबन में ।।
जहाँ ब्रह्म शिशुरूप बिराजत।
तन छबि निरखि काम शत लाजत।
साधक सुषमा आनन में ।। चलो चलो री ।।
ललित लवंग लता कुञ्जन में
मधुकर रुचिर मधुर गुञ्जन में
मञ्जुल कुसुम मृदुल कुञ्जन में
ऋतुपति मोहन कानन में ।। चलो चलो री ।।
कान्ह जहाँ नवनीत चुरावत।
मुरली बजावत धेनु चुरावत।
"गिरिधर" कहुँ हँसि हरषि बुलावत।
खेलत विहरत उपवन में ।। चलो चला री ।।

(६५)

निहारो हे ब्रजराज किशोर।
दीन दरिद्र दशा भारत की नीरज नयन की कोर ।।
नैतिकता का यह परिवर्तन।
क्रूर दुष्टता का यह नर्तन।
मानवता लतिका का कर्तन।
नटवर नन्दकिशोर ।।
संस्कृति दृगभर निरख रही है।
गौंए चहुँ दिशि बिलख रही हैं।
"गिरिधर" प्रभु एकबार पधारो।
श्रीमुख चन्द्रचकोर ।।

(६६)

जहाँ ले चलोगे वहीं मैं चलूँगी, न बादे से मोहन कभी मैं टलूँगी।
तुम्हीं मेरे प्राणों के सर्वस्व स्वामी, मैं हूँ नाम तेरा तू मेरा है नामी।
सदा तेरी काया की छाया रहूँगी, जहाँ ले चलोगे वहीं मैं चलूँगी।
नदी तेरी मैं हूँ तू मेरा है सागर, मैं ब्रजनागरी हूँ तू मेरा है नागर।
चरण में ही रहकर मैं सब कुछ सहूँगी, जहाँ ले चलोगे वहीं मैं चलूँगी।
तुहीं मेरी गति है तुम्हीं प्यार नटवर, तुम्हीं एक राधा के प्राणेश "गिरिधर"।
जहाँ चाहो ले जाओ कुछ न कहूँगी, जहाँ ले चलोगे वही मैं चलूगी।

(६७)

कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे।
जगत की व्यथाको बिसारा करेंगे।
सदा कृष्ण लीला में रसमग्न होके।
लली लालजू के चरण चारु छू के।
दिवाने बने नित्य गद्‌गद् स्वरों में।
सरस भागवत को उच्चारा करेंगे॥
भुला के पिपासा क्षुधा एक क्षण में।
बिठा राधिका वर को इस दिव्य मन में।
सदा रह के सूखपूर्ण वृन्दा विपिन में।
मुदित आरती हम उतारा करेंगे॥
ओ संसारवालों हमें अब न छेड़ो।
सभी दास "गिरिधर" से नातों को तोड़ो।
बने हम हैं पागल सभी हमको छोड़ो।
सदा कान्ह को हम निहारा करेंगे॥

(६८)

प्यारो म्हाने लागे यदुबीर मोरी सजनी
वृन्दावन की कुञ्ज गलिनमें।
संग लिये बलवीर, मोरी सजनी॥
अरुण अधर मुसुकान मनोहर।
कुण्डल झलके हीर, मोरी सजनी॥

जनम जनम की प्रीति पुरानी ।
लखि मन होय अधीर, मोरी सजनी ॥
बंसीबट गोवर्धन गिरिवर ।
निर्मल जमुना नीर, मोरी सजनी ॥
मोर मुकुट सिर बंसी मुख पर ।
सुन्दर श्याम शरीर, मोरी सजनी ॥
"गिरिधर" प्रभु राधावर सुन्दर ।
बेगि हरो भवभीर, मोरी सजनी ॥

(६९)

तेरो मोहन पद सुकुमार, दूर मत जइयो जू ।
तेरे चरन कमल अरुणार, दूर मत जइयो जू ॥
छोटे छबिले बछुरुअन अबहि चरइयो जू ।
कीजो बाल सखन्ह मनुहार, दूर मत जइयो जू ॥
जो कछु जुरे सो भोजन मिलजुल खइयो जू ।
जनि दाउ सो करियो रार, दूर मत जइयोजू ॥
वृन्दावन मग गहवर कंटक कानन जू ।
पग रखियो तनिक सम्भार, दूर मत जइयोज् ॥
कहति जसोमति साँझ परे घर अइयोजू ।
सुनो "गिरिधर" प्राण अधार, दूर मत जइयोज् ॥

(७०)

चलो चलो री सखी वृन्दावनमें ।
ललित लवंग लता परिशीलन आनन्द उमड़त कण कण में ॥
नवल तमाल बिहंग कल कूजन मंजुल अलिगन गुंजन में ॥
कालिन्दी कल-कल धारन बिच गोवर्धन रस नव तृण में ॥
"गिरिधर" परिहरि मोक्ष सकल सुख, रमो सन्तन एहि कानन में ॥

(७१)

सांझ सकारे यमुना किनारे खेलन को जनि जाव
कन्हैया मेरे खेलन को जनि जाव
हे मेरे बारे ब्रज के दुलारे कोमल हैं तेरे पाँव
आ जा निकट मेरे कुँअर कन्हैया, लेती बलईया तेरी यशुमति मईया
हे ब्रज वारे महर दुलारे कान्ह मेरे घर आ ॥ कन्हैया ...॥
श्रमित भये तव पद अरुनारे, भूषण शिथिल भये हैं सारे
"गिरिधर" मीत मेरे दृग तारे, आओ चंचल चाव ॥ कन्हैया ...॥

(७२)

आजु घर आये विदुर घर पहुना ।
सुन्दरश्याम सनेह के आरत,
सुषमा को पटु त्रिभुवन बिच कहुँ ना
कदलि के छिलका देती कँवर करी,
भोग के हित घर सागहुँ बहुँना ॥
लखि प्रभु बदन मुदित विदुरानी,
पूछे यदुनाथ सन लेहु लाल कहुँ ना ।
"गिरिधर" देखि कृपानिधि करुना
हरि के सुजस गाय जन्म फलु लहुँना ।
आजु घर आये विदुर घर पहुना ॥

(७३)

★ **सुदामा की विकलता** ★

हमारे पाँउ कन्हैया भईया आ जा रे
बूढ़ भयऊ तनु कछु बल नाहीं
तव दरसन लालच मन माहीं
पूरन करियो उराउ कन्हैया भईया आ जा रे ॥
बडी दूर द्वारका नगरिया
कठिन भयंकर अगम डगरिया
सुमिरि-सुमिरि भय खाऊँ कन्हैया भईया आ जा रे ॥

ब्राह्मण दीन गरीब दुखारी
मीत सुदामा तुम वनवारी
"गिरिधर" दर्शन चाउ कन्हैया भईया आ जा रे ॥

(७४)

सजल नीरद सरिस जिसके अनुपम देह की शोभा
जो हरता पीर निजजन को उसे श्रीकृष्ण कहते हैं।
मधुर मुरली निनादों से विमोहित जग किया जिसने
जो करता सृष्टि करुणा की उसे श्रीकृष्ण कहते हैं।
तनिक अवलोक छबि जिसकी मदन का चूर होता मद
जो करता वृष्टि समता की उसे श्रीकृष्ण कहते हैं।
उठाया नख पे गोवर्धन हुआ "गिरिधर" पृथक जग में
जो करता रास निस्पृह हो उसे श्री कृष्ण कहते हैं।

★ ★ ★

झूला और होली माधुरी

झूला

(१)

झूलाओ सखियाँ आज राघव को झूला ।
झूलाओ सखियाँ सिया साजन को झूला ।।
रिमझिम-रिमझिम बरसत सावन,
नाचत मोर मुदित मंन भावन,
छिन-छिन प्रभुहिं निरखि सुख पाओ ।।
सरजू किनारे अशोक की डोरी
झूला पर लसे अवध बिहारी
चंचल पेग सकेलि चलाओ ।।
जनक सुता की भींजत सारी,
पोछे अगोछन प्रभु सुखकारी,
निरखि निरखि लोचन फल पाओ ।।
लखन भरत मिलि डोर सँवारत
रिपुहन प्रभु मुख कमल निहारत
"रामभद्र" चरणन चित लाओ ।।

(२)

नील पयोधर छाई रहे नभ शीतल मन्द समीर सुहावन ।
बीच लसे मघवा धन सुन्दर प्यारे पिया को विशेष लुभावन ।।
सो चित्रकूट विशेष लसे जहँ ग्जत राम मनोभव भावन ।
तापे करे पहुँनाइ चहुँ दिसि लै हरियाली सुहावने सावन ।।

× × ×

झूलत झूला विपिन बिहारी संग में जनक कुमारी जू ।
हरित लतन के रचे वितानन,
सहज सुहावन कानन रामा
बिच बिच लसे कुसुम रंग सारी ।। संग में जनक कुमारी जू ।।
रिम झिम परत फुहार सुहावन

सावन अति मन भावन रामा,
रति सतकोटि लजावन हारी !! संग में जनक कुमारी जू ।।
रसिक हृदय रघुपति को न्यारो
गीत मनोहर प्यारो, रामा
सुनि-सुनि प्रियतम होत सुखारी ।। संग में जनक कुमारी जू ।।
बन देवी सब आई झुलावत
निरखि नयन फल पावत, रामा
गावत जुगल सुजस सुखकारी ।। संग में जनक कुमारी जू ।
मचत पैग अति कछु अकुलाने,
सिय पकरयो प्रभु पानी-रामा
"गिरिधर" निरखि हरषि हिय ह्वारी ।। संग में जनक कुमारी जू ।

(३)

श्रावणी गीत

हरि हरि बरसे मधुर बदरबा अमिय फुहारी रे हरि ।
सावन अति मन भावन राजे ।
रसिक हृदय अति भ्राजे, रामा ।
हरि-हरि, अवनि सुमंगल साजे अति सुखकारी रे, हरि ।।
रिमझिम-रिमझिम बादल बरसे ।
राम सीय अति हरषे, रामा ।
हरि-हरि, निरखि भगत मन तरसे उर सुख भारी रे, हरि ।।
वन प्रमोद सुन्दर शुभ सोहे ।
प्रकृति छटा चित मोहे, रामा ।
हरि-हरि, चित्रकूट जिय जोहे होत सुखारी रे, हरि ।।
मधुकर मुखर सुछवि सरसावे ।
कोकिल रस बरसावे, रामा ।
हरि हरि, "गिरिधर" लखि जयति खरारी रे, हरि ।।

(४)

जय जय जय श्री रघुवर किशोर ।
सीता मुखेन्दु लोचन चकोर ।।
नव नीरद निन्दक दिव्य देह ।
पूरति जनेह कल्याण गेह ।।
बर शिरसि लसित कंजन किरीट ।
संग्राम दलित दशबदन कीट ।।
स्रित भाल तिलक कुण्डल विलोल ।
नव नलिन नयन मंजुल कपोल ।।
नासा सुचारु भ्रू मधुर वक्र ।
स्मित मोहित कोटि रति कलत्र ।।
आनन शशाँक सित सुधित हास ।
बिम्बाधर मुनि मानस निवास ।।
जित दशन विभा दाड़िमी कुन्द ।
आनन्द कन्द बदनारविन्द ।।
कण्ठीरव कंधर हृदय माल ।
भुज कलित विभूषण रत्नजाल ।।
शुचि नाभि महित यमुना तरंग ।
श्रीवत्स वशीकृत बुध बिहंग ।।
कर कमल कलित शर चंड चाप ।
हत चरण कमल रत त्रिविध ताप ।।
कटि पीत बसन शर निधि निषंग ।
कृत बाम भाग मैथिली रंग ।।
निज किंकर पातक विपिन पुञ्ज ।
पावक सम समरुण चरण कज्ज ।।
सीतानुज सेवित नृप ललाम ।
मारुति मानस गत गुण ग्राम ।।
जय रामचन्द्र जय पूर्णकाम ।
जय "रामभद्रदासा" भिराम ।।

(५)

चलो री सखी श्री राघव को झुलावै ।
अवध महल में कनक हिंड़ोला, निरख निरख सुख पावै ।।
झालर लसित ललित बहु चहुँदिशि, मनि भूषण छवि छावै ।
मनहुँ विमल बिधु कहँ मिलिवे को, उडुगन नभ ते धावै ।।
भाइन्ह सहित राम शिशु झूलत, जननि गीत कल गावै ।
बाजत ढ़ोल मंजीर पखाउज, विविध कला दरसावै ।।
लटकत निरखि बिलोल खिलौननि, ललकि ललकि मुसुकावै ।
हरष हुलास राउ रानी अति, मोद प्रमोद बढ़ावै ।।
अवध नरेश बालकहि लखि लखि, अपनो नयन जुड़ावै ।
मुदित झूलाइ रामलालन को, गाई बजाइ रिझावै ।।
करि करि मोद विनोद कौशिलहिं, मनवांछित फल पावै ।
कल पद्द गाइ दास "गिरिधर" हूँ, जीवन सफल बनावै ।।

(६)

झूलो झूलो अब झूलो राघव प्यारे ललना ।
छाई सावन की बहार बरसे बदरा फुहार ।
सरसे सुषमा अपार लालन छोड़ो पलना ।।
बोले पपिहा औ मोर उमगे आनन्द हिलोर ।
जैसे चन्द्रमा चकोर ललके चारु नयना ।।
बहे शीतल बयार फूले कुमुद अपार ।
मधुकर मधुर गुंजार सरयु पुलिन बना ।।
विनति सुनो सुकुमार मेरे मुन्ना सरकार ।
"गिरिधर" प्रानके अधार लाल झूलो झूलना ।।

(७)

सिया रघुवर झूले रे ।।
रिमझिम-रिमझिम पड़ति फुहारे, रघुवर बोले रे ।
सरजू तीर छाइ हरियाली, विलसित मधुर कदम्बकी डाली ।
झूलत जोड़ी जुगल निराली, मधुरस घोले रे........।।
झुक-झुक राम सिया मुख निरखत, शोभा देख मदन मन करषत ।

नभ से बिबुध सुमन बहु बरसत, आनन्द घोले रे......॥
बरसत मेघ सुखद बर बारी, जनक लली की भीगे सारी।
"गिरिधर" प्रमुदित अवध बिहारी, मंगल फूले रे........॥

(८)

हिंड़ोले झूलत दोउ सरकार।
श्रीवृषभानु लली संग राजत, श्रीवृजराज कुमार॥
पीत बसन अरुणाम्बर विलसत, सुषमा अंग अपार।
इन्द्र धनुष बिच मनहु महा छवि, बिलसत रति संग मार॥
चन्द्रावली झूलावत प्रमुदित, सुमन करत बौछार।
ललिता नटत विशाखा गाबत, सावन गीत बहार॥
उमड़ि घुमाड़े नभ नीरद बरसत, रिमझिम अमिय फुहार।
झाँकी झाँकि प्रिया प्रियतम की, "गिरिधर" तन मन वार।

(९)

हरि हरि झूलै कीर्ति कुमारी, झूलावै बनवारी रे हरि॥
वृन्दावन छाई हरियाली।
लसित कदम्ब कीं डाली, श्यामा
हरि हरि, गावत सब ब्रजनारी दै दै तारी रे हरि॥
रिमझिम-रिमझिम बदरा बरसै।
मनमोहन अति हरषै, श्यामा
हरि-हरि, भीजै पीत पीताम्बर राधा जू की सारी रे हरि॥
शीतल मन्द समीर सुहावन।
सावन अति मन भावन, श्यामा
हरि-हरि, प्रमुदित रसिक बिहारी श्यामा प्यारी रे हरिं॥
माधव सहित हुलास झूलावै।
सुर किन्नर जस गावै श्यामा
हरि-हरि, "गिरिधर" लखि सुख पावै जयति मुरारी रे हरि॥

(१०)

मैं कैसे झूला झूलूँ कन्हैया तेरे संग में।
कन्हैया तेरे संगमें साँवरियाँ तेरे संग में ॥
बंसीवट पर परौ है हिंडोलो।
सब सखियाँ मोद मनावे, दीवानी तेरे रंग में ॥
गयल- गयल बिच रोकत टोकत ।
तुम फोरो मोरि गगरिया, गुजरिया छेड़ो मग में ॥
सुबल सखा चित चाव झूलावें।
बलि जाऊँ कान्हा तेरी, मोहि डरिया लागे अंग में ॥
"गिरिधर" प्रभु करि विनय निहोरत ।
हठ छोड़ो राधा प्यारी, अब झूलो मेरे संग में ॥

(११)

झूला झूलत कृष्ण मुरारी, संग बृषभानु दुलारीजू ।
रिमझिम रिमझिम सावन बरसे।
शीतल मंद पवन मन करसे।
वृन्दा विपिन मध्य अति हरषे ।
सखिगन रसिक बिहारीजू ॥ संग बृषभानु........॥
मधुकर वृन्द मधुर जस गावै।
कोकिल कूजत मोद बढ़ावै।
राधा संग अधिक छवि पावै।
मोहन गिरिवर धारीजू ॥ संग बृषभानु........॥
कोऊ मोद विनोद मनावै।
चंचल चितइ कोऊ मलकावै ।
कोऊ प्रभुहि सहास झूलावै।
हरषित जुवती प्यारीजू ।. संग बृषभानु.......॥
उमगि चल्यो आनन्द सुहावन।
पीत बसन भींजत मन भावन।
राधा संग रसिक प्रिय झूलत ।
"गिरिधर" मन बनचारीजू ॥ संग बृषभानु........॥

(१२)

कन्हैयाजू तुम कारे मैं गोरी ॥
काहे अरत अरु रारि करत हौ, नाहिं तजत बरजोरी ।
कैसेक तुम संग झूला झूलूँ, हँसे सखी सब मोरी ॥
हौं बृषभानु लली अति नागर, तुम तो करत दधि चोरी ।
मग छेड़त सखियन नन्दनन्दन, देत गगरियन फोरी ॥
ताते हौं तव संग न झूलिहौं, छोड़ो हिड़ोलाकी डोरी ।
"गिरिधर" मुदित विनोद सुमिरि यह, जुग जुग जिये वर जोरी ॥

(१३)

झूला परो कदम की डरिया झूले, राधा संग नन्दलाल ॥
वृन्दावन बँसीबट सुन्दर ।
जमुना तीर सुतीर मनोहर ।
झूला लसत कदम के ऊपर ।
ताके नध्य बिराजत लाजत, चपला चारु तमाल ॥
सावन मनभावन छबि पावत ।
चहुँ दिशि हरियाली सरसाबत ।
बादर बारि सुधा बरसाबत ।
ललिता सखी रिझायत गावत, मंगल गीत रसाल ॥
सुबल सखा करि बेगि झूलावे ।
श्रीदामा मन मोद मनावे ।
कौतुक लखि हरि हिय मुसुकावे ।
राधा कछु सभीत गहि ललकति, मोहनकी बनमाल ॥
देखि हँसति सिगरी ब्रजनारी ।
कृष्ण सखा नाचत दै तारी ।
रिमझिम रिमझिम परत फुहारी ।
भींजत बसन राधिका हरिको, जय "गिरिधर" गोपाल ॥

(१४)

आज झूले जुगल सरकार, देखो बाँकी झाँकी बनी।
श्यामल गौर किशोर मनोहर।
मोहे करोडों रतिमार........देखो बाँकी झाँकी बनी ॥
मोर मुकुट इत उत चूड़ामणि।
इत माला उत हार...........देखो बाँकी झाँकी बनी ॥
तरणि तनुजा तट तमाल तरु।
तड़ित तरुण कल्हार.......देखो बाँकी झाँकी बनी ॥
इत गुञ्जा उत करन विभूषन।
खञ्जन दृग अरुणार.........देखो बाँकी झाँकी बनी ॥
झूलत जग पावन मनभावन।
सावन मधुर बहार......देखो बाँकी झाँकी बनी ॥
बरसत बारि बलाहक वरहिन।
बरनत बिरद अपार............देखो बाँकी झाँकी बनी ॥
"गिरिधर" लखि गिरिधर की शोभा।
विसर गयो संसार.........देखा बाँकी झाँकी बनी ॥

(१५)

(होरी गीत)

अँखिया में जनि रंग डारो रे रसिया ॥
भरि भरि रंग कनक पिचकारिन।
आननपे न पँवारों रे रसिया ॥
अँजन मिटे अरुण भये लोचन।
तन अति शिथिल निहारो रे रासेया ॥
कुसुम सिंगार हार मोतियनके।
तनिक न नेकु बिगारो रे रसिया ॥
है तू नन्द महरको ढोटो।
नागर बिरद संभारो रे रसिया ॥
अम्बर जनि रंग नन्दनन्दन।
मन निज रंग रंगि डारो रे रसिया ॥

नेकु ठहर बतिया सुन मेरी ।
जसोमति नन्द दुलारो रे रसिया ।।
होरी खेलि मुदित "गिरिधर" कहँ ।
भवनिधि पार उतारो रे रसिया ।।

(१६)

राघवपे जनि रगं डारो री । राघवपे ।।
कोमलगात बयस अति थोरी ।
मूरति मधुर निहारो री ।। राघवपे ।।
सकुचि सभीत छिपे आँचर महँ ।
कुछ तो दया विचारो री ।। राघवपे ।।
विविध श्रृंगार बिरचि साजो हौं ।
दृग अंजन न बिगारो री ।। राघवपे ।।
बरजोरी भावज रघुवर की ।
जनि मारो पिचकारो री ।। राघवपे ।।
"गिरिधर" प्रभुकी ओरी हेरी ।
होरी खेल सुधारो री ।। राघवपे ।।

(१७)

(होरी गीत)

मिथिला में आज मची होरी मिथिला में ।।
इत अवधेश कुमार मुदित मन ।
उत मिथिलेश लली गोरी ।। मिथिला में ।।
भरि भरि रंग कनक पिचकारिन ।
उड़त अबीर गुलाल झोरी ।। मिथिला में ।।
हँसि हँसि भेंवत बसन बिभूषन ।
डारत रंग विविध घोरी ।। मिथिला में ।।
खेलत राम सखा सखियन संग ।
कर ते पिचकारी छोरी ।। मिथिला में ।।
जय जय कहत सीय राघवकी ।
अलिगन आनन्द रसभोरी ।। मिथिलामें ।।

"गिरिधर" मुदित निरखि यह कौतुक ।
नितहि रहे ऐसी होरी ॥ मिथिलामें ॥

(१८)

(होरी गीत)

खेलत राघव आज अवध महँ सिय संग होरी ।
इत अवधेश हुलास सहित लिये, सानुज सखन्ह बटोरी ।
सोहत सखिन्ह संग पुलकित अंग, उत मिथिलेश किशोरी ॥
भरि भरि रंग कनक पिचकारिन, तकि तकि रंगति पिछौरी ।
उत सखि वृन्द अनन्दित भेंवत, पीत दुकूल निहोरी ॥
उड़त गुलाल अबीर दुहुँ दिशि, लेत आनन्द हिलोरी ।
वारत सखिन्ह सखा नहीं मानत, अंगनि रंगनि बोरी ॥
इ्रति मुखनि रंग पिचकारिन, हँसत करत बरजोरी ।
"गिरिधर" हृदय लसहु चिरजीवहु, सिय रघुवर जुगजोरी ॥

(१९)

(होरी गीत)

मेरो टूट गयो मोतियन को हार रे, तेने ऐसो उझक रंग डारे ।
गयल गयल बिच रोकत टोकत कान्हा माने ना करे अति रार रे ।
अखियन्ह बिच डारत पिचकारी, भयो लोचन मेरो रतनार रे ॥
नरम कलइया पकरि झक झोरत, कान्हा करत विनोद अपार रे ॥
आग लगे ऐसो ब्रज बसिबो को जहाँ उपज्यो है ग्वार गवाँर रे ।
मलत गुलाल अबीर कपोलन, कान्हा करत बसन अरुणार रे ॥
"गिरिधर" प्रभु की होरी होरी, लखि चरण कमल बलिहार रे ॥

(२०)

नैनन में पिचकारी दई, मोहि गारी दई ।
होरी खेलो न जाय, होरी खेलो न जाय ।
सैंनन में किलकारी दई, मोहि गारी दई ।
होरी खेलो न जाय, होरी खेलो न जाय ॥
संकरी गलीन्ह में छैल छबीलो,
रोकत टोकत रसिक रसिलो ,

नेकु न मानत निपट हठिलो,
औचक में दइ पिचकन चलाय, सब अंग अन्हवाय
होरी खेलो न जाय, होरी खेलो न जाय ।।
या ब्रजबास बड़ो दुःखदाई,
नटखट नन्द को लला कन्हाई,
डगर डगर रोकत बरियाई,
कुल की कान दइ छन में मिटाय, कछु भौंह मटकाय ।
होरी खेलो न जाय, होरी खेलो न जाय ।।
नरमी कलइया मोरी मरोरी,
नटखट कान्हा गगरिया फोरी,
विनय न माने करत बरजोरी,
याको निरख मेरो जिया घबराय, गइ बुद्धि सिराय ।
होरी खेलो न जाय, होरी खेलो न जाय ।।
मलत गुलाल भिगोवत चोली,
ग्वाल सखा मिलि करत ठिठोरी,
"गिरिधर" प्रभु कही होली होली,
ऊधम लखि मोपे ननद रिसाय, लिन्हों चित को चुराय ।
होरी खेलो न जाय होरी खेलो न जाय ।।

(२१)

खेलत प्रमुदित फाग सियावर ।
कनक जटित सोहति पिचकारी,
संग अनुज शोभा अति न्यारी
उमगत अति अनुराग सियावर ।।
उत मिथिलेश लली सखियन संग
सोहत विविध विभूषण अंग अंग
पहिरे बसन विभाग सियावर ।।
उड़त अबीर अरुन भयो बादर
उमग्यो मनहुँ बसन्त को सागर,
लखि मुनि तजत विराग सियावर ।।

भेंवत सिय पिचकारिन लालन
मलत गुलाल अबीरन गालन
बिलसत प्रेम तडाग सियावर ।।
जनकसुता की भीजी पिछोरी
लालन लखन करत बरजोरी
भये भरि भाव पराग सियावर ।।
हा हा करत अलिंगन मिलि घेरत
"रामभद्र" भामिनी मुख हेरत
बिबुध सराहत भाग सियावर ।।

(२२)

होरी—गीत

मोसे करो जनि रार कन्हैया दे दो मोरी पिचकारी ।
फागुन को यह मास सुहावनो शीतल बहत बहारी ।।
कुञ्जन बीच मधुर पिक कूञ्जत
कुसुमित कानन डारी, बसन्त की सुखद बहारी ।।१।।
पहिलेहि मल्यो अबीर कपोलनि—
भेऊ कुसुमित सारी, जब बारी आई हमारी
तब कान्ह करी ठगहारी, उछरि चढ्यो कदम की डारी ।।
हौ बलवीर नन्द के नागर, विदित भुवन दस चारी
नारिन्ह के आगे ले भाग्यो, देखि कीरति तुम्हारी
गजब तुम व्रज के विहारी—
गजब बने बाँके बिहारी, ।। मोसे करो ।।
होरी को यह रंग मनोहर पुरवहु आस हमारी
"गिरिधर" गाल गलूचा दइहौं
दइहौं तोहि लाखन्ह गारी, हँसे तब कृष्ण मुरारी ।।

(२३)

(होरी-गीत)

वृन्दावन आज मची होरी वृन्दावन ।
इत बलवीर सखा संग राजत, उत आवत राधा गोरी ।।
कान्हा के हाथ कनक पिचकारी, राधा लिये अबीर झोरी ।।
गयल गयल में होरी ठनी है खेलत रंगन झकझोरी ।।
वरसत रंग उमंग भरे सब मलत गाल पर मुख मोरी ।।
बाँह मरोरि छीन पिचकारिन, मलत अबीरन बरजोरी ।।
हरि भेवत राधा को सारी, प्रेम प्रमोदन्ह रस घोरी ।।
"गिरिधर" निरख निरख यह झाँकी चिर जीवहु जुग जुग जोरी ।।

(२४)

(सुमन्त्र के पुत्रवधूकी होली)

होली गीत

होली की बहार अजब होती, उसमें लज्जा का क्या रहना ।
यदि सीतावर ही देवर हों तो, उसके आनन्द का क्या कहना ।।
कुछ ध्यान न दो मर्यादा का, भाभी की मधुर ठिठोली है ।
हे शान्ता के प्यारे भइया, कुछ बुरा न मानो होली है ।।

होली में कानि ना मानो होली में
बरजोरी भावत राघव की, मन मे ऐसी ठानो जी ।
काह करे आजु सासु कौसल्या, मंगल कौतुक जानो जी ।।
मलो अबीर गुलाल कपोलनि, पीताम्वर रंग सानो जी ।।
ये हैं अवध छबीले छयला, रार इन्हीं से ठानो जी ।।
सीतावर देवर हैं रसिया मेरे सम्मुख धरि आनो जी ।।
"गिरिधर" प्रभु कर गहियो प्रभु प्रीति-रीति पहिचानो जी ।।
दो० यों कहि मन्त्रि सुतवधु, मली कपोल गुलाल ।
लाल दशा अवलोकि के, "गिरिधर" होत निहाल ।।

(२५)

६०६ करत मोते रार कन्हैया देदो पिचकन मोरी।
गयल गयल बिच रोकत टोकत, करत फिरत बरजोरी,
मलत अबीर गुलाल कपोलन्हि, करत बहुत ठकठोरी,
कन्हैया तोको लाज न थोरी ॥
फागुन को रसरंग सुहावन सखन्ह सहित खेलो होरी,
पकरी भिंगोवत रंगीन्ह अंगन्हि भीगी पिछौरी है मोरी,
शिथिल मति गति भै भोरी ॥
तकि तकि गाल बरसी पिचकारिन्ह, हरि लै सुवि बुधि मोरी,
करत निहोरो नेकु नमानत डारत रंग झक झोरी,
पकरि मोहि बइयाँ मरोरी, ॥
तोरत हार हजारन्ह को मेरो, नरम कलैया मोरी,
"गिरिधर" प्रभु यों रचे ब्रज होरी लखे वृषभानु किशोरी
लसति उर जुग जुग जोरी ॥..........

(२६)

होरी खेलत मुदित मन बरसाने की खोरि ।
"गिरिधर" प्रभु अवलोकि के भइ शारद मति भोरि ॥

× × ×

बरसाने साँकरि खोरि, मचहि कान्हा अनुपम होरी,
इत नन्द नन्दन संग सखा लिये करत अबीर की झोरी,
उत वृषभानु लली संग रोंजत नवल बयस अति थोरी,
सकल सखि सुमुख किशोरी ॥
भरि-भरि रंग कनक पिचकारिन, डारत रंग झकझोरी,
बरजत सखिन्ह तऊ नहिं मानत मलत गुलाल बहोरी,
करत बहु विधि ठगठौरी ॥
उड़त अबीर गुलाल चहुँ दिसि छिप गइ भानु अँजोरी,
लाल रँग्यो चँहु कोर नग[illegible] को कीच मची ब्रज खोरी,
हँसति वृषभानु किशोरी ॥
अवचक चितइ चपल चित [illegible]रत, अँगनि रँगनि बोरी,

हँसत सखन्ह सब लखि-लखि कौतुक कहि-कहि होरी होरी,
जयति जय पावन जोरी ।।
भेंवत पुनि पुनि राधा की चुनरि हँसति निहोरि निहोरि,
"गिरिधर" प्रभु मुख निरखि मगन भये, तन मन सब करबोरी
बदन बिधु चन्द्र चकोरी ।।

(२७)

झूला झूले जुगल सरकार, आज बाँकी झाँकी बनी
रिमझिम रिमझिम बरसत सावन, त्रिविध समीर बहुत मन भावन,
मेघ झरि लाए मधुर फुहार ।। आज बाँकी ।।
लसति वाम दिसि जनक कुमारी, झूलत प्रमुदित बिपिन विहारी,
गावें सुरगन राग मल्हार ।। आज बाँकी ।।
हँसि-हँसि राम प्रिया मुख चितवत, रसिक निहारत पलकन बितवत,
लाजे लखि कोटि-कोटि रतिमार, आज बाँकी ।।
झूलत मुदित झुलाइ परस्पर, निरखि-निरखि हरषत हिय "गिरिधर"
सोहे सावन मीठी बहार, ।। आज बाँकी ।।

(२८)

मेरी अँखियाँ में डारो गुलाल रे, मोहि होरी खेलत डर लागे ।
आज अरयो मग नन्द को नन्दन,
चोरी करत हरत जन को मन
लिये संग सबल गोपाल रे ।। मोहि होरी ..... ।।
मैं बरजों सखि मान कछू नहिं,
जाऊँ पराइ हँसत आवे तहिं,
करे रंग ते तनु को बिहाल रे ।। .... ।।
सोहत कमल करनि पिचकारी
डारति तकि तकि कुंज बिहारी
अति आर करत नन्दलाल रे ।। .... ।।
"गिरिधर" प्रभुहिं सुमिर ब्रज गोरी,
नेकु मनावन आवत होरी
कहे व्यंग के बचन निहाल रे ।। .... ।।

●

भक्तिगीत सुधा (आरती)

(१)

मंगला आरती

विधु मुख मधुर निहार के लोचन फल लीजै ।
कोशल सुता कुमार की शुभ आरति कीजै ।
श्याम शरीर सुहावना नव घन मन मोहे ।
ललित तिलक मन भावना श्रुति कुण्डल सोहे ।
तन मन धन सब वारि कै अकलंक चित दीजै ।
दशरथ सुत सुकुमार की शुभ आरती कीजै ॥
नासा चिबुक कपोल की अनुपम छबि न्यारी ।
तोतरी मधुर सुबोल पर मैं बलि बलिहारी ।
विकट भृकुटि उर धारि कै सब भव भय छीजै ।
बालक रूप उदार की शुभ आरती कीजै ॥
नयन नवल राजीव से मुनि जन मन रंजन ।
अँजन मञ्जु ह्गन लसे लाजत लखि खंजन ।
लोचन निमिष निवारि के छबि अमृत पीजै ॥
सुषमा सरस श्रृंगार की शुभ आरति कीजै ॥
अरुन अधर दतियाँ लसी जिमि दाडिम राजी ।
भामा सहित जिमि दामिनी विधु बीच बिराजी ।
कठुला कंठ सँवारि के अनुपम सुख लीजै ।
गुण-गण उदधि अपार के शुभ आरति कीजै ॥
कर कंकन पग पैजनी पीत झिगुली झीनी ।

धूरि भरे घुटुरुन चले चितवन रसभीनी।
मृदु मुसुकान निहारि के भव लाभ लुटीजै।
श्री राघव सरकार की शुभ आरति कीजै॥
गुरु-गुरुतिय जननी सबै शिशु छबिहिं निहारैं।
कंचन थारिन्ह मंगला आरती उतारै।
अवध सरिस मनहारि कै राम प्रेम पगीजै।
"गिरिधर" प्राण अधार की शुभ आरति कीजै॥
अवध उमंग घर घर रहैं आनंद बधाई।
दशरथ कुवँर बिलोकि के सुख लोग लुगाई।
गगन सुमन सुर ढारिके मन मोद लहीजै।
गुरुवर हृदय अगार की शुभ आरति कीजै॥
कोशलसुता कुमार की शुभ आरती कीजै॥

(२)

आरती

आरती शिशु राघव की कीजै।
हरि चरणन सादर चित दीजै॥ आरती॥
तरुण तमाल बरन तन सोहे।
बदन देखि शत मनसिज मोहे।
जननी जन सादर छबि जोहे।
निरखि निरखि सब भव भय छीजै॥ आरती॥
खेलत अनुज सहित अँगनैया।
किलकत बिहँसत चारों भैया।
लखत मुदित मन तीनों मैया।
पुलकित तन दृग वारि पसी जै॥ आरती॥
पीत झिगुलिया बाल विभूषन।
बसन विविध रवि वंश विभूषन।
रज रूपित पूषन कुल पूषन।
तन मन निरखि निछावर कीजै॥ आरती॥
कौशल्या को प्राण पियारो।

नृप दशरथ को राज दुलारो ।
"गिरिधर" के नैनन को तारो ।
अब इनको मन में धर लीजै ॥ आरती ॥

(३)

आरति शिशु राघव की कीजै ।
लोचन लाभ ललकि सब लीजै ॥ आरती ॥
व्यापक ब्रह्म निरीह निरंजन ।
खञ्जन दृग सोहत अति अञ्जन ।
जननी जनक गुरुजन मन रंजन ।
निरखि निरखि सब भव भय छीजै ॥ आरती ॥
कनक मुकुट सिर कुण्डल कानन ।
कुटिल अलक मण्डित विधु आनन ।
किलकत खेलत दशरथ आँगन ।
शोभा चितइ सप्रेम पतीजै ॥ आरती ॥
अरुन अधर मुसुकान मनोहर ।
तोतर बचन दशन दाड़िम वर ।
रुनझुन करत चरन कल नूपुर ।
तन मन सकल निछावर कीजै ॥ आरती ॥
दशरथ कौशल्या को बारो ।
गुरुजन को लाड़लो दुलारो ।
"गिरिधर" के नयनन्ह को तारो ।
सुमिरि सुमिरि मन में धरि लीजै ॥ आरती ॥
आरती शिशु राघव की कीजै ।
राम चरन सरसिज चित दीजै ॥

(४)

आरती

आज राघवजू की आरती उतारो हे सखि
उतारो हे सखि हे उतारो हे सखि ॥

आहे, कंचन किरीट सोहे कमल बदनवा
मन्द मुसुकानि लखि लाजत मदनवा
झाँकि जेहि तन मन वारो हे सखि ॥
आहे, लाल लाल पाटल से कनक पलंगवा
तापे झूले झूमि झूमि कौशिला ललनवा
सोहे खञ्जन नयन कजरारो हे सखि ॥
आहे, काम की कमान लाजे लखि के तिलकिया
भवराँ की पाति जैसे लटके अलकिया
दमके दशन अधर अरुणारो हे सखि ॥
आहे, लपके किलकि लाला गहन खिलौनवाँ
गोल गोल गाल लसै दुइ- दुइठी डिठौनवाँ
राजै कोशिला आँचर उजियारो हे सखि ॥
आहे, भूलि जात अग जग सुमिरि सुरतिया
"गिरिधर" दृग बसि मधुर मुरतिया
आनि राइ लोन इनपे उवारो हे सखि ॥

(५)

शयन आरती

आज आरती उतारो शिशु रघुवर की ।
शिशु रघुवर की मुनि मनहर की ॥ आज आरती ॥
नील तमाल रुचिर तनु साजे
कुटिल अलक अवली अलि लाजे
कुन्डल छबि शत दिनकर की ॥ आज आरती ॥
खञ्जन नयन अधर अरुनारे ।
दामिनी दशन बचन बर बारे ।
आनन पर छबि हिमकर की ॥ आज आरती ॥
चितवनि चारु भृकुटि अति सुन्दर ।
नयन उनीदे पलक मनोहर
झाँकी रुचिर मृदु तनु पर की ॥ आज आरती ॥

कनक थार आरती सवाँरे
बरषि सुमन सुर जयति उचारे
आज सुकृति अवधि सब "गिरिधर" की ।। आज आरती ।।

(६)

★ श्री मानसजी की आरती ★

आरती श्रीमन्मानस की, रामसिय कीर्ति सुधा रस की ।
जो शंकर हिय प्रगटानी ।
भुषुण्डि मन में हुलसानी ।
लसी याज्ञवल्क्य की बानी ।
श्री तुलसीदास, कहे सहुलास, सुकवित विलास ।
नदी रघुनाथ विमल जस की ।। आरती ।।
बिरति बर भक्ति ज्ञान दाता ।
सुखद पर लोक लोक दाता ।
पढ़त मन मधुकर हरषाता ।
सप्त सोपान, भक्ति पन्थान, सुवेद पुरान ।
शास्त्र इतिहास समंजसकी ।। आरती ।।
सोरठा दोहा चौपाई ।
छन्द रचना अति मन भाई ।
बिरचि बर तुलसीदास गाई ।
गाय नरनार, होत भवपार, मिटे दुःख भार ।
हरे मन कटुता कर्कषकी ।। आरती ।।
ललित यह राम कथा गंगा ।
सुनत ही भव भीति भंगा ।
बसहुँ हिय हनुमत श्रीरंगा ।
राम को रूप, ग्रन्थ को भूप, हरे तम कूप ।
जीवन धन "गिरिधर" सर्वस की ।। आरती ।।

(७)

आरती-मन्दाकिनी जी की

आरती श्री मन्दाकिनी जी की ।
सुर मुनि बन्दित बिबुध नदी की ।।
अनसूया निज तप बल आनी,
महिमा बेद पुराण बखानी,
हरनि अमंगल मंगलखानी,
शीतल शशि कर धार अमी की ।। आरती ।।
राघव चरण सरोज पुनीता,
भरत भक्तिरस भाव विनीता,
सादर निज जहँ मज्जति सीता,
पावनि भावनि लछिमन ही की ।। आरती ।।
चित्रकूट माँही लसति रसाला,
कामद मञ्जुल मंगल माला,
दासन्ह ते भञ्जनि भव ज्वाला,
सुता सुहावनि अत्रि मुनि की ।। आरती ।।
राम कथा सम कलि मल हरनी
विमल तरंगनि छालति धरनी
जग जननी ''गिरिधर'' शुभकरनी,
साधन सरवस संत यती की ।। आरती ।।